स्वर्ग एतहि अछि



रबीन्द्र नारायण मिश्र

स्वर्ग एतहि अछि

रबीन्द्र नारायण मिश्र

भोरहरबा प्रकाशन
ग्रेटर नोएडा



लेखक परिचय

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम :स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र

माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी

बएस : ६५ बर्ख

पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह

मातृक : सिन्घिआ ड्योढ़ी

वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवा निवृत्त)/
स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवा निवृत्त)

शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी .भौतिकी विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक

प्रकाशित कृति :

मैथिलीमे:-

१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा), २. 'प्रसंगवश' (निवंध), ३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग), ४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै'

(उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)

१०.समाधान(निवंध संग्रह)

In English:-

1.The Lost House (Collection of short stories)

2.Life is an art

(उपरोक्त पोथीसभ pothi.com, amazon.com आओर www.flipcart.com पर सँ कीनल जा सकैत अछि)

इमेल : mishrarn@gmail.com

ब्लोग : mishrarn.blogspot.com
Phone: 01202343563 Mobile -9968502767

एमजोनक लेखक पृष्ठ : amazon.com/author/rnmishra

स्नेहार्पण

जीवन यात्राक सहगामिनी
श्रीमती आशा मिश्रकेँ

-रबीन्द्र

स्वर्ग एतहि अछि

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5288-577-0

दाम : 200 रूपया

पहिल संस्करण : 2017

SWARGA ETAHI ACHHI
Collection of Travelogues
by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)

https://pothi.com/pothi/node/195476.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)

https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै *(मैथिली उपन्यास)*

https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.
महराज *(मैथिली उपन्यास)*
https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/196264.
सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/197004.
The Lost House (Collection of short stories)
https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)
https://pothi.com/pothi/node/196385
www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।

अनुक्रम

भूमिका

यात्रा जीवनक अंग अछि। एहिसँ बहुत किछु देखबाक, सुनबाक मौका भेटैत अछि। असलमे नित्य प्रतिक जीवन स्वयंमे एकटा यात्रा अछि। एहि यात्राक आदि-अन्तक किछु पता नहि, तथापि लोक चलिते जा रहल अछि, चलिते रहत। कारण चलिते रहब जीवन थीक। हारिकए, थाकि कए, बैसि जाएब, कथमपि स्वीकार्य नहि।

इस जीवन का लक्ष्य नहीं है,श्रान्त भवन में रुक जाना,

किन्तु हमें जाना है वहाँ तक,जिसके आगे राह नहीं है।

कखनो सरकारी काजे, कखनो व्यक्तिगत, एनाइ-गेनाइ लगले रहल। एहि क्रममे नव-नव लोक,नव-नव परिस्थितिसँ सामना होइत रहल। एहि सभसँ बहुत किछु सीखबाक अवसर भेटल।

किछु एहने प्रसंग सभक एहि पुस्तकमे बर्णन अछि।

एहि पुस्तकमे वर्णित अधिकांश यात्राक समय हमर श्रीमतीजी संगे रहथि आ जतए ओ नहिओ रहथि ताहु यात्ता सभक चर्च हुनकासँ होइते रहल अछि। तें एहि प्रसंग सभक वर्णन करबामे ओ बहुत कारगर मदति केलनि। हम आलेख लिखतहि हुनका पढ़ए हेतु दए दिअनि। सभ आलेखकेँ ओ ध्यानसँ पढ़थि एवम् अपन सुझाव देथि

जाहिसँ एहि यात्रा वर्णन सभमे गुणात्मक सुधार भेल।

यात्रा प्रसंग सभकेँ संकलित कए पोथी निकालबाक प्रेरणा हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरीजीसँ भेटल। समय-समय पर हुनक मूल्यवान सुझाव सेहो भेटैत रहल। ताहि हेतु ओ धन्यवादक पात्र छथि ।

श्री उमेश मण्डलजीक निरन्तर प्रयाससँ एहि पुस्तकक पाण्डुलिपिक स्वच्छ प्रति बहुत कम समयमे उपलब्ध भेल ताहि हेतु हुनका अशेष आशीर्वाद।

आशा अछि जे पाठक एकरा पढ़ि लाभान्वित हेताह।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

२१.११.२०१७

युरोप यात्रा

भारत सरकारक प्रशिक्षण कार्यक्रमक अनुसार ३५ गोटेकेँ एक-संग युरोपक पाँच देश घुमबाक कार्यक्रम छल। सभगोटे सरकारक प्रथम श्रेणीक अधिकारी छलाह। सभक नेतृत्व एकटा महिला अधिकारीक हाथमे छल। सभ व्यक्तिमे विदेश देखबाक-घुमबाक आ रहबाक अवसरसँ मनमे असीम प्रसन्नता छल। सभगोटे अपन-अपन कागज-पत्तर सरिआबएमे लगलहुँ। पासपोर्ट सरकारी बनल। वीजा कार्यालयक तरफसँ बनि गेल। टीकट सरकार देलक। बस कपड़ा-लत्ता सरिआउ, किछु पाइ बेसी कए रखि सकी तँ राखि लिअ आ विदा होउ। ओना, किछु यूरो सरकारक तरफसँ जेब खर्चक हेतु सेहो देल गेल।

फ्रांसक राजधानी 'पेरिस' लौटबा काल रस्तामे छल। सभकेँ इच्छा भेलैक जे ओकरो देखि सकी तँ देखि ली। से प्रयासक बाद सम्भव भेलैक। आपसी यात्राक कार्यक्रममे दिन भरि पेरिस भ्रमण सामिल कएल गेल। पैंतीस आदमीक हुजुम एक्केठामसँ विदेश विदा छल। एकर आनन्द सोचल जाए सकैत अछि।

यूरोप भ्रमणक उपरोक्त कार्यक्रम असलमे प्रशिक्षणक अंग छल। अगस्त २००९ मे दू सप्ताहक हेतु कतेको दिनसँ तैयारी चलि रहल छल। विदेश यात्राक दौरान की करबाक नहि अछि, आ की करबाक अछि तकर सविस्तार चर्चा भेल। कोनो एहन काज नहि करबाक छलैक जाहिसँ देशक गरिमापर बट्टा लागए।

साँझक आठ बजैत-बजैत सभगोटे इन्दिरा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डापर पहुँचि गेल रही। सभहक जेबीमे अपन-अपन टीकट, पासपोर्ट आदि जरूरी कागजात छल। रातिक दू बजे करीब हवाई जहाजक उड़ान छल।

किछु गोटेकेँ मुम्बइसँ आगूक जहाज लेबाक रहनि तैँ ओ सभ फराक पहिनहि मुम्बइ चलि गेल रहथि। हम दिल्लीसँ सीधा फ्रैंकफर्ट हवाई जहाजमे जाएबला समूहक संगे रही। दिल्ली हवाई अड्डापर सभ सहयात्री सभ जमा भए गेलहुँ। सुरक्षा जाँचक बाद हम सभ अन्दर आव्रजन खिड़कीपर ठप्पा लगेलहुँ। सभकेँ संगमे कोनो प्रतिबन्धित सामान नहि लए जेबाक चेतौनी पहिनहि दए देल गेल रहए। तैँ कोनो परेसानी नहि भेल। किछु कालमे बोर्डीग शुरू भए गेल आ हम सभ बेरा-बेरी सभ हवाई जहाजमे बैसि गेलहुँ।

हमरा लोकनिक प्रशिक्षण स्लोवेनियाँक लुबियाना स्थित आइ.सी.पी.ई. (Interational Centre for Public Enterprises) मे छल। एकर स्थापना २४ अप्रैल १९७४ ई.मे तत्कालीन यूगोस्लावीया सरकार द्वारा भेल। भारत, नेपाल, श्रीलंका सहित पन्द्रहटा आओर देशसभ एकर सदस्य छथि। एहि संस्थाक विकास यात्रामे भारतक बहुत योगदान अछि। वर्तमानमे आइ.सी.पी.ई. दुनिआ भरिक लोक हेतु विभिन्न प्रकारक विषय, खास कए आर्थिक विषयपर चर्चाक सघन माध्यम अछि। एहि संस्थाक स्थापनामे संयुक्त राष्ट्रसंघक संस्था नाम (Non Aligned Movement) क बहुत योगदान अछि। भारतक श्री सी सुब्रमन्यम एवम् श्री जी पार्थ सारथी बहुत दिन धरि एकर नायक, मार्ग दर्शक रहलाह। यूगोस्लावियाक विभाजनक बाद १९९२ ई.मे एहि

संस्थाक देख-रेख स्लोवेनियाँ सरकारक अधीन आबि गेल। एहि संस्थाक प्रशासकीय प्रमुख महानिदेशक होइत छथि जे संस्थाक आमसभा द्वारा चारि वर्षक हेतु चुनल जाइत छथि। संम्प्रति डॉ. आनन्द एन अस्थाना ६ अप्रैल २०१५ सँ चारि सालक हेतु एहि संस्थाक महानिदेशक पदपर छथि।

दिल्लीसँ हवाई जहाज खुजल तँ सोझे जर्मनीक फ्रैकफर्ट हवाई अड्डापर उतरल। सूर्योदय भए गेल छल। मुम्बइसँ आबएबला हमर संगी सभ सेहो ओतहि आबि कए हमरा लोकनिक प्रतीक्षा करैत छलाह। ओहिमे एक गोटेक सामानमे दारूक बोतल रहनि {जे ओ मुम्बइ हवाई अड्डापर कीनने रहथि}। फ्रैकफर्टमे ओ पकड़ल गेलाह आ हुनका बहुत परेसानी भेलनि। हुनका कहल गेल जे वा तँ पीबि लिअ, वा ककरो दए दिऔक चाहे फेक दिऔक। संगे आगू नहि लए जा सकैत छी। पता नहि, ओ तकर की समाधान केलनि।

फ्रैकफर्ट दुनिआक पहिल हवाई अड्डा थिक। जर्मनीक ई वयस्तम हवाई अड्डा अछि। फ्रैकफर्टक टर्मीनल १A पर हमरा लोकनि स्लोवेनियाँक लुवियाना (Lajubljana) हेतु छोट सन हवाई जहाज पकड़लहुँ। घन्टा भरिमे ई यात्रा सम्पन्न भेल। रस्तामे सभ तरहक जलखै सेहो देल गेल।

यात्रासँ पूर्व हमरा सभहक एकटा संगी मार्गदर्शन करैत निम्नलिखित विषयपर ध्यान रखबाक परामर्श देलनि। (ओ कतेको बेर विदेश गेल रहथि आ विदेशमे दू साल काजो केने रहथि)

१. हाथक झोङामे एक सेट कपड़ा राखी जाहिसँ जँ चेकइन सामान देरीसँ पहुँचल तँ काज आओत।

२. चेकइन वैगपर अपन नाम, गन्तव्य स्थानक पता सहित फोन

नम्बर लिखल जाए। ओहि बैगमे अपन परिचय पत्रक राखल जाए।

३. पासपोर्ट, हवाई जहाजक टिकट , विदेशी मुद्रा अपना संगे सुरक्षित स्थानपर राखल जाए।

४. उपरोक्त जरूरी कागजातक तीन प्रति वैगमे फराक-फराक स्थानपर राखल जाए।

५. नित्यप्रति प्रयोगक जरूरी दबाइ अपना संगे राखू।

६. होटल आदिमे अपन सामानपर ध्यान राखू, जाहिसँ ओ चोरि नहि भए जाए।

७. विदेशमे हमेशा दू वा अधिकक समहूमे रहू जाहिसँ जरूरी भेलापर मदति भए सकए।

८. विदेशमे कीनल गेल सामानक रसीद संगे राखू, आव्रजन खिड़कीपर तकर काज पड़ि सकैत अछि।

९. अपना संगे छाता, हल्का ऊनी स्वेटर, आ कोट राखू।

उपरोक्त प्रशिक्षण ९ अगस्तसँ २३ अगस्त २००९क दौरान सम्पन्न हेबाक रहए। कार्यक्रम प्रारम्भसँ पूर्वहि हमरा लोकनिकेँ संस्थापनक महानिदेशकक तरफसँ इमेल भेटल जाहिमे संस्थानक बारेमे प्रारम्भिक जानकारीक अलाबा प्रशिक्षणक दैनिक कार्यक्रम छल। तहिक अनुसार माने कार्यक्रमक दौरान कोनो काजक हेतु श्री अश्विन श्रेष्ठ एवम् श्री उरोज जेबरसँ सम्पर्क करबाक छल।

९ अगस्त २००९ क लुवियाना हवाई अड्डापर हमरा लोकनिक स्वागत हेतुश्री श्रेष्ठजी (जे नेपाली मूलक छलाह आ स्लोविनियाँमे बसि गेल रहथि) आएल रहथि। दूटा नमगर-नमगर बसमे चढ़ि हमरा लोकनि संस्थानक हेतु विदा भेलहुँ। आधा घन्टामे हम सभ संस्थान

पहुँचलहुँ जतए हमरा लोकनिक स्वागत डॉ. स्टेफन वोगडन सलेज, महानिदेशक केलाह। सभगोटेकेँ छात्रावासमे कोठरीक कुंजी देल गेल। प्रत्येक कोठरीमे दू गोटाक जगह छल। मात्र एक्केटा कोठरी छल जाहिमे एसगरे हमर एकटा संगी रहलाह।

कार्यक्रमक समन्वयक (महिला अधिकारी) केँ सेहो फराक कोठरी देल गेलनि। तकर पछाइत हमरा लोकनिकेँ चाइनीज भोजनालय- सांग हाइ, लुवियानामे दिनक भोजन कराओल गेल। छात्रावास साफ-सुथरा छल। कोठरी सभमे ए.सी. नहि रहए कारण ओहिठाम ओतेक गर्मी नहि पड़ैत अछि। सभ जरूरी समान ओहि कोठरीमे सुलभ छल।

संस्थानक भूतलपर रवीन्द्रनाथ टैगोर हॉलमे नित्य साढ़े सातसँ आठ बजेक बीचमे जलखै देल जाइत छल। जे ततेक जूश पीबए चाहथि से भेटनि। भारतीय शाकाहारी भोजन एकटा गुजराती ठेकेदार द्वारा देल जाइत छल। लगैत छल जेना अपने देशमे खा रहल छी। ओही हॉलमे रोजाना रात्रि भोजनक व्यबस्था सेहो रहैत छल आ दिनुका भोजना आन-आन ठाम। संस्थानक त्रुवार हॉलमे प्रशिक्षण भाषण होइत छल। समयसँ सभ प्रशिक्षणार्थी, ब्याखाता लोकनि उपस्थित भए जाइत छलाह। चाह आ कौफीक हेतु दू बेर अवकाश होइत छल। चाह/कौफीक अलावा भरि पोख किसिम-किसिम केर बिस्कुटक व्यबस्था सेहो छल।

१० अगस्त २०१६क संस्थानक महानिदेशक द्वारा स्वागत भाषणक बाद स्लोवेनियाँमे भारतीय राजदूत डॉ. भी.एस. शंषद्रि द्वारा भारत स्लोवेनियाँ सम्बन्धपर संक्षिप्त चर्चा कएल गेल। ओकर बाद स्लोवेनियाँक विदेश मंत्रालयमे महानिदेशक श्रीएन्ड्रेज वेन्डेज द्वारा

स्लोवेनियाँ एवम् अर्थ संकट विषयपर भाषण भेल। भोजनोपरान्त प्रो. जोज ग्रिकर द्वारा Innovative Cross Border e-Region Development विषयपर भाषण भेल।

रातिमे स्वागत आ रात्रि भोजनक कार्यक्रमक बाद सभगोटे विश्राम केलहुँ। भोरे उठि हम सभ लगपास टहलए निकललहुँ। आकाश स्वच्छ छल। वायुमण्डलमे कतहु प्रदूषण नहि। आकाशक तारा सभ चकमक देखल जा सकैत छल। हवामे जे निर्मलता छल ओकर अनुभव शब्दसँ नहि कएल जा सकैत अछि। मुदा ओतहु पार्कमे एक व्यक्तिकेँ पुरान-धुरान ओढ़ना ओढ़ने सुतल देखलहुँ। कहबी अछि जे गेलहुँ नेपाल, कपार गेल संगे..! स्लोवेनियाँ बहुत छोट सन देश अछि मुदा आर्थिक दृष्टिमे उन्नत देशमे अबैत अछि। ई देश यूरोपियन यूनियनक हिस्सा अछि आ ओहिठामक मुद्रा यूरो अछि। सभ किछुक अछैतो ओतहु अभागल लोक पार्कमे अनाथ जकाँ सुतल देखाएल, से देखि आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ।

११ सँ सोलह अगस्त २०१६ ई.क बीच स्लोवेनियासँ बाहर वियाना, म्युनिख, बेनिस जेबाक कार्यक्रम छल। समस्त यात्रामे श्री अश्विन श्रेष्ठजी हमरा लोकनिक संगे रहथि। हुनका संगे एकटा मार्गदर्शक छल आ गाड़ीक चालक रहए जे अपना-आपमे मनोरंजक छल एवम् बहुत रास जानकारी दैत रहैत छल।

९ अगस्तक सायंकाल हमरा लोकनि सीटी सेन्टर घुमए गेलहुँ। सड़कपर चलएमे आनन्द आबि रहल छल। सड़कक काते-काते साइकिल चलेबाक हेतु फराक पाँति छल। यातायात नियंत्रण प्रणालीमे एहन व्यबस्था छल जे पदयात्री सड़क पार करबाक सूचना स्विच दबा कए दए सकैत छल।

यातायात नियंत्रणमे सेन्सर लागल छल। जाहि कार सभमे अनुमतिक चीप छल, तेकरा चेक प्वाइन्टपर अबिते रस्ता खुजि जाइत छल। शेष लोककेँ अपन कागजात देखबए पड़ैत छल। तकर बादे गाड़ी आगू बढ़ि सकैत छल। जँ सड़कपर यातायात नियमक उल्लंघन करैत पकड़ल गेलहुँ तँ तुरन्त सायरन बजि उठैत छल आ ओहिसँ उवरक हेतु भारी जुर्माना ३० यूरो लगैत छल। सड़कक कातमे किंवा कोनो पार्कमे लघुशंका करब मना छल।

स्लोवेनियाँक सरकारमे विषय वस्तुकेँ विशेषज्ञ सभकेँ मंत्री, सचिव बनाओल जाइत छथि। सरकार बदललापर ओ सभ अपन पुरना काजपर आपस चलि जाइत छथि। यूरोपियन युनियनक सहभागी सभ राष्ट्रमे एक्के बिन्दुपर कर लेबाक परम्परा अछि। संसदक दू सदन अछि। राष्ट्रपति, मंत्रीक अलाबा नगरपालिका होइत अछि। ओहिठाम राज्य नहि अछि। शहरमे पानिक आपूर्तिक उत्तम व्यबस्था अछि। पद यात्रीक बहुत सम्मान कएल जाइत छल। यदि कारसँ चलैत व्यक्ति कोनो पद यात्रीकेँ देखथि तँ तुरन्त गाड़ी रोकि कए सड़क पार करबाक आग्रह करथि।

११ अगस्त २००९ ई.क प्रात: ६ बजे बससँ सभगोटे आस्ट्रीयाक राजधानी वियानाक हेतु प्रस्थान केलहुँ। सभगोटेक आपसी सहमतिसँ ओहि विदेश कार्यक्रमक हम मुनिटर रही। सभसँ पहिने तैयार भए आगू आबि कए आओरलोक सभकेँ शीघ्र चलबाक हेतु प्रेरित करी। समयक प्रति निष्ठा ओहिठाम बहुत आवश्यक छल, अन्यथा लोक हँसीक पात्र भए जाइत छल।

वियाना आस्ट्रीयाक राजधानी थिक। एकर अवादी १.८ करोड़ अछि। आस्ट्रीयाक पूर्वी भागमे स्थित वियाना अनेको अन्तर्राष्ट्रीय

संस्थाक मुख्यालय अछि। २००१ ई.मे युनेस्को एकटा विश्व धरोहर घोषित केलक। वियानाकेँ संगीतक नगर सेहो कहल जाइत अछि। विश्व प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक- फ्राइड ओहीठाम जन्मल छलाह। वियाना दुनिआमे उच्च जीवन स्तरक हेतु प्रसिद्ध अछि। २००५ ई.क एक अध्ययनक अनुसार दुनिआक सर्वोत्कृष्ट रहए जोगर शहरमे एकर नाम आएल छल। अमेरिकाक सैन फ्रैसिस्को एवम् कनाडाक वानकोमेर एहि टक्करक आन शहर सभमे अछि। प्रति वर्ष ३.७ करोड़ पर्यटक एहि शहरमे भ्रमण हेतु अबैत छथि।

सायंकाल ५ बजे आस्ट्रीयामे भारतीय राजदूत श्री सौरभ कुमारसँ दूतावासमे हमरा लोकनिक भेँट भेल। सभगोटेसँ परिचयक बाद जलखैक व्यबस्था रहए। वियानक बारेमे आवश्यक जानकारी सेहो हुनका माध्यमसँ भेटल। भारत एवम् आस्ट्रीयाक पारस्परिक सम्बन्धक चर्चा करैत ओ स्पष्ट केलनि जे २००० भारतीय ओहि देशमे रहि रहल छथि। भारत भ्रमण हेतु वीजा देबामे कोनो देरी नहि होइत छल ओ अधिकांश लोककेँ ओही दिन वीजा भेटि जाइत छल। राजदूत महोदय हमरा लोकनि द्वारा पुछल गेल कतेको जिज्ञासाक उत्तर दैत रहलाह। दूतावासक बाद हमरा लोकनि नगर भ्रमण हेतु विदा भेलहुँ। ओहि क्रममे पुरना महल देखलहुँ जतएसँ ८०० साल धरि ओहि देशक शासन भेल छल। प्रधानमंत्री आवास एवम् संसद भवनकेँ एकदम लगीचसँ हम सभ देखलहुँ आ सुरक्षाकेँ जे ताम-झाम अपना देशमे अछि, से ओतए कतहु नहि बुझाएल। शहर एकदम स्वच्छ, मनोरम। लोकक अवादी बहुत कम। रस्तामे तँ मोसकिलसँ किओ देखाइत। खेत सभ हरिअर कंचन। बीच-बीचमे कतहु-कतहु गाम सभ, छोट-छोट मुदा पक्काक घर सभ दर्शनीय दृश्य उत्पन्न करैत छल। सभ घरपर सौर ऊर्जाक उत्पादनक व्यबस्था छल। रस्ता भरि

पवनचक्की द्वारा विद्युत ऊर्जा उत्पादनक व्यबस्था देखाएल। यत्र-तत्र द्वितीय विश्व युद्धक स्मृति अवशेष भरल छल।

सड़कपर ३५टा भारतीय हुजुम जखन चलैत छल तँ अभूतपूर्व दृश्य भए जाइत छल। देशक प्राय: सभ राज्यक लोक हमरा सभहक संगे छलाह। अहिना सड़कपर चलैत काल वियानाक फूट-पाथपर एकटा पंजाबी दोकान केने छलाह। हमरा सभकेँ हिन्दीमे गप्प करैत सुनि बहुत प्रसन्न भेलाह। गप्प-सप्पक क्रममे अपन परेसानी सभ व्यक्त करैत रहलाह।

सम्पूर्ण यूरोप एक दोसरसँ जुड़ल अछि। सड़कक माध्यमसँ पूरा यूरोप घुमि सकैत छी। एकाधिक प्रवेश वीजा भेटैत अछि। जहिना अपना देशमे एक राज्यसँ दोसर राज्य जाइत छी तहिना ओतए एक देशसँ दोसर देश घुमि सकैत छी।

लगपासक घर सभमे फलक बगीचा छल। निच्चाँमे फल सभक पथार रहैत छल। सड़कक काते-काते हम सभ चली तँ लोक सभ आश्चर्यचकित भए देखैत रहैत छल। किओ-किओ कहैत जे ओ इण्डियाकेँ जनैत अछि किंवा इण्डिया गेलो अछि। मुदा सभहक मुखमण्डलपर एकटा सत्कारक भाव भेटैत छल जकरा बिसरब असम्भव...।

१२ अगस्त २००९क हमरा लोकनिक पहिल पड़ाव छल- यूनीडो (United Nations Industrial Developemant Organization) संयुक्त राष्ट्रसंघक अधीन यूनीडो अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर गरीबी निवारण हेतु औद्योगिकरणक विकास हेतु कार्यरत् अछि। जनवरी २०१७ धरि भारत सहित १६८ देश एहि संस्थाक सदस्य छथि। संस्थाक निदेशक द्वारा प्रस्तुतिकरणक क्रममे मूलत: वर्तमान

बाजार आधारित परिवेशमे सरकार सभहक महत्व विषय उभरल।

११ अगस्तक दिनुका भोजन एकटा भारतीय भोजनालयमे छल। ओकर संचालक एकटा भारतीय युवक छलाह जे ओहिठाम होटल प्रबन्धन करबाक हेतु गेल रहथि आ पढ़ाइ पूरा कए भोजनालय चलबए लगलाह। ओ अपन प्रयासमे पूर्ण सफल छलाह। होटल खूब चलैत छल। उत्तम कोटिक भारतीय भोजनक व्यबस्था छल। मुदा दोसर दिन एकटा चाइनीज भोजनालयमे खेनाइक व्यबस्था छल। शाकाहारी लोकक संख्या आधा-आधी छल ओहिमे ६-७ टा तँ कट्टर शाकाहारी छलाह। ..एकटा हाँड़ीमे भात राखल रहए। वैरा कहलकै जे आधा दिस तँ अण्डा सहित भात अछि आ आधा बिना अण्डाबला।

ई बात सुनि कए हम आ हमर एकटा दच्छिन भारतीय मित्र कड़ा विरोध कएल, आखिर एहि बातक कोन गारंटी अछि जे एक्के हाँड़ीमे राखल दू तरहक भात उलटि नहि गेल होएत आ छूतिक तँ बाते छोड़ू। हम सभ ४-५ गोटे भोजनपर सँ उठि गेलहुँ। ताहिपर आयोजक लोकनिक आग्रह भेल जे हम सभ कम-सँ-कम जूसे पीबि ली। मुदा बादमे ओकर भूगतान लए कए बिबाद भए गेल जे मोसकिलसँ समटल।

शाकाहारी लोकनिकेँ सभठाम कष्ट बुझाए सिवाय भारतीय होटल सभमे। दोसर ठाम तँ शाकाहारक सही माने घास-फूस बुझल जाइत छल। जँ अहाँ छाँटि सकब तँ अहाँ जानी। भोजनक मामलामे सभसँ नीक व्यबस्था सलोविनयामे छल। ओहिठाम भोरक जलखै एवम् रात्रिक भोजन गुजराती होटलसँ व्यवस्थित छल तैँ अति रूचिकर रहैत छल। ओतहु दिनुका भोजनक हेतु चाइनीज भोजनालयक

व्यबस्था छल जतए हमरा सन शाकाहारी प्राय: भूखले रहि जाइत छल। एहि आशामे जे रातिमे सभ सधा लेबैक। बाहर खाएब किंवा पानियोँ पीबि बड़ महग रहए। एकटा कौफीक हेतु तीन यूरो यानी भारतक लगभग २७० रूपैआ होइत छल जे बड़ महग बुझाइत। जखन-करवनो कोनो बैसक वा सरकारी कार्यक्रम होइत छल तँ पानि, चाह, कौफी, बिस्कुटक व्यबस्था तँ रहिते छल। नगर भ्रमणमे सेहो आयोजक द्वारा सीमित मात्रामे पानिक बन्द बोतल देल जाइत छल। ओहिसँ बेसी पीब तँ कीनए पड़त। दाम-पुछू नहि। टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।

१२ अगस्त २००९क दुपहरियाक भोजनक बाद आइ.ए.ई.ए. (International Atomic Energy Agency) क निदेशक द्वारा भाषण छल। ओ भारतीय छलाह। ओहिठाम नौकरीसँ पहिने भारतीय प्रशासकीय सेवाक अधिकारी रहथि, आ तैँ भारतीय परिस्थितिसँ पूर्ण अवगत रहथि। ओ किसिम-किसिमसँ नाभिकीय ऊर्जाक रचनात्मक उपयोगक विषयपर अपन विचार रखैत एहि बातपर जोर दैत रहथि जे दुनिआमे जाहि प्रकारसँ ऊर्जाक प्रयोजन बढ़ि रहल अछि, ताहिमे नाभिकीय ऊर्जाक रचनात्मक प्रयोग अनिवार्य भए गेल अछि। ततबे नहि, कतेको प्रकारक चिकित्सीय जाँच एवम् उपचारमे सेहो एकर उपयोगिता महत्वपूर्ण अछि।भाषणक बाद प्रश्न पुछबाक परिपाटी छल जाहिसँ बढ़ियाँ बात ई छल जे यू.एन.ओ.क संस्थामे रहितो ओ भारतीय हितक प्रति बहुत संवेदनशील रहथि। आइ.ए.ई.ए.क मूल उद्देश्य शान्ति हेतु आणविकक शक्तिक प्रयोग थिक। एकर स्थापना संयुक्त राष्ट्र संघक स्वायत्व संस्थाक रूपमे सन् १९५७ ई.मे भेल।

वियानाक दर्शनीय स्थान सभमे महत्वपूर्ण अछि, हसवर्ग

साम्राज्यक राज महल...। १२७९ ई.सँ लगातार कोनो-ने-कोनो राजाक शासन केन्द्र रहल ई महल संप्रति आस्ट्रीयाक राष्ट्रपतिक सरकारी आवास अछि। एहि महलमे नाना प्रकारक म्यूजियम केर अलावा आवासीय अपार्टमेन्ट सभ अछि। राजमहलक अन्दर सार्वजनिक पूजाक स्थान अछि जाहिठाम आम जनता आबि जा सकैत अछि। रबि दिन ओहिठाम संगीत कार्यक्रम सेहो आयोजित कएल जाइत अछि। राजमहलक अन्दर सीसी म्यूजियम अछि जे ९ बजेसँ सायं ५.३० बजे धरि आम जनता हेतु खुजल रहैत अछि। सीसी म्यूजियमक अन्दर ऑडियो टूरसँ बहुत रास जानकारी भेटैत अछि। महलक अन्दर पुरना खजाना एवम् ओहिमे राखल राजमुकुट ओ राजकीय वस्त्र सभ दर्शनीय थिक।

१३ अगस्त २००९ क आठ बजे हम सभ वियानासँ म्युनिख (जर्मनी) हेतु बस द्वारा प्रस्थान केलहुँ। लगभग पाँच बजे म्युनिख स्थित भारतीय कांसुलेट जेनरलक कार्यालय पहुँचलहुँ। ओहिपर फहराइत तिरंगा झण्डा फटकिएसँ देखा रहल छल। आपसी परिचयक बाद कांसुलेट जेनरल महोदय भारत-जर्मनीक आपसी सम्बन्ध एवम् वर्तमान आर्थिक परिवेशमे तकर महत्व पर सारगर्भित भाषण देलाह।

हुनकर कहब रहनि जे जर्मनी संगे भारतक पुरान सम्बन्ध रहल अछि। जर्मनीमे संस्कृत अध्ययन एवम् अनुसन्धानक अति प्राचीन इतिहास रहल अछि। दुनू देशकेँ जनतांत्रिक शासन पद्धतिक अलावा सांस्कृतिक एवम् नैतिक मूल्यमे अनुरुपता अछि। संगे ईहो कहब रहनि जे भारतीय द्वारा जर्मनीमे कएल गेल निवेशसँ तुलनात्मक दृष्टिये बेसी जर्मनकेँ नौकरी भेटल अछि ,भारतमे जर्मन निवेश द्वारा कम भारतीयकेँ जीविका भेटल अछि। ओ अतिशय आग्रही एवम् सरल

स्वभावक लोक छलाह। कार्यक्रमक बाद चाह-पान भेल आ हमरा लोकनि होटलमे रात्रि विश्रामक हेतु चलि गेलहुँ।

१३-१४ अगस्तक रात्रिमे हम सभ म्युनिखमे रहलहुँ। होटल आलीशान छल। स्नानगृहमे छोट-सँ-पैघ नापक किसिम-किसिमकेँ तौलिआ राखल छल। कोठरीमे मिनीवार छल। पीबैबला घरेमे बैसल पीबि सकैत छल, मुदा सभहक पाइ जाएकाल चुकता करए पड़ैत। भोरक जलखैक शुल्क नहि देबक रहए। जलखैक स्थान विशालकाय छल आ ओहिमे जलखैक सामानक भरमार छल। जे खाउ, जतेक खाउ। फल खाउ, फलक रस पीबू, अण्डा खाउ। ब्रेड सभहक तँ ततेक किसिम रहए जकर वर्णन कठिन अछि।

म्युनिखक होटल सभहक साज-सज्जा वियानासँ बेसी नीक रहए। चाहक विन्यास सभमे भारतीय दार्जलींगक चाहक पुड़िया सभ सेहो रहए। लोक सभ सुन्दर नमगर ओ चुस्त छल। बड़का-बड़का मौल सभमे वस्तुक भरमार छल। जे चाही लिअ, मुदा दाम भारतसँ बेसिए रहए। इलेक्ट्रॉनिक सामान सभहक भरमार रहए, मुदा महग। तखन की लेल जाए? अधिकांश लोक सनेस हेतु किसिम-किसिमक चॉकलेट सभ लेलक।

म्युनिखक वीयर हॉलमे हजारो आदमी एकठाम बैसि कए दारू पीबैत अछि। हमर किछु सहयोगी सभ उत्सुकतावश ओकरा देखबाक हेतु रातिमे गेलाह मुदा लौटला पछाइत अपसोच करैत रहथि जे बेकारे गेलहुँ। सम्पूर्ण वातावरण दुर्गन्धसँ भरल छल। हम आ हमर रूमेट ओहि समयकेँ सुतएमे उपयोग कए प्राय: बढ़िआँ निर्णय लेने रही। म्युनिखमे सालमे एकबेर वार्षिक वीयर उत्सव होइत अछि। प्राय: सितम्बरक मध्यसँ शुरू भए अक्टुवरक प्रथम सप्ताह धरि चलैत

अछि। एहिमे दुनिआ भरिसँ ६ करोड़सँ अधिक लोक भाग लैत अछि। वावेरियन संस्कृतिक ई एकटा महत्वपूर्ण अंग अछि। एहि उत्सवमे किसिम-किसिम केर खेल-धुप, नाना प्रकारक भोजनक अतिरिक्त मनोरंजनक अनेकानेक विकल्प सुलभ रहैत अछि।

१४ अगस्त २००९ ई.क प्रात:काल ९.३० बजेसँ जर्मनीक चैम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री ववारियाक सभा गृहमे संस्थानक अध्यक्षक भाषण छल।उपरोक्त संस्थाकेँ जर्मनीक लाखों कम्पनी सदस्य छल। पेरिसक सी.सी.आई.क बाद ई अपना तरहक संस्थानमे दोसर स्थानपर छल। जर्मनीक एकीकरण एवम् तकर प्रभावक विषयमे एहि बैसारमे विस्तारसँ चर्चा भेल। पच्छिमी जर्मनी अपेक्षाकृत अधिक समृद्ध अछि। पू. जर्मनीक आर्थिक स्थिति तखनो खास्ता-हाल छल। तैँ एकीकरणक बाद पच्छिमी जर्मनी दिसका लोक सभ एकीकरणसँ अप्रसन्नता व्यक्त करथि।

जर्मनीकेँ म्युनिखमे घुमैत हमरा लोकनि ओलम्पिक खेलक स्थान देखलहुँ। म्युनिखक तकनीकी संग्रहालय देखलहुँ। ओहिमे विद्युत उत्पादनक व्यवहारिक वर्णन छल। फराक-फराक तलपर नाना प्रकारक वस्तु सभ प्रदर्शनीक हेतु राखल छल। वायुयान, रेल, जल-जहाज सहित अनेकानेक वस्तुक जर्मनीमे अविष्कार एवम् प्रयोगक जानकारी लैत, देखैत चकविदरो लागि जाइत छल। निश्चय ओ सभ कतेको क्षेत्रमे हमरा सभसँ बहुत आगू छलाह। भए सकैए जे लोक यूरोपक प्रति अनेकानेक धारणासँ पूर्वाग्रहित हो, परन्तु हमरा रस्ता, होटल, चौबटियामे कोनो अभद्र बात नहि देखाएल। ओहि तुलनामे तँ दिल्ली किंवा लगपासक परिस्थिति अतिशय चिंताजनक अछि।

ओहिठामक लोक सभ कार्यक प्रति निष्ठावान एवम् परिश्रमी

छथि। ततबे नहि, व्यर्थक बिबादसँ सेहो कोनो मतलब नहि। ओतेक दिनमे मात्र एक दिन वियानामे पुलिसक जत्था देखबामे आएल जे कोनो प्रर्दशनकेँ नियंत्रित कए रहल छल। अपना सभ ओहिठाम जकाँ यत्र-तत्र सर्वत्र पुलिसिया हुजुम किंवा सुरक्षाक तामझाम कतहु नहि देखबामे आएल। आस्ट्रीयाक प्रधानमंत्रीक घर धरि अपरिचित लोक सभ बेरोक-टोकक चलि जाइत छल। मंत्री सभ मेट्रोरेलसँ कार्यालय अबैत-जाइत छलाह।

भोरे-भोर कतेको कार्यालयमे लोक भरल आ कार्यरत भए जाइत छलाह। साइकिल चला कए व्यायाम करब आम बात छल। साइकिलक हेतु सभठाम फराक रस्ता छल। सभसँ बेसी जे आकर्षक बात छल से ई जे लोक सभमे व्यर्थक अहंकार नहि छल। सरल एवम् सहज रूपेँ लोक व्यबहार करैत छल जकर अनुमान देखिए कए भए सकैत अछि। ओहि सभ शहरमे जनसंख्या कम अछि। तैँ ओकरा व्यवस्थित करब किंवा ओकरा लेल व्यबस्था करब अपेक्षाकृत असान अछि। मुख्य शहरकेँ जँ छोड़ि दी तँ बीचक रस्ता सभमे मोसकिलसँ लोक देखाइत। हँ! सप्ताहांतधरि दृष्टि अलग रहैत छल।

शुक्रक रातिमे दारुक दोकान पर माछी जकाँ लोक भनभनाइत रहैत छल। शनिक भोरे लगैत जेना पूरा अवादी शहर छोड़ि कए कतहु भागि रहल अछि। किओ कारसँ, किओ मिनी बससँ, किओ कारमे ट्राली लटकौने लोकक हुजुम देखाइत छल। लोकसभ सप्ताहांत बिताएब हेतु कोनो झील, कोनो रमणीय स्थान वा कोनो दोसर शहर जा रहल छल। झीलक लगपास लोक पटोटनि देने रौद सोंखैत रहैत छल। समुद्रमे अति तीव्र गतिसँ स्वचालित नाओ सभसँ लोक सभ जल क्रीड़ा करैत देखाइत। ओकर वेग आ ओहिमे सभ लोकक

दुस्साहस प्रशंसनीय छल। गोटे लोक बड़ मोटाएल देखाइत छल, से देखि दुख ओ आश्चर्य होइत छल, जे एतेक सम्पन्न परिवेश रहितो ई सभ शारीरिक रूपसँ अक्षम जकाँ रहबाक कारण कतेको सुखसँ वंचित होएत।

१५ अगस्तक स्वतंत्रता दिवस समारोहक अवसरपर हमरा लोकनि पुन: भारतीय कन्सुलेट जेनरलक ओहिठाम पहुँचलहुँ, जाहिठाम झण्डोत्तोलन भेल आ भारतक राष्ट्रपति महोदयक संदेश पढ़ि कए सुनाएल गेल। तदुपरान्त मिष्ठान भोजन भेल एवम् आपसी गप्प सभ सेहो। कार्यक्रमक समापनक बाद नगर भ्रमण करैत हम सभ सल्जवर्गक हेतु प्रस्थान केलहुँ।

सल्जवर्ग आस्ट्रीयाक चारिम सभसँ पैघ शहर अछि। द्वितीय विश्वयुद्धक दौरान कतेको घर घ्वस्त भए गेल ओ सैकड़ो लोक मारल गेलाह। शहरक अधिकांश घर घ्वस्त भए गेल। द्वितीय विश्वयुद्धक बाद सल्जवर्ग राज्यक राजधानी बनल/विश्वप्रसिद्ध गायक मोजार्टक जन्म अही शहरमे भेल छल। २७ जनवरी २००६क मोजार्टक २५० मा जन्म समारोह धूम-धामसँ मनाओल गेल छल। हम सभ मोजार्टक घर देखए गेलहुँ। ओहि घरकेँ अजबरूपसँ सुरक्षित राखल गेल अछि। घरमे माजार्ट द्वारा प्रयुक्त किछु वाद्य यंत्र सभ लोकक दर्शनार्थ राखल अछि। मोजार्टक देहान्त मात्र ३५ वर्षक आयुमे भए गेल परन्तु एतबे कम समयमे ६०० सँ अधिक संगीतक रचना केला आ पाश्चात्य कलात्मक संगीतपर अमिट छाप छोड़ि गेलाह।

१५ अगस्त २००९ क ८ बजे रातिमे थाकल, झमारल हमरा लोकनि लुवियाना आपस अएलहुँ आ संस्थानक छात्रावासमे रात्रिक भोजन कए विश्राम केलहुँ।

१६ अगस्त २००९ केँ भोरे सात बजे हम सभ बससँ बेनिस देखबाक हेतु विदा भेलहुँ। इटलीक पूर्वोत्तर भागमे ११७ छोट-छोट टापूसँ आच्छादित 'बेनिस' शहर पूल द्वारा एक-दोसरसँ जोड़ल अछि। वेनिसक अवादी लगभग ५५ हजार छल। लुवियानासँ वेनिस जाइत काल १८ किलोमीटरक आवा-जाहीमे लगभग ३००० गुफा सभसँ गुजरय पड़ल। बीचमे ओे स्थान अछि जतए द्वितीय विश्वयुद्धक दौरान ११५ सैनिककेँ गाड़ि देल गेल छल। असलमे द्वितीय विश्वयुद्ध ओहिठामक लोकक मोनमे गड़ि गेल अछि। चाहे, अनचाहे लोक ओहि युद्धसँ जुड़ल घटनाक गप्प करए लगैत छल।

दच्छिन दिस आल्प्स पहाड़ी क्षेत्र देखाइत छल। शहरमे प्रवेश हेतु बसकेँ ४०० यूरो आ पार्किंग हेतु ४० यूरो देबए पड़ल। रस्तामे मकई, जौ, अंगुरक खेती देखलहुँ। जतए धरि द्दष्टि जाइत, हरियर कंचन देखाइत।

वेनिस शहर तँ जेना पानिमे डुबि रहल अछि। एक घरसँ दोसर घर जेबाक हेतु पूलक मदति लेबए पड़ैत। जतए पूल नहि अछि ओतए नाओसँ लोक एकठामसँ दोसरठाम जाइत अछि। जेना अपना सभहक ओतए साइकिल रहैत अछि, तहिना ओहिठाम लोक सभ नाओ रखैत अछि।

वेनिसक कलात्मकता एवम् शिल्पकारी विलक्षण अछि। आश्चर्य होइत अछि जे ई शहर पानिमे डुबि किएक ने जाइत अछि। मध्यकालीन समयमे वैनिस आर्थिक एवम् सामुहिक प्रतिनिधिक केन्द्र छल। रेशम, मसाला एवम् अनाजक प्रचुर मात्रामे व्यापार होइत छल। ९ वीं सँ १७वीं शताब्दी धरि वेनिस प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक केन्द्र छल जाहि कारणसँ ई शहर सदिखन आर्थिक रूपसँ समृद्ध रहल।

तेरहम शताब्दीमे एहिठाम ३७ हजार नाविक ३००० जहाजकेँ चलबैत छलाह। वेनिस अपन स्वतंत्र अवधिक दौरान गणराज्य बनल रहल। हलाँकि बेनिसक लोक आमतौरपर रूढिवादी रोमन कैथेलिक रहए मुदा धार्मिक कट्टरता एवम् पाखण्डक ओतए चलन नहि रहए। १३४८सँ १६३०क बीचमे कतेको बेर प्लेग फैल गेल जाहिसँ भयंकर मृत्यु भेल। नेपोलियन बोनापार्ट संगे युद्धक बाद वेनिसक स्थितिमे कएक बेर उठा-पटक होइत रहल।

वेनिसकेँ महल सभक नीव लकड़ीक बनल अछि। ई लकड़ी सभ सैकड़ो वर्षसँ पानिमे डुबल रहलाक बादो खराप नहि भेल अछि।

वेनिसमे दुपहरक भोजन एकटा भारतीय भोजनालयमे छल। ओहूठाम पहुँचक हेतु हमरा सभकेँ नाओक मदति लेबए पड़ल रहए। भोजनक पछाइत हमरा लोकनि जहाजमे बैसि कए मुरानो, वुरानो एवम् टार्सोका द्वीप घुमए गेलहुँ। मुरानोमे शीशा बनेबाक पुरान परम्परा अछि। वुरानोमे रंग-विरंगीघर एवम् हथकरघाक सामानक प्रचूरता बुझाएल। टार्सोका द्वीपपर ऐतिहासिक एवम् कलात्मक महत्वक कतेको उदाहरणक संग अत्याधुनिकताक प्रभाव देखबामे आएल। जहाजपर बैसल अनगिनित संख्यामे लोककेँ जल-क्रीड़ा करैत देखि, ओहिठामक लोक सभकेँ जीबाक अन्दाज अजब छल। दिन भरि घुमि-फिर हम सभ एक बेर फेर ९ बजे रातिमे लुबिआना स्थित संस्थानक छात्रावासमे रात्रि विश्रामक हेतु पहुँचलहुँ।

एवम् प्रकारेण वियाना, म्युनिख एवम् वेनिस सहित लगपासक प्रमुख स्थान देखि-सुनि लेलाक बाद १७ अगस्तसँ २१ अगस्त २००९ धरि संस्थानमे सार्वजनिक महत्वक अनेकानेक विषय सभपर भाषण भेल जाहिमे सम्बन्धित विषयक शीर्षस्थ विद्वान सभ भाग लेलाह।

संगहि लुवियानाक नगरपालिका, ब्लेड झील एवम् कुन्जक भ्रमण सेहो भेल। स्लोवेनियाँ स्थित विश्व व्यापार केन्द्र सेहो देखबाक हेतु हमरा लोकनि गेलहुँ। २१ अगस्त २००९ क प्रशिक्षण कार्यक्रमक समाप्तिक संग सभगोटेकेँ प्रमाण पत्र देल गेल। रातिमे संस्थानक महानिदेशक द्वारा विदाइ-भोज देल गेल। ओहिमे संगीत (ऑकेस्ट्रा)क कार्यक्रम सेहो छल। किछु गोटे अपनो गीत गओलनि। अजब महौल छल। कतेक हृदयसँ हमरा लोकनिक विदाइ भेल, तकर वर्णन करब कठिन।

२२ अगस्त २००९क शनि दिनक गप्प छी। संस्थानक क्रिया-कलाप सम्पन्न भए गेल छल। आपसी यात्रा २३ अगस्त २००९क छल। तैँ ओहि दिनक उपयोग घुमबा-फिरबामे भेल। हम सभगोटे विश्व प्रसिद्ध पाल्टोजना गुफा घुमए गेलहुँ। जमीनक अन्दर बनल ई गुफाकेँ पछिला २०० सालक दौरान ३६ करोड़ लोक देखि चुकल अछि। एहि गुफाक यात्रामे डेढ़ घन्टा समय लगैत अछि। सुरंगमे बनल रस्ता, दीर्घा एवम् हॉल सभहक श्रृखला देखैत बनैत छल। गुफाक अन्दर घुमबाक हेतु छोट सन रेलपर चढ़लहुँ जे छुक-छुक करैत हमरा सभकेँ गुफाक आरामसँ भ्रमण करा देलक। उपरोक्त भ्रमणक मार्गदर्शन विश्वक अनेकानेक भाखामे उपलब्ध छल। ओहि गुफाकेँ देखला, घुमलाक बाद जे मोनपर छाप पड़ल से अखनो अमिट अछि। कला एवम् पुरषार्थक विलक्षण संगम अछि ओ गुफा..!

२२ अगस्त २००९क भोरे हम सभ लुबिआना हवाई अड्डापर रही। ओहिठाम वायुयानमे संवार भए पेरिसक हेतु विदा भेलहुँ। रस्तामे सभ यात्रीकेँ जलखै देल गेल। घन्टा भरिक ई लघु यात्रा देखैत-देखैतमे बीत गेल। फेर हम सभ पेरिस हवाई अड्डापर उतरलहुँ। वारंवार चेतौनी देल गेल जे अपन समानक सावधानीसँ रक्षा कएल

जाए कारण ओहिठाम उचक्का सभ तुरन्त समान गाएब कए दैत अछि।

हवाई अड्डासँ बाहर हमरा लोकनिक बस तैयार रहए। सभ अपन-अपन समान रखलक आ बस द्वारा नगर भ्रमणपर विदा भेल। संगमे एकटा मार्गदर्शक सेहो छल जे ठाम-ठाम आबएबला प्रमुख वस्तु आ स्थान सभहक परिचय करबैत रहल।

फ्रांसक राजधानी पेरिसक 'इफेल टावर' विश्व प्रसिद्ध अछि। हमरा लोकनि ओहि टावरपर चढ़लहुँ आ बेरा-बेरी पेरिस शहरक विभिन्न भागक चित्र टावरपरसँ खिचलहुँ। टावरक ऊपर धरि चढ़बाक हेतु लिफ्टक व्यबस्था अछि किंवा पएरो सिढ़ीक माध्यमसँ ओहिपर चढ़ि सकैत छी। इफेल टावरक नाम ओकर निर्माता अभियंताक नामपर पड़ल अछि।

११८७-८९ ई.क बीच निर्मित एक इफेल टावरक ऊँचाइ ३२४ मीटर अछि। एहि टावरपर चढ़ि, घुमि हमरा लोकनिकेँ पेरिस शहरक विहंगम दृष्टि भेटल। विलक्षण शहर अछि, जाहिमे लगभग एक्के रंग ऊँचाइक महल सभहक भरमार अछि। इफेल टावरक निच्चाँमे कएटा भारतीय सभ छोट-मोट समान सभ बेचैत भेटलाह।

परिसक सीन नदीपर ३७ टा पूल पेरिसमे अन्दर बनल अछि। ई नदी पेरिसक मुख्य व्यापारीक जलमार्ग अछि। पेरिस शहरमे प्रयुक्त पानिक आधा भाग अही नदीसँ अबैत अछि। गर्मीक समयमे एतए यात्रीगण विश्राम कए असीम आनन्दक अनुभव करैत अछि।

हमर एकटा संगी साल भरि पेरिसमे रहल रहथि, तैओ कतेको चीज नहि देखि पाएल रहथि। हम सभ तँ मोसकिलसँ बारह घन्टामे पेरिसकेँ देखए चलल रही। जाहिर छै, कतेक देखि सकितहुँ? तथापि मोटा-मोटी प्रमुख स्थान सभ लग बस रोकैत छल आ हमरा लोकनिक

मार्गदर्शक यथा साध्य ओहि विषय वस्तुक इतिहास एवम् वर्तमानसँ परिचित करबैत छलाह।

नेपोलियनक घर सेहो हम सभ देखलहुँ जे आइ-काल्हि स्मारक भए गेल अछि। दिनमे भोजनक हेतु एकटा पाकिस्तानी भोजनालयमे व्यबस्था छल, मोन छह-पाँच करैत रहैत जे खाइ ,कि नहि खाइ, मुदा भूख बहुत लागि गेल छल। अस्तु, भोजनमे सामिल भेलहुँ। पूर्णत: भारतीय शाकाहारी एवम् अति स्वादिष्ट भोजन कए मोनमे जे सन्तुष्टि भेल तकर वर्णन नहि।

भोजनोपरान्त हम सभ पुन: घुमए गेलहुँ। पेरिसक मेट्रो देखलहुँ। दुनिआक सर्बोत्तम मेट्रोमे सँ एक पेरिस मेट्रो रेल मानल जाइत अछि। ३०० कि.मी. लम्बा ट्रैकपर करीब-करीब ३०० स्टेशनपर ई ठाढ़ होइत अछि।

मेट्रोक अलावा बस, टैक्सी एवम् नाओ द्वारा शहरक यातायातक उत्तम प्रबन्ध होइत अछि। शहरमे किरायापर साइकिल देबाक सेहो व्यबस्था अछि, जाहि लेल मामूली शुल्क लेल जाइत अछि।

सायंकाल हमरा लोकनि आपस पेरिस हवाई अड्डापर पहुँचि गेल रही। ओहिठाम सूर्यास्त आठ बजे तक नहि भेल रहए। तखने हम हवाई जहाजपर अपन देशक हेतु उड़ि गेलहुँ। आकाशमे लटकल सूर्य भगवानकेँ बड़ीकाल धरि देखैत रहलहुँ...।

◌

कालापानी

सन् १८५७क प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलनसँ ब्रिटिश हुकुमत हिल गेल। विदेशी सम्राज्यपर आक्रमण ततेक जोरदार छल आ ओहिमे भागीदारी ततेक सशक्त छल जे ओकरा सम्हारब एकटा गंभीर चुनौती बनि गेल। देशभक्त लोक सभकेँ प्रताड़ित करबाक हेतु आ ओकरा सभकेँ देशसँ फटकी करबाक उद्देश्यसँ अंग्रेज सरकार अण्डमान निकोबार दीप समूहक चेथम टापूपर जेलक निर्माण प्रारम्भ केलक जे स्वच्छ पानिक अभावमे आगू नहि बढ़ि सकल। तकर बाद रोज टापूपर काज प्रारम्भ भेल। १० मार्च १८८५क २०० स्वतंत्रता सेनानी एहि टापूपर पहुँचलाह। तकर बाद तीन जल-जहाजसँ ४४१ स्वतंत्रता सेनानीकेँ आनल गेल। ओहिमे सँ अधिकांश जमींदार, नबाब, लेखक, कबि आ सम्पन्न लोक सभ छलाह। हुनके सभकेँ जंगल काटि-काटि जेलक निर्माणक काजमे लगाओल गेल। हुनका सभकेँ गुजराक हेतु एकआना नौ पैसा रोज देल जाइत छल।

अंग्रेज सभकेँ स्वतंत्रता सेनानीपर भरोस नहि रहए। सजा प्राप्त कैदी सभकेँ रातिक अन्हारमे चेनसँ बान्हि कए वाइपर नामक टापूपर राखल जाइत छल। वाइपर टापूपर एकटा जेल आ फाँसी घर सेहो बनाओल गेल। स्वतंत्रता आन्दोलनक कतेको सेनानी लोकनिकेँ फाँसी एतए देल गेल। उत्तर-पच्छिम सीमान्त प्रदेशक पाठान शेर अलीकेँ ब्रिटिश भाइसराय लॉर्ड मायोक ८ फरवरी १८७२क हत्याक आरोपमे ११ मार्च १८७२क एतहि फाँसी देल गेल। प्राप्त जानकारीक अनुसार अण्डमान वासी बिआ लालाकेँ एतहि फाँसी देल गेल। ओतहि एकटा अज्ञात स्वतंत्रता सेनानीकेँ सेहो फाँसी देल गेल। तोखा नामक

कैदी (संख्या २१५४५)कें १२ दिसम्बर १८६९क फाँसी देल गेल। जगन्नाथपुरी महाराजा वृज किशोर सिंह देव वाइपर जेलमे राखल गेल रहथि, जतए १८७९ मे हुनकर देहान्त भए गेल।

एहेन क्रूर व्यबस्थाक भग्नावशेष भारतीय संगे ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा कएल गेल क्रूरताक साक्षीक रूपमे ढहल-ढनमनाएल अखनहुँ विद्यमान अछि। आइ-काल्हि वाइपर टापूक दू-महला जेलक मात्र चबूतरा अवशेष अछि। बाहर दिस चारक छोट भाग ध्वस्त देबाल मात्र बँचल अछि जतए अनगिनित देशभक्त लोक सभ अखनहुँ जा कए गुम्म पड़ि जाइत छथि। वाइपर टापूक प्राकृतिक सौन्दर्य विलक्षण अछि। पोर्ट ब्लेयर स्थित फोनेक्स जे जेट्टीसँ विभिन्न द्वीपक हेतु जल जहाज खुजैत अछि। जल जहाज आधुनिक सुख-सुविधासँ परिपूर्ण अछि। एहिठामसँ २० मिनटमे जल जहाज द्वारा वाइपर टापू पहुँचल जा सकैत अछि।

कालापानी प्राप्त कैदी सभहक संख्या ततेक बढ़ि गेल जे वाइपर टापूक जेल छोट पड़ि गेल। तखन अंग्रेज सरकार पोर्ट ब्लेयरमे नव जेलक निर्माण १८९६ ई. मे प्रारम्भ केलक। एहि निर्माण काजमे ६०० कैदीकेँ लगाओल गेल। १९०६ ई.मे जेल बनि कए तैयार भए गेल।

साइकिलक सातटा स्पोक जकाँ बनल जेलक बीचमे केन्द्रिय टावर छल, जाहिपर ठाढ़ एकमात्र पहरेदार सातो जेल-घरपर नजरि रखैत छल। एहिमे कुल मिला कए ६६३ सेल छल। २१टा वार्डन दिन-राति जेलक सातो भागक तीनू तल्लाक देखभाल करैत छलाह।

कैदी सभकेँ काजक कठोर कोटा देल जाइत छल जकरा पूरा करब असम्भव छल। जे कोटा पूरा नहि केलक तेकरा भयानक यातना

देल जाइत छल। कैदी सभ एकर विरोधमे कएक बेर सामुहिक आमरण अनशन केलक। आमरण अनशनमे तीन गोटा मरि गेलाह। १९३७ मे ४५ दिनक अन्तिम हड़ताल भेल। तकर बाद महात्मा गान्धी आ रबीन्द्र नाथ टैगोरक अनुरोध पर कैदी सभकेँ भारतक जेल सभमे पठा देल गेल।

पोर्ट ब्लेयर स्थित सेलुलर जेल स्वतंत्रता सेनानी लोकनिपर अंग्रेज द्वारा कएल गेल अत्याचारक मूक दर्शक रहल अछि। एहि जेलक सात खण्डमे सँ आब मात्र तीनटा बँचल अछि, शेष चारिटाकेँ नष्ट कए देल गेल। स्वतंत्रताक बाद एहि जेलकेँ राष्ट्रीय संग्रहालयक दर्जा देल गेल। आइ-काल्हि सम्पूर्ण देशसँ स्वतंत्रता प्रेमी सभ एतए अबैत छथि आ देशक आजादी हेतु अपन समस्त सुख-सुविधा आ जीवन तक त्याग केनिहार स्वतंत्रता सेनानी सभकेँ अपन श्रद्धा अर्पित करैत अछि। एहि जेलक मुख्य द्वारा लग स्वतंत्रता आन्दोलनसँ जुड़ल चित्र सभहक प्रर्दशनी अछि। ओहि भवनक प्रथम तलपर आर्ट गैलरी नेताजी गैलरी आ स्वतंत्रता आन्दोलनसँ जुड़ल पुस्तकालय अछि। समस्त स्वतंत्रता सेनानीक स्मृतिमे एहि जेलक लगीच अनवरत जरैत स्वातन्त्र ज्योति राखल अछि। १९०६ ई.मे निर्मित सेलुलर जेल १३.५ फीट x ७ फीटक छोट-छोट कोठरीसँ बनल अछि जाहिमे लोहाक ग्रीलक द्वार लागल अछि। कैदी सभकेँ एक-दोसरसँ फराक रखबाक हेतु एहन निर्माण कएल गेल छल।

जेलक मुख्य द्वारपर दू-महला प्रशासकीय भवन अछि। मुख्य द्वारक बाम भागमे दोसर दू-महला भवन अछि जे ओहि समयमे जेल-अस्पतालक काज करैत छल। मुख्य द्वारक दहिन भागमे फाँसीघर बनल छल जाहिमे तीन व्यक्तिकेँ एक संग फाँसी देल जा सकैत छल।

तीनू कोठरी फराक-फराक छल। फाँसी घरमे बाहरी देबालक दोसर दिस एकटा केबाड़ खुजैत छलैक जाहि बाटे फाँसी चढ़ाओल गल व्यक्तिक लहास बाहर कएल जा सकैत छल। फाँसी घरसँ सटल हिन्दू तथा मुसलमान हेतु फराक भनसाघर छल। ओकर बीचमे इनार छल जाहिमे पेयजल उपलब्ध होइत छल। जेलमे वीर सावरकरक कोठरीसँ फाँसीघर निरन्तर देखाइत रहैत छल।

भारतक स्वतंत्रता आन्दोलनक किछु प्रसिद्ध सेनानी सभ एहि जेलमे रहल छथि जाहिमे प्रमुख नाम अछि- सावरकर बंधु, मोतीलाल वर्मा, बाबूजी राम हरि, पण्डित परमानन्द, कधा राम, उल्लासकर दत्त, वरिण कुमार घोष, भाई परमानन्द आदि। स्वतंत्रता आन्दोलनसँ जुड़ल किछु पैघ-पैघ षड्यंत्रमे सजा प्राप्त स्वतंत्रता सेनानीकेँ कालापानी भेलापर एतए राखल गेल छल। एहिमे प्रमुख मामला सभमे अलीपुर बम्ब केस, नासिक षड्यंत्र, लाहोर षड्यंत्र केस आदि प्रमुख अछि।

एहि राष्ट्रीय संग्रहालयक एक प्रमुख आकर्षण थिक- ‘प्रकाश एवम् ध्वनि कार्यक्रम। एहि कार्यक्रमकेँ देखि कए बारंबार रोमांच भए जाइत अछि। लोक चुपचाप स्वतंत्रा आन्दोलनक पुरोधा सभहक आत्म बलिदानक खिस्सा सभ देखैत-सुनैत अछि। लगैत अछि जेना भूतकालक आन्दोलनकारी सभहक जीवन वृतान्त सद्यः प्रकट भए गेल हो। फाँसीपर चढ़ल हुतात्मा सभ कहि रहल हो-

‘हे भरतवंशी! अहाँ हमर बलिदानकेँ बिसरि नहि जाएब।’

पोर्ट ब्लेयर जेबाक हेतु जल जहाज वा हवाई जहाज उपयुक्त साधन अछि। ओहिठाम रेल सेवा नहि अछि। चेन्नई, कोलकाता एवम् विसाखा पत्तनमसँ पोर्ट ब्लेयर हेतु नियमित जल जहाज खुजैत अछि।

महिनामे तीन वा चारिटा जहाज कोलकाता एवम् चेन्नईसँ पोर्ट ब्लेयर पहुँचैत अछि आ दू-सँ-चारि दिनमे सुस्ता कए आपस भए जाइत अछि। विसाखापत्तनमसँ मासमे एकबेर पोर्ट ब्लेयरक जल जहाज खुजैत अछि। एहि यात्रामे ४० सँ ५० घण्टा लगैत अछि। समुद्री यात्रा कते गोटाकेँ पचै नहि छनि आ ओ दुखित पड़ि जाइत छथि। पोर्ट ब्लेयरक हेतु हवाई जहाज चेन्नई , कोलकाता, एवम् हैदरावाद हवाई अड्डासँ खुजैत अछि। एहि यात्रामे दू घन्टा समय लगैत अछि। सुरक्षा कारणसँ ई जहाज सभ भोरक समयमे उड़ैत अछि। हम दिल्लीसँ चेन्नई आ चेन्नईसँ पोर्ट ब्लेयर गेलहुँ। आपसी यात्रा सेहो ओही मार्गसँ सम्पन्न भेल।

१७ नवम्बर २०१०क हम सभ चेन्नई हवाई अड्डापर पहुँचलहुँ। ओहिठाम राजाजी भवन स्थित अतिथि गृहमे रहबाक व्यबस्था छल। ओतए कनीकाल सुस्ता कए हम सभ ट्रेन द्वारा तिरुपति विदा भए गेलहुँ। १८ नवम्बर २०१०क रातिमे आपस चेन्नई अएलाक बाद हम राति विश्राम ओतहि केलहुँ। रस्ता हेतु, बहुत रास पुरुकिआ, ठकुआ सभ बना कए लए गेल रही जे चेन्नई अतिथि गृहमे राखि देने रहिऐक। आपस अएलहुँ तँ सभ पुरुकिआ, ठकुआ मूसक पेटमे चलि गेल रहए वा छिन्न-भिन्न भए गेल रहए।

२० नवम्बरक भोरे हम सभ पोर्ट ब्लेयर हेतु विदा भेलहुँ। २६ घन्टाक यात्राक बाद पोर्ट ब्लेयर पहुँचलहुँ। ओहिठाम राज्य पर्यटन विभाग द्वारा संचालित टील हाउसमे हमरा सभहक ठहराबक व्यबस्था छल। कनिक्के कालमे हम सभ ओतए व्यवस्थित भए गेलहुँ। हमरा सभकेँ चालक सहित गाड़ीक व्यबस्थाक छल जाहिसँ धुमबामे बहुत सहुलिअत भेल।

अण्डमान एवम् निकोबार द्वीप समूह केन्द्र शासित क्षेत्र अछि। बंगालक खाड़ी एवम् अण्डमान समुद्रक मुहानापर अवस्थित ई द्वीप समूहक राजधानी पोर्ट ब्लेयर थिक। एहि द्वीप समूहक कुल रकबा ३१८५ वर्ग मीटर अछि। एहिमे अण्डमान एवम् निकोबार दूटा द्वीप समूह अछि। नीकोबार द्वीप समूहक राजधानी कारनीकोबार अछि।

अण्डमान निकोबार द्वीप समूहमे छोट-पैघ ५७२ टापू अछि जाहिमे अधिकांश (५५०) अण्डमान द्वीप समूहमे आ २२ टा नीकोबार द्वीप समूहमे अवस्थित अछि। अण्डमान एवम् नीकोबारक बीचमे १५० किलोमीटर चाकर दस डिग्री चैनेल (समुद्री रस्ता) अछि। एहि बाटे चीन, जापान, सींगापुर, थाइलैंड, मलेशियाक जल जहाज जाइत अछि।

पोर्ट ब्लेयर पहुँचि हम सभ अतिशय उत्साहित रही। हवाई अड्डासँ सोझे राज्य पर्यटन विभागक अतिथि गृहमे आरक्षित आवासपर पहुँचलहुँ। पोर्ट ब्लेयर अण्डमान निकोबार द्वीप समूहक राजधानी अछि। अंग्रेज समयमे एहि स्थानकेँ कालापानी कहल जाइत छल। कट्टर स्वतंत्रता सेनानी सभकेँ अंग्रेज सभ एहिठाम स्थित कारागारमे पठा दैत छल। कतेको लोककेँ बिच्चे समुद्रमे डुबा कए मारि देल जाइत छल। एहि जेलसँ स्वतंत्रता आन्दोलनक इतिहास जुड़ल अछि। एकर अतिरिक्त समुद्रिका संग्रहालय मानव जाति संग्रहालय (Anthropological Musium) रोज द्वीप, वाइपर द्वीप, मैटीन पार्क, गाँधी पार्क, जंगल संग्रहालय, विज्ञान केन्द्र, हावलक द्वीप, चिड़िया खाना आदि ओहिठाम प्रसिद्ध दर्शनीय स्थान अछि।

टील हाउसक खिड़कीसँ समुद्रक मनोरम दृश्य तखन चरमोत्कर्षपर पहुँचि जाइत छल जखन प्रात:कालीन सूर्यक किरणक

स्पर्श समुद्र तलसँ होइत सूर्यक प्रतिविम्व क्षितिजपर लटकल रहैत छल। आवागमनमे प्रयुक्त जहाज सेहो घरे बैसल देखाइत छल। टील हाउसमे भोजन, जलखै, चाह इत्यादि सभ घरे जकाँ बना कए देल जाइत छल। माछ खेनिहार हेतु तँ ओ स्वर्ग छल। बहुत साधारण दरपर ओहिठाम समुद्री माछ बनल-बनाओल भेटि जाइत छल।

संयोगसँ संग्रहालयमे घुमैत काल हमर एकटा मित्र सपरिवार भेटि गेलाह। ई एकटा आश्चर्यजनक घटना छल। ओ जलसेना (नेभी)क अतिथि गृहमे ठहरल रहथि। मुदा ओहिठामक भोजनक व्यबस्थासँ ओ सन्तुष्ट नहि रहथि। हुनका हम सभ अपन अतिथि गृहमे समुद्री माछक नोत देलिअनि जाहिसँ ओ बहुत सन्तुष्ट तथा प्रसन्न भेलाह।

ओहिना घुमैत काल लोधी कालोनीमे हमर डेराक एकदम पाछूमे रहनिहार पड़ोसी भेटि गेलाह। यद्यपि मुहाँ-मुहीं हम सभ एक-दोसरकेँ जनैत रही। एकाध बेर कनीमनी गप्पो-सप्प भेल रहए, मुदा नीकसँ परिचय तँ पोर्ट ब्लेयरमे भेल। कतेक आश्चर्यक बात थिक जे सालो लगपास रहए-बला लोक तखन परिचित होइ छथि जखन ओ घरसँ हजारो कोस दूर सन्योगसँ भेटि जाइत छथि। अकस्मात नेभीक म्यूजियममे ओ देखेलाह। फेर कनी-मनी एक-दोसरकेँ देखि घुमि कए आगू बढ़ि गेलहुँ। मुदा जखन फेर दोसर ठाम भेटलाह तखन तँ ने हमरे रहल गेल आ ने हुनके। घर तँ लग-पास छलहे, लोदी गार्डेनमे सेहो नित्य ओ दुनू व्यक्ति देखाइत रहैत छलाह। मुदा परिचयक ई क्रम ओतहि धरि रहल। दिल्ली आपस अएलाक बाद फेर ढाकक तीन पात। असलमे दिल्लीक संस्कृति लोकपर हाबी भए जाइत अछि।

हमरा सभकेँ जोगारसँ एकटा स्थानीय चालक गाड़ी सहित भेटि

गेल छल। ओकरा ओहिठामक जानकारी रहए। तैँ ओकरा संगे रहलासँ मदति होइत छल। मुदा ओ छल पैसाक लोभी। मौका पबिते पाइ बँचा लैत। प्रात:काल हेवलाक टापू जेबाक हेतु ओकरा टिकट आनए देलिऐक। ओ आनिओ देलक मुदा पैसा बेसी लए लेलक। प्रात:काल जखन जल-जहाज पकड़ए गलहुँ तँ रहस्य खुजल। टिकटक दर ओहिठाम लिखल छल। टिकट आसनीसँ ओहिठाम स्वयं लए सकैत छलहुँ आ अतिरिक्त पैसा जे लागल से बँचि जाइत। मुदा ओहि आदमीपर भरोस कएल जकर दण्ड भेटल। ओना, एकाध बेर आओर ओ ठकबाक प्रयास केलक मुदा ताधरि हम सतर्क भए गेल रही।

पोर्ट ब्लेयरसँ दू किलोमीटरक दूरीपर अवस्थित रोज टापूकेँ पूबक पेरिस कहल जाइत अछि। अंग्रेज अपना जमानामे एहिठाम सुख-सुविधाक समस्त साधनक व्यबस्था केने छलाह। बेकरी, कल्ब, सुद्ध पानिक व्यबस्था, रहैक हेतु नीक-नीक घर, मन्दिर-मस्जिद, चर्च, खेलेबाक स्थान आदि-आदि ई सभ व्यबस्था कैदी सभहक श्रमक दुरुपयोग कए प्राप्त कएल गेल छल। एहिठाम करीब पाँच सए ब्रिटिश परिवार रहैत छल। आब ओहिठाम बनल भवन सभ ध्वस्त भए गेल अछि। कएटा ध्वस्त देबाल गाछक डारि सभहक मदति लेने ठाढ़ अछि। अंग्रेजक पलायनक बाद स्थानीय लोक सभ मकानसँ मुल्यवान वस्तु ,नीक-नीक लकड़ीक सामान सभ गाएब कए देलक। आब ई पूरा क्षेत्र भारतीय जल सेनाक अधीन अछि। एहिठाम दोकान-दौरी नहि अछि।

किछु समय धरि ई क्षेत्र जापानक अधीन छल। द्वितीय विश्व युद्धक दौरान प्रयुक्त जापानी बंकर अखनो देखल जा सकैत अछि।

पोर्ट ब्लेयरसँ ३९ किलोमीटर उत्तर-पूबमे ११३ वर्ग किलो मीटरक रकबामे अवस्थित हावलक टापू अपन प्राकृतिक सौन्दर्यक हेतु प्रसिद्ध अछि। पोर्ट ब्लेयरसँ एहिठाम आबक हेतु रोज सरकारी एवम् निजी जल जहाज उपलब्ध अछि। अण्डमान निकोबार प्रशासन पोर्ट ब्लेयरसँ हेलीकाप्टर सेहो उपलब्ध रहैत अछि। हावलक टापूपर रहबाक हेतु सर्वोत्तम स्थानमे सँ सरकारक पर्यटन विभाग द्वारा संचालित डालफिन रिजोर्ट अछि। एहिमे पूर्व आरक्षणक व्यबस्था पोर्ट ब्लेयरमे कएल जाइत अछि।

हावलक टापूक लगपास राधानगर, विजयनगर, एलीफेंट, कालापत्थर बीच प्रसिद्ध अछि। राधानगर बिच एशियाक सर्वोत्तम बीचमे सँ मानल जाइत अछि। स्कूबा डाइभींग एहिठामक प्रमुख गतिविधिमे सामिल अछि। एहि लेल प्रशिक्षित मार्गदर्शकक मदति लेबाक चाही आ प्रयास करबाक चाही जे एकटा संगी संगमे रहथि जाहिसँ जरूरी भेलापर एक-दोसरकेँ मदति कए सकी।

दोसर दिन भोरे हम सभ जहाज पकड़ि हावलाक लेल विदा भेलहुँ। लोक सभ अपन-अपन स्थान पर बैसि गेल रहथि। जहाज सीटी देलक आ विदा भेल। जहाजमे मनोरंजन हेतु टीवी लागल रहए। खेबा-पीबाक जोगार रहए। समुद्रमे प्लास्टिक नहि फेकबाक चेतौनी बारंबार देल जाइत रहए। किछु कालक बाद समुद्रक पानिक रंग बदलल बुझाएल। हैभलाक पहुँचलाह बाद हम सभ एकटा जिप केलहुँ जे दिन भरि हमरा सभहक संगे रहल आ सभठाम घुमौलक।

एकटा नाओ ठीक कए कए हम सभ राधानगर बीच विदा भेलहुँ। नाओमे हम दुनू गोटेक अलावा नाविक मात्र छल। डरो होइत छल। कएक बेर नाओ हिलकोरा दैक। राधानगर बीच पहुँचलापर

हमरा लोकनि थोड़े काल एमहर-ओहमर घुमलहुँ। एकटा गुजराती दंपति पहिनहिसँ ओतए रहथि। पति-पत्नीक बएसमे बहुतोक फर्क रहनि। पत्नी बाहरे प्रतीक्षा करैत छलखिन आ ओ स्वयं मार्गदर्शकक संग समुद्रमे गोंता लगबए गेल रहथि। हुनका देरी होइत देखि पत्नीकेँ दम फुलैत छलनि। आशंकामे परेसान रहथि जे कहीं किछु भए ने जानि। अन्ततोगत्वा, ओ पानिसँ निकललाह, तखन हुनकर पत्नीकेँ जान-मे-जान आएल।

राधनगर बीचक लगपास जंगल छल। किछु कालमे हम सभ ओही नाओसँ आपस हेवलक अएलहुँ आ जीपसँ विजयनगर बीच पहुँचलहुँ। रस्तामे बंगाली सभ बंगलामे गप्प-सप्प करैत देखाइत छलाह। बंगाली महिला सभकेँ काली पूजा करैत देखलिअनि। समुद्रक किनारा जतए कतहु होइक, दृश्य लगभग एक्के रंग रहैत अछि। विजयनगर बीचपर हमसभ थोड़ेक काल सुस्तेलहुँ। एमहर-ओमहर घुमलहुँ। समुद्रमे घुसि कए पानिक गछारसँ आनन्दित भेलहुँ। फेर आपस जीपसँ हैवलक पहुँचलहुँ। ओहिठाम लगपास कएटा चीज सभ देखलहुँ आ जल जहाजपर बैसि पोर्ट ब्लेयर विदा भए गेलहुँ।

रात्रि विश्रामक बाद प्रात:काल हम सभ पुनश्च जल जहाज पकड़बाक हेतु विदा भेलहुँ। घरेसँ जहाजक सीटी सुनाइ पड़ैत रहैत छल। जहाजो कएक तरहक छल। हम सभ निजी जल जहाजमे टिकट लेने रही जे अपेक्षाकृत कम समयमे यात्रा कए लैत छल, साफ-सुथरा छल आ किछु आधुनिक सुख-सुविधा सेहो रहए। सभसँ पहिने हम सभ रोज आइलैन्ड पहुँचलहुँ।

ओहिठामक खण्डहर सभ देखि मोनमे भाव अबैत छल जे समय ककरो नहि। सैकड़ो कैदी सभहक शोषण कए जबरन दिन-राति

श्रम करा कए ओहिठाम किसिम-किसिम केर सुविधा युक्त भवन, कार्यालय, क्लब हाउस, बेकरी, जल संशोधन आदिक व्यबस्था कए अंग्रेज सभ रहैत छल। मुदा आब की अछि? निर्दोष लोक सभहक चित्कारक दुर्दांत कथा, ओहि गाछ सभहक डारिपर कहुना कए अँटकल मकान सभहक भग्नावशेष...।

जल जहाजसँ निकलि कए तय समयमे आपस आएब अनिवार्य रहैत छल, अन्यथा जहाज दू बेर सीटी मारत आ चलि पड़त। एहि चिन्ताक कारण नियत समयसँ पूर्वे हम सभ जहाजपर आबि गेलहुँ। जहाज वाइपर आइलैंड दिस विदा भेल।

आइलैंड पहुँचि कनी दूर पएरे चलि कए ओ भयावह स्थान आएल जतए आजादीक दीवाना सभकेँ अंग्रेज फाँसी दए दैत छल। ओहिठाम विषधर सभहक कारा छल। जीबैत आदमी सभकेँ ओहि सुनसान स्थानपर छोड़ि देल जाइत छल। तकर अन्त सोचसँ परे छल। एहन क्रूर आक्रान्ता छल अंग्रेज।

स्वतंत्रता गमा कए कतेक कष्ट हमर पूर्वज उठओलाह आ ओकरा पुन: प्राप्त करबाक हेतु की की त्याग केलनि तकर हिसाब करब सम्भव नहि अछि। हजारो युवक असमयमे मारि देल गेल। जे जीबैत बाँचल तेकरा कालापानी पठा देल गेल, कतेकोकेँ रस्तेमे माने समुद्रेमे डुबा देल गेल..! आ किछु एहि अन्याय सभहक विरोधमे स्वयं अनशन करैत-करैत मरि गेलाह।

पोर्ट ब्लेयर गेनिहार पर्यटक एकटा उद्देश्य- ओहिठाम लगपासमे रहनिहार जनजातिकेँ देखब रहैत अछि। एहि हेतु स्थानीय प्रशासनक स्वीकृति पहिनहिसँ लेब जरूरी अछि। एहि टापूमे जरबाकेँ अलाबा Sintinolore orge, Great Andamanire, तीन आओर तरहक

जनजाति रहैत छथि जिनकर संख्या निरन्तर घटि रहल अछि। पर्यटक सभ सफारीपर जाइत छथि आ जरबाकेँ देखि आनन्दित भए जाइत छथि। ओ सभ अखनो सामान्य जीवन-यापनसँ बहुत दूर छथि। पर्यटक सभ भोजन सामग्री दए कए हुनकर सभहक चित्र लेबाक प्रयास करैत अछि।

कएक बेर आओर-आओर तरहक उपराग सेहो सुनबामे अबैत अछि। स्थानीय लोक द्वारा जरबा महिलाक शोषणक मामला सभ सेहो सुनबामे अबैत अछि। स्थानीय प्रशासन एहि तरहक घटना सभकेँ गंभीरतासँ लेलक अछि। पर्यटक सभहक हेतु अलग रस्ता बनाबक प्रयास भए रहल अछि जाहिसँ जरबा लोकनिक जंगलक बासा अधिक सुरक्षित रहि सकए।

सेलुलर जेलक सीढ़ी लग ओहि जेलमे समय बितओनिहार सैकड़ो लोकक नाम अंकित अछि। ओहिमे अधिकांश वंगाली सभहक नाम लगैत छल। एकाधटा नाम अपनो सभहक ओहिठामक बुझाएल। भावनाक चरमोत्कर्ष वी सावरमरक कक्ष लग जा कए होइत अछि। अंग्रेज सरकारक तमाम प्रयासक बाबजूद ओ चट्टान जकाँ अपन विचारपर अडिग रहलाह। भारतक एहि महान सपूतकेँ शत्-शत् प्रणाम।

साँझमे लाइट एवम् साउण्ड कार्यक्रममे स्वतंत्रता संनानी सभहक त्याग आ आत्म बलिदानक गाथा कहैत कार्यक्रम देखि-देखि कोन देशभक्त रोमांचित नहि होएत। रहि-रहि कए मोन होइत छल जे भारतीय स्वतंत्रता संग्रामक हुतात्मा सभकेँ क्रूरता पूर्वक जान लेनिहार अंग्रेज सभहक नरेठी दाबि दी।

कएक बेर आँखिसँ नोर बहैत रहल। जखन प्रकाश किरण

फाँसी घरपर पड़ैत छल तँ पश्चाताप ओ पीड़ासँ मोन भरि जाइत छल। की हम सभ अपन पूर्वजक बलिदानकेँ व्यर्थ जाए देब? की हम सभ एतेक कठिनतासँ प्राप्त स्वतंत्रताक रक्षा कए सकब? लतामगेंशकरक एवम् प्रदीपक गाओल गीत- 'ऐ मेरे वतन के लोगों, तुम खूब लगा लो नारा...' गबैत-गबैत २४ तारिखक भोरे हम-सभ पोर्ट ब्लेयर हवाई अड्डापर चेन्नईक जहाजपर चढ़ि गेल रही, एहि संकल्पक संग राष्ट्र प्रेमक एहि अमर दीपक निरन्तर प्रज्जवलित राखबाक हेतु सदति प्रयत्नशील रहबे ओहि हुतात्मा सभहक प्रति सही श्रद्धांजलि होएत।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलनक पृष्ठभूमिपर अचल ठाढ़ अण्डमान निकोबार आइलैंड माने कालापानी भारतीय जनमानसकेँ युग-युग धरि झंकृत करैत रहत। भारतीय स्वतंत्र्य संग्रामक दौरान हजारो पुरुष-महिलाक बलिदान व्यर्थ नहि जाए, ओकर स्मरण बनल रहए आ ओहिसँ प्रेरणा लैत अपन देशक गौरव-गरिमामे हम सभ योगदान करैत रही,ताहि लेल जरूरी अछि जे समय-समयपर सम्पूर्ण देशक लोक स्वतंत्रताक एहि पवित्र तीर्थक दर्शन करथि।

◌

परसुरामक फरसा

दिल्लीसँ ९ बजे रातिमे हम सभ वायुयानसँ त्रिवेन्द्रम हवाई अड्डापर उतरलहुँ। एहि यात्रामे लगभग तीन घन्टा समय लागल। बेस पैघ जहाज रहए जाहिमे तीन सएसँ बेसी यात्री एकसंग सवार रहथि। बीचमे कोच्चीमे सेहो जहाज उतरल छल। बहुत रास यात्री ओहू ठाम उतरलाह, मुदा बहुत गोटे चढ़बो केलाह, थोड़बे कालक यात्राक पछाइत जहाज त्रिवेन्द्रम पहुँचि गेल। त्रिवेन्द्रम हवाई अड्डापर उतरैत

जहाज समुद्रक ऊपर जे भ्रमण करैत रहल, ओ दृश्य बहुत विहंगम छल..!

त्रिवेन्द्रम हवाई अड्डापर उतरलापर देखलहुँ जे ओहि जहाजसँ कएटा वीआइपी सेहो उतरलथि। हुनका लोकनिक स्वागतक नाराक बीच हम सभ अपन गन्तव्य स्थानपर अर्थात् केरल सरकारक अतिथि गृह विदा भए गेलहुँ।

केरल भारतक एकटा प्रान्त अछि। एकर राजधानी तिरुवनन्तपुरम अर्थात् त्रिवेन्द्रम अछि। मलयालम एकर मुख्य भाखा थिक। हिन्दू, मुसलमानक अलाबा ईसाइ सेहो बहुत गोटे एतए रहैत छथि। अपन सांस्कृतिक ओ भाखा वैशिष्ट्यक कारण दक्षिणक चारि राज्यमे एकर फराक पहिचान अछि।

पौराणिक कथाक अनुसार परशुराम अपन फरसा समुद्रमे फेकि देलाह, जाहिसँ ओही अकारक भूमि समुद्रसँ बाहर निकलि गेल ओ केरलक प्रादुर्भाव भेल। इहो कहल जाइत अछि जे ‘चेट स्थल: कीचड़ ओ अलम प्रदेश’ शब्दक योगसँ ‘चेरलम’ शब्द बनल जे बादमे ‘केरल’ बनि गेल। बहुत दिन धरि ई भू-भाग चेरा राजाक अधीन छल, ओहू कारणसँ एकरा चेरलम आ बादमे केरलम नाम पड़ल।

केरलक प्राकृतिक सौन्दर्य विलक्षण अछि। तैँ एकरा ईश्वरक अपन घर सेहो कहल जाइत अछि। समशीतोष्ण मौसम प्रचूर बरखा, प्राकृतिक सौन्दर्य, सघन वन, समुद्र घट ओ चालीससँ अधिक नदी, सभ मिलि एकरा सरिपहुँ पृथ्वीपर स्वर्गक रूप देने अछि।

केरल भारतक दक्षिणी छोरपर अरब सागर ओ पच्छिमी घाटीक ५००-२७०० मीटर ऊँचाइपर अवस्थित अछि। केरलकेँ तीन भागमे विभाजित कएल गेल अछि- तटीय निचला इलाका, उपजाउ

मिडलैण्ड आ हाइलैण्ड्स। केरलक निचला भागमे अन्तहीन वैकवाटर ओ चौआलिसटा नदी अछि। मिडलैण्ड्स काजू, नारियल, अखरोट, केरा, चाउर, अदरक, कारी मिर्च, कुसिआरक संग-संग आओर बहुत रास वनस्पतिक हेतु प्रसिद्ध अछि। जंगली हाइलैण्ड्स चाय, कॉफी, रबर, मसाला सभहक बगान ओ वन्यजीव सभहक लेल प्रसिद्ध अछि।

केरलक शान्त समुद्र तट, नाना प्रकारक वन्यजीव, आकर्षक वैकवाटर, एवम् आनन्ददायक वैकवाटर सभ जगत प्रसिद्ध अछि। सड़क मार्गसँ यात्रा केलापर केरलक मनोरम प्राकृतिक छटाक बेसी आनन्द लेल जा सकैत अछि।

दक्षिणी केरल अलेप्पीक वैकवाटरसँ तमिलनाडूसँ सटल दक्षिनी सीमाक तटीय क्षेत्र सामिल अछि। केरलक राजधानी त्रिवेन्द्रम, कोवलम ओ वरकला समुद्रीय तट एवम् प्रतिष्ठित वैकवाटर एहि क्षेत्रमे पड़ैत अछि।

१९८० ईस्वीसँ पूर्व केरलमे बहुत कम पर्यटक अबैत छल। ओकर बाद स्थानीय सरकार लोकक भागीदारीसँ जबरदस्त प्रचार-प्रसार केलक जाहिसँ पर्यटक लोकनिक आवागमन बढ़ल। बहुत रास पर्यटक स्थल सभहक व्यबस्था छोट-मोट कारोबारी सभहक हाथमे देल गेल जेना कि केरलक प्रसिद्ध वैकवाटर सभमे ९० प्रतिशत भागीदारी छोट-मोट कोरोबारी सभहक अछि। पहाड़सँ लए कए समुद्र तट धरि पर्यटकक आराम ओ सुविधाक निरन्तर चेष्टा कएल गेल। परिणामत: केरलमे पर्यटकक आकर्षण बढ़िते गेल।

केरलक राजधानी त्रिवेन्द्रम हम कएक बेर गेल छी। त्रिवेन्द्रममे कम खर्चमे सुरूचि पूर्ण ओ स्वादिष्ट भोजन उपलब्ध अछि। राज्य पर्यटन निगमक अतिथि गृहमे भोजन, जलखै आ चाह-पानक सुविधा

तँ अछिए, लग-पासक कतेको ठाम इडली, बारा,कॉफी ओ चाह उपलब्ध रहैत अछि। भाखाक समस्या ओतेक जटिल नहि जतेक की तामिलनाडूमे। अधिकांश लोक हिन्दी बुझैत अछि।

हमर रहबाक व्यबस्था केरल सरकारक अतिथि गृहमे छल जकर जतेक प्रशंसा कएल जाए से कम होएत। सभ सुविधासँ परिपूर्ण अतिथि गृहक शुल्क सेहो कमे अछि। कैटा पैघ राजनेता सभ ओहिठाम अबैत-जाइत रहैत छथि, तँए कएक बेर ओतए स्थल भेटब आसान नहि रहैत अछि।

यात्राक क्रममे हम ओहिठामक प्रसिद्ध पद्मनाभ मन्दिर पहुँचलहुँ। पद्मनाभ मन्दिर दुनिआक कोनो धर्मक कोनो मन्दिरसँ धनिक अछि। बेसुमार सोना, चानी, जवाहरात ओहिठाम सैंकड़ो सालसँ राखल अछि। कहल जाइत अछि जे ओहि सम्पतिमे अधिकांश ओहिठामक राजा सभहक योगदान छनि जे अपनाकेँ पद्मनाभ भगवानक दास बुझैत छलाह। दोसर बात सुनबामे आएल जे स्थानीय राजा आक्रमणमे लूट-पाटसँ बँचेबाक हेतु अपन समस्त मूल्यवान वस्तु मन्दिरक तहखानामे रखबा देलखिन। जे जेना भेल होइ मुदा ओहि मन्दिरमे अकूत सम्पति भरल अछि, जे राखल-राखल व्यर्थ भेल अछि। लोककेँ तँ तखन बुझबामे अएलैक जखन उच्चतम न्यायालयक आदेशपर पाँचटा तहखाना खोलल गेल ओ ओहिमे राखल गेल अमूल्य वस्तु सभहक गणना होमए लागल। जतेक वस्तु हिसाव-किताव भेल तकरे मूल्य लाखो कड़ोरमे भए जेबाक अनुमान अछि। छठम तहखाना धार्मिक किम्वदंतीक कारण नहि खोलल गेल। कहबी अछि जे ओकरा जे खोलत से जीवित नहि रहत। हम जखन ओहि मन्दिरमे गेल रही तँ उपरोक्त समाचार सभ आबि गेल रहैक

मुदा कतहु किछु बाहरसँ सुनबामे नहि आएल, किछु नहि देखाएल।

पद्मनाभ मन्दिरमे पहुँचलाक बाद सभसँ पहिने सर्ट-पैन्ट निकालि कए धोती पहिरए पड़ल। धोती ओहीठाम मन्दिर प्रबन्धक द्वारा उपलब्ध कराओल जाइत अछि। तकर बाद पक्तिवद्ध भए दर्शन होइत अछि। चूँकि हमरा जोगार छल, अस्तु, तत्काल दर्शन करबाक मौका भेटल। सभसँ आगू एकदम गर्भ गृहमे जा कए पद्मनाभ भगवानक दर्शनक सौभाग्य हमरा भेटल।

संयोगसँ भारत सरकारक सेवा निवृत्त सचिव सेहो दर्शन करए गेल छेली। हम हुनका संगे काज केने रही। चूँकि ओ पाछाँ रहथि, तैँ हम हुनका नहि देखि सकलिअनि। ओहो केरल सरकारक अतिथि गृहमे ठहरल रहथि। ओहिठाम स्वागत कक्षमे हुनकासँ भेँट भेल। ओ कहलीह जे पद्मनाभ मन्दिरमे हमरा देखने छली। त्रिवेन्द्रम यात्राक सन्दर्भमे गप्प-सप्पक बाद हम सभ अपन-अपन कक्षमे चलि गेलहुँ।

पद्मनाभ मन्दिरमे विष्णु भगवान आनन्द सयनम मुद्रामे आदि शेष नागपर पड़ल छथि। ओ ओहिठामक राजवंशक कुल देवता मानल जाइत छथि। ३ जनवरी १७५०क त्रावणकोरक महाराजा महाराज श्री अनीझुम थिरूनाल त्रावणकोर राज्यकेँ भगवान पद्मनाभ स्वामीकेँ समर्पित कए स्वयंकेँ हुनकर दासक रूपमे घोषित कए देलाह। तकर बादे ओ स्वयं ओ हुनकर उत्तराधिकारी श्री पद्मनाभ दासक उपाधि ग्रहण कए लेलथि। एहि प्रकारेण त्रावणकोर सम्पूर्ण राज्य भगवान पद्मनाभ स्वामीक समर्पित भए गेल। श्री पद्मनाभ दासक उपाधि प्राप्त करबाक हेतु राजकुलक नवजात शिशुकेँ प्रथम जन्म दिवसपर श्री पद्मनाभ मन्दिरक मोटक्काल मण्डपम पर राखि कए जलाभिषेक कएल जाइत अछि। तकर बादे ओ श्री पद्मनाभ दासक

उपाधि रखबाक पात्र मानल जाइत छथि।

त्रावणकोरक अन्तिम महाराजा मार्तण्ड वर्माक जन्म २२ मार्च १९२२ कैं भेलनि। हुनकर पिताक नाम रवि वर्मा ओ माता संथु पारवथी वयी (कनिष्ठ महारानी) छलनि। ९१ वर्षक बएसमे १६ दिसम्बर २०१३ कैं हुनकर मृत्यु भए गेल। हुनकर मृत्युक बाद ओहि राजवंशक प्रतीकात्मक उपस्थिति समाप्त भए गेल। सन् १९७१क संविधान संशोधनक बाद राजा/महाराजा सभहक उपाधि समाप्त भए गेल। तैं त्रावणकोरक कानूनी शासक तँ केरल सरकार भए गेल आ महाराजाकैं मन्दिरक देख-भालक कानूनी अधिकारपर प्रश्नचिन्ह लागि गेल। केरल उच्च न्यायालय एहि विवादमे अही तरहक व्यबस्था देलक।

महाराजा मार्तण्ड वर्मा सन् १९४७ मे स्वतंत्रताक समयमे त्रावणकोरक भारतमे विलयक अन्तिम गवाह छलाह। कहल जाइत अछि जे त्रावणकोरक राज परिवार ओकरा स्वतंत्र राष्ट्र रखबाक पूरजोर प्रयास केलक, जे अन्ततोगत्वा सफल नहि भेल आ त्रावणकोर भारतक हिस्सा बनि गेल।

स्वतंत्राक बाद बदलल महौलमे राज परिवारक अनेको सदस्य राज्यसँ बाहर जाए सामान्य नागरिक जकाँ जीवन-यापन करए लगलाह। महाराजा मार्तण्ड वर्मा सेहो सपरिवार बंगलोर चलि गेलाह। सन् १९९१मे महाराजा चिथिर लरुनलक मृत्युक समय जनतामे जवरदस्त सहानुभूति देखल गेल। तकर बादे मार्तण्ड वर्माकैं लोक महाराजा कहए लागल।

पद्मनाभ मन्दिरक सामने बनल राज महलक शिखरपर घड़ी मेघान मणिक नामसँ जानल जाइत अछि। ई करीब सए साल पुरान

अछि। ई प्राचीन समयक अभियांत्रिक चमत्कारक नमूना अछि। घड़ीक आकर्षण ओहिमे राक्षसक मुखैटाक संगे-संग दुनू कात विद्यमान बकरा अछि। जहाँ घन्टा पुरैत अछि, राक्षस अपन मुँह खोलैत अछि। आ दुनू बकरा ओकर गालपर चाटी मारैत अछि, जाहिसँ घण्टाक जोरदार स्वर निकलैत अछि आ राक्षस अपन मुँह बन्द कए लैत अछि। जतेक बाजल रहैत अछि ततेक बेर ओ क्रिया दोहराइत अछि। कहक माने जँ चारि बजतै तँ चारि चमेटा ओहिमे राक्षसकेँ दुनू बकरा मारतै आ चारि बेर घण्टाक अबाज सुनएमे आओत। अछि ने चमतकारी यन्त्र? मुदा आब ओ घड़ी कतेको सालसँ खराप पड़ल अछि।

पद्मनाभ स्वामी मन्दिरक सामने कुथीरमलिका पैलेश संग्रहालय अछि। एहि महलक निर्माता त्रावणकोरक महाराजा स्वाथी थीरुनल बलराम वर्मा छलाह। ओ महान कवि, समाज सुधारक, गायक एवम् राजनेता छलाह। एहि संग्रहालयमे नाना प्रकारक अमूल्य चित्र सभ राखल अछि। एहि संग्रहालयकेँ सोम दिन छोड़ि कए कोनो दिन प्रात: साढ़े आठ बजेसँ एक बजे आ तीन बजेसँ साढ़े पाँच बजेक बीचमे देखल जा सकैत अछि। प्रति वर्ष ४ सँ १३ जनवरीक बीचमे ओहिठाम महाराजा स्वाथी थीरुलक स्मृतिमे संगीत उत्सव मनाओल जाइत अछि।

महलसँ मन्दिर जएबाक गुप्त मार्ग अछि जाहि बाटे महाराजा नित्य पद्मनाभ मन्दिरमे पूजा अर्चना करैत छलाह। अखनो भोरक एक घन्टा समय भगवानक पूजाक हेतु महाराजाक हेतु आरक्षित अछि। महाराजा पूजा कए लैत अछि तखने आम जनताकेँ मन्दिरमे प्रवेशक अनुमति भेटैत अछि।

राजमहलमे किसिम-किसिम केर वस्तु सभ (जे महाराजाकेँ भेँटमे देल जाइत छल) राखल अछि। महलक अधिकांश हिस्सा बन्द पड़ल अछि। कहल जाइत अछि जे एहि महलक निर्माणक थोड़बे दिनक बाद महाराजाक मृत्यु भए गेल। तैँ एकरा अशुभ बुझि महलकेँ छोड़ि राज परिवार आन ठाम रहए लागल।

सायं काल हमरा लोकनि त्रिवेन्द्रमक कोवलम समुद्र तटपर गेलहुँ। दूर-दूर धरि देखाइत स्वच्छ जल, दीर्घ समुद्र तट ओ दूरगामी क्षितिजक विलक्षण दृश्य उत्पन्न करैत अछि। समुद्र तटपर प्रकाश स्तम्भ दूरेसँ देखल जा सकैत अछि। सूर्यास्तक छटा ओ आकाशक मनमोहक रंग समुद्रतट प्रेमीकेँ सभहक आनन्दकेँ पराकाष्ठा (Climex) पर पहुँचा दैत अछि। कतेको व्यक्ति समुद्रतट पर साइकिल चलेबाक आनन्द लैत देखबामे अएला।

प्रात भेने हमरा लोकनि वर्कला समुद्र तटपर गेलहुँ। ओहिठाम सँ अरब सागरक विलक्षण दृश्य देखलहुँ। ओही क्रममे त्रिवेद्रमक दछिनबरिया भागमे अवस्थित पूवार नामक गाम सेहो देखए गेलहुँ। ओहिठाम वैकवाटर ओ टापूक संगम स्थल हेबाक कारण पर्यटककेँ विलक्षण आनन्दक अवसर प्रदान करैत अछि।

त्रिवेन्द्रमसँ कन्याकुमारी रोडसँ जेबाक रस्तामे पद्मनाभ पैलेश दर्शनीय थिक। ई वस्तुत: आजुक तामिलनाडूमे पड़ैत अछि, मुदा एहि महलक व्यबस्था एवम् शासन केरल सरकारक अधीन अछि।

पद्मनाभपुरम पैलेश १६ मी शताब्दीक शानदार लकड़ीक महल थिक। १५५० सँ ई १७५० धरि रहल त्रावणकोरक राजा लोकनिक ई महल छल। ई वस्तु कलाक केरलक स्वदेशी शैलीक उत्कृष्ट नमूना अछि। प्राचीन आंतरिक अंदरुनी रोझवेड नक्काशी ओ मुर्तिकला

सजाबटसँ भरल अछि। महलमे १७म ओ १८म शदीक भित्ति चित्र सामिल अछि। महोगनीमे संगीत धनुष, रंगीन अभ्रकक संग खिड़की, चीनी नक्काशीक संग शाही कुर्सी, अद्भुत आकर्षण उत्पन्न करैत अछि। राजमाताक महलमे ९० अलग-अलग प्रकारक पुष्प डिजाइनक संग लकड़ी ओ सौगानक नक्काशीदार चार आकर्षणक केन्द्र अछि।

पर्यटककेँ पद्मनाभ पैलेश देखि कए आनन्द तँ होइते छनि जे तत्कालिन राज घरानाक वैभवक पराकाष्ठाक सद्य: प्रमाण सेहो देखबामे अबैत अछि। महलक विभिन्न भागमे घुमैत-घुमैत हम सभ थाकि गेलहुँ। बाहर आबि कए थोड़ेकाल धरि छाहरिमे सुस्तेलहुँ आ तकर पछाइत कन्याकुमारी दिस विदा भेलहुँ।

◌

राँची चारि दसक बाद

अगस्त १९७३ इस्वीमे दूरभाष निरीक्षक पदक प्रशिक्षण कार्यक्रमक हेतु हम पहिल बेर राँची गेल रही। ओहि समय डॉ. सुभद्र झाक संगे योगदा सतसंग मठमे हम एक मास रही। सुभद्रबाबू योगदा महाविद्यालयक प्राचार्य रहथि। प्राचार्यक निवासमे ओ एकटा नोकरक संग असगरे रहथि। तीनटा कोठरी, भानसक घर, स्नान गृह आदि सुविधाक सहित आवासीय दृष्टिसँ उत्तम स्थान छल। चारुकात आमक गाछ सभ छल। गाछक लग-पासमे कुटी जकाँ कक्षा सभ चलैत छल। अन्दरमे योगदा सतसंग मठ छल। ओहि आश्रमक सात्विक वातावरण अत्यन्त मनोरम छल आ हमरा ओहिठाम मोन लागि गेल।

पहिल बेर राँची गेल रही तहिआ हमर बएस २१ वर्ष छल। जीवनक अनुभव नहि छल। विद्यार्थी रही। तकर बाद नोकरी भेटि

गेल रहए। नोकरी करबाक इच्छा नहि रहए। आगू पढ़ाइ करए चाहैत रही। परन्तु परिवारमे सभहक विचार भेलैक जे नोकरी पकड़ि लेबाक चाही, किएक तँ नोकरी जल्दी नहि भेटैत अछि। पहिल नोकरीकेँ नहि छोड़क चाही, आएल लक्ष्मीकेँ लात नहि मारी इत्यादि...। ओहुना ओहि साल एम.एस-सी.क नामांकन भए गेल रहए। हमर सभहक परीक्षाकाल बिलम्बसँ आएल रहए। तैँ ई निर्णय भेल जे हम नोकरी पकड़ि ली। बससँ राँची पहुँचल रही। रस्तामे पहाड़ीक बीचमे खतरनाक रस्ता छल। चालकक ऊपर सभहक जीवन निर्भर छल। तैँ ओ अपना लगक सीटपर एहने लोककेँ बैसबैत छल जे राति भरि जागि सकथि। औंघाइत व्यक्तिकेँ लगमे बैसलासँ चालकोकेँ औंघी लागि सकैत छल, अस्तु, ई प्रयास कएल जाइत छल।

राँची पहुँचते बाबूजीक पत्रक संग सुभद्र बाबूक डेरापर पहुँचलहुँ। ओ पत्र पढ़लाह आ हमरा अपन सामान सभ रखबाक हेतु कहलनि। सुभद्रबाबूकेँ एकाध बेर पहिनहुँ देखने रहिअनि, मुदा गप्प-सप्प नहि रहए। राँची हुनक डेरापर सामान सहित बिना पूर्व सूचनाक हम पहुँचि गेल रही। ताहि हिसाबे ओ बहुत सहयोग केलाह। डेरामे ओ असगर रहैत छलाह, एकटा नोकर रहनि जे घरक सभटा काज करैत छल। भानस ओ स्वयं करैत छलाह, एक्के साँझ। रातिमे खेबाक व्यबस्था सेहो भोरुके भानसक संग कए लैत छलाह। चूँकि ओ अपने दिन भरि व्यस्त रहैत छलाह, तैँ हुनकासँ भेँट-घाँट सामान्यत: साँझेमे होइत छल। रातिमे सुतबासँ पूर्व ओ स्वाध्याय करैत छलाह। हमरा राति -बिराति पढ़ैत देखि ओ बहुत प्रसन्न होइत छलाह। कखनो काल हम नोकरीसँ त्यागपत्रक गप्प करी तँ ओ कहथि –“ बापसँ पुछि कए किछु करियह। नहि तँ ओ कहता जे मनो नहि केलखिन”। ओहि डेरापर हम करीब एक मास रहलहुँ। मोन लागि गेल रहए। कएटा

मैथिल सभसँ ओहिठाम भेँट-घाँट होइत रहैत छल। मुदा ओहिठाम कतेक दिन रहितहुँ? अपन व्यबस्था तँ करबाके छल। तैँ डेरा तकैमे लागि गेलहुँ।

योगदा सत्संगमे दयामाताक आगमन भेल छल। हम डाक्टर साहेबक संगे दर्शनक हेतु गेल रही। गौर वर्ण एवम् अति तेजस्वी दयामाताक दुलर्भ दर्शन होइते मोन आनन्दित भए गेल। ओ कोनो प्रवचन नहि देलीह। किछु काल सभ गोट ध्यान केलक आ सभा समाप्त भए गेल।

गप्प-सप्पक क्रममे सुभद्रबाबू एक दिन कहला जे ओ सिड़डीक साई बाबासँ बहुत प्रभावित भेल रहथि। हुनकर आश्रममे सुभद्रबाबू गेल रहथि। कहला जे हुनका मोनक बात सभ ओ अपने बाजए लागल रहथि। कएक तरहक चमत्कार सेहो ओ देखलाह। चूँकि हुनकर डेरा छोट छल, आ परिवारक अन्य सदस्य लोकनि सभ आबि गेल रहथिन, अस्तु, हम अपन डेरा ताकि लेलहुँ आ करीब एक मास रहलाह पछाइत ओतए -सँ प्रस्थान केलहुँ।

पहिरन-ओढ़नमे सुभद्रबाबू चुस्त-दुरुस्त ओ आधुनिक वस्त्रक पक्षधर रहथि। हमरा एहि बातक हेतु ओ कएक बेर टोकथि। कहथि जे ओ एकठाम साक्षात्कारमे भेष-भूषाक कारण छाँटि देल गेलाह।

राँचीक संस्कृत कौलेजक पास हमर नव डेरा छल। एकटा कोठरी छल, जकर किराया २० रूपैआ मासिक छल। भोजन स्वयं बनाबी। पानि इनारसँ निकालए पड़ए। बहुत गहींर इनार छल जाहिसँ पानि निकालबाक हेतु यथेष्ट प्रयास करए पड़ैत छल। बगलमे एकटा पैघ कोठरीमे चारिटा हमर सहकर्मी सभ मिलि कए रहैत छलाह। ओहो सभ अपन भोजन स्वयं बनाबथि। ओहिठाम सँ एच.इ.सी. आसानीसँ

देखाइ छल। ओहि छोटसन कोठरीमे हम पाँच मास धरि रहलहुँ। टेलीफोन एक्सचेंजमे प्रशिक्षण कार्यक्रम छल। प्रशिक्षणक वातावरण स्कूले जकाँ छल। ज्यादातर किताबी विषय पढ़ाओल जाइत छल।

रबि दिनक छुट्टी रहैत छल। ओहि समयक उपयोग हम सभ लगपासक वस्तुसभ देखबामे करी। कहिओ काल बी.आइ.टी. मिसरा जाइ। ओहिठाम हमर स्कूलिया संगी इन्जिनियरिंगक पढ़ाइ कए रहल छलाह। छात्रावासमे रहबाक आ खेबाक-पिबाक उत्तम व्यबस्था छल। चारूकात जंगलनुमा वातावरणमे रचल-बसल ओहि कौलेज परिसर अत्यन्त सुखदायी छल। सभसँ आनन्द होइत छल अपन स्कूलिया संगीसँ भेँट केलापर। हम सभ एक्के संग मैट्रिक केने रही। प्री-यूनिभरसिटीमे आर.के. कौलेज मधुबनीमे संगे रही। तकर बाद हम सी.एम. कौलेज- दरभंगामे नाम लिखेलहुँ आ ओ बी.आइ.टी. मिसरामे। उत्तम परीक्षा परिणामक बाबजूद हम इन्जिनियरिंगमे नाम नहि लिखा सकलहुँ। यद्यपि मोतीलाल नेहरू इन्जिनियरिंग कौलेजमे हमर नामांकन निश्चित भए जाइत, कारण ओहि समय नामांकन डिग्रीवन साईसक प्राप्तांकक आधारपर होइत छल, आ हमरासँ बहुत कम प्राप्तांक बला सभहक नामांकन भए गेल रहए। मुदा आब एहि विषयपर सोचब व्यर्थ। परिश्रम करवनो व्यर्थ नहि जाइत अछि। ओही प्राप्तांकक आधारपर हमरा दूरभाष निरीक्षकक नोकरी भेल जकर प्रशिक्षणक क्रममे हम राँचीमे रही।

प्रशिक्षणक दौरान एक दिन घटल दुर्घटना अखनो धरि मोन अछि। हमर सभहक बगलबला कोठरीमे टेलीफोन ऑपरेटरक प्रशिक्षण चलैत छल। ओहिमे एकटा प्रशिक्षु राजस्थानक छलाह। जाड़क मास छल। रातिमे अपन डेरामे अंगेठी जरा कए सुति गेल

रहथि। प्रात भेने ओ जखन नहि उठला तँ लग-पासक लोक सभ कोठरी खोललक तँ ओ मृत छलाह। अंगेठीसँ निकलल कार्वन मोनोक्साइड हुनकर मृत्युक कारण भेल। गामसँ हुनकर पिता ई समाचार सुनि आएल रहथि आ एक्सचेंजक एक कोनमे राखल युवा पुत्रक लहास देखि ठोह पाड़ि कए कनैत रहथि। एहि प्रकारेण जीवन-यापनक जिज्ञासामे निकलल एकटा युवकक असामयिक , दुखद अन्त भए गेल।

नित्य प्रति चारूकात एहन कतेको घटना घटित होइत रहैत अछि जे देखि-सुनि मोनमे चिन्ता होएब स्वभाविक। जीवन यात्रामे एहि तरहक घटना झकझोरि कए राखि दैत अछि, तथापि जीवनमे विश्वास एवम् नियतिक अकाट्यता मानि आगू बढ़बे जीवन थिक। नीक काज करैत आगू चलैत चली, आगूक रस्ता अपने बनि जाइत अछि।

एक दिन घुमैत-फिरैत हम सभ राँचीक काँके स्थित पागलखाना देखए गेलहुँ। ओहिठामक दृश्य भयावह छल। माथक गड़बड़ीसँ मनुक्खक दुर्दशाक वर्णन असम्भव छल। किसिम-किसिमक इसारा करैत, बड़बड़ाइत अपनेमे तल्लीन, सुखाएल, जीविते मरि गेल लोक सभहक दृश्य देखि हृदय करुणासँ भरि आएल छल। कतेको विक्षिप्त लोक सभ ठीक भए गेल छल, मुदा हुनक परिजन कोनो खोज-पुछारि नहि कए रहल छल। ठीक-ठाक लोक सभ पागलखानामे पड़ल छल। लगपास विक्षिप्त लोकक समुहकेँ देखैत-सुनैत ककरो माथा भसकियो सकैत छल।

ओहिठामसँ जाइत काल मोनमे मानसिक स्वास्थ्यक महत्व बुझाइत छल। व्यर्थ चिन्ता कए, किंवा परिस्थितिसँ सामंजस्यक

आभावमे कतेको लोक विक्षिप्त भए जाइत छथि। शरीर व्यर्थ भए जाइत अछि। उचित देख-भालक अभावमे स्वस्थो लोक क्रमश: रुग्ण भए जाइत अछि। कएक गोटा असमयमे मानसिक चिकित्सालयेमे मरि जाइत अछि। मोनपर बेसी भार दए अपन दुर्गति कराएबसँ बँचब कतेक जरूरी अछि, से ओहिठाम जा कए बुझाइत छल। ओना, लग-पासक मनोरम पहाड़ी दृश्य मोनकेँ सुखद अनुभव दैत छल, मुदा ओहिठामक मानसिक बिमारीसँ ग्रस्त लोक सभहक दुर्दशा देखि मोन खिन्न भए गेल छल। तैँ जल्दिये हम सभ अपन डेरा आपस आबि गेल रही।

टैगोर हिल राँचीक प्रसिद्ध स्थान अछि। एकर अपन ऐतिहासिक महत्व अछि। रबीन्द्रनाथ टैगोरकेँ के नहि जनैत अछि। हुनक कविता संग्रह 'गीतांजलि'क हेतु हुनका साहित्यक नोवेल पुरस्कार भेटल छल। मुदा ई बात कमे लोक जनैत अछि जे कवि, गायक एवम् चित्रकारक रूपमे रबीन्द्रनाथक व्यक्तित्वक निर्माणमे हुनकर अग्रज ज्योतिन्द्रनाथ टैगोरक बहुत योगदान अछि। ज्योतिन्द्रनाथ शान्ति ओ ध्यानक हेतु 'मोहरावादी हिल' राँचीक चुनाव केलाह जे आब 'टैगोर हिल'क नामसँ जानल जाइत अछि।

१९१० इस्वीसँ १९२५ इस्वी धरि असगरे रहि कए ओ शान्ति धामक स्थापना केलाह। ओहि समयमे राँची एकटा छोट-छीन गाम छल। ज्योतिन्द्रनाथ अपन जापानी रिक्सासँ सायंकाल सभ दिन राँची घुमैत छलाह। ब्रिटिश भारतक प्रथम आइ.ए.एस. सत्येन्द्रनाथ टैगोर पहाड़क जड़िमे छोट-छीन घरो बनओने रहथि जे सत्य धामक नामसँ जानल जाइत छल। वर्तमानमे एहि स्थानक देखभाल राज्य पर्यटन निगम द्वारा कएल जाइत अछि।

४३ बर्खक बाद भातिजक विआहक बरियातीमे सामिल हेबाक हेतु सपरिवार दिल्लीसँ राँची वायुयान द्वारा पहुँचलहुँ। २३ फरबरी २०१७ केँ ७:३५ बजे प्रात:काल वायुयानक उड़ानक समय छल। तीन बजे भोरेसँ तैयारी प्रारम्भ कएल। प्रात:कालीन दिनचर्या समाप्त कए पौने पाँच बजे भोरे हवाई अड्डा हेतु प्रस्थान कएल। साढ़े पाँच बजे हवाई अड्डापर पहुँचि सुरक्षात्मक जाँच-पड़ताल ओ सामानक ठेकान लागि गेलाक बादो हमरा लोकनिकेँ १ घन्टा समय छल। तकर उपयोग चाह-पीबएमे कएल गेल। हवाई अड्डापर सभ वस्तुक दाम अतत्तह रहैत अछि। तैओ भोरक चाहक प्रयोजन छल। घरसँ भोरे विदा भए गेल रही। तैं जे दाम लेलक से दए कए दूटा चाह कीनि दुनू व्यक्ति चाह पीबैत गप्प-सप्प करैत समय कटलहुँ।

राँचीमे वायुयान नियत समय ९ बजे भोरे उतरि गेल। हम सभ कनिको थाकल नहि रही। सामान निकालएमे थोड़ेक समय लागल आ बाहर होइते हमर अनुज हमरा लोकनिक स्वागत हेतु मुस्तैद छलाह। हुनका संगे लाल गाड़ीपर बैसि १५ मिनटमे हुनकर पटेल चौक, हरमू हॉउसिंग कालोनी स्थित आवासपर पहुँचि गेलहुँ।

ओहिठाम पाहुन सभहक हुजुम छल। हमर भाए सभ सपरिवार पहिनहि पहुँचि गेल रहथि। बरक मामा गामसँ तँ के-के ने आबि गेल छल। हुनकर नाना-नानीकेँ देखि अतिशय प्रसन्नता भेल। ७४ वर्षक होइतो नाना थेहगर छथिन। ओ दरभंगाक कादिरावाद स्थित उच्चविद्यालयमे प्रधानाध्यापकक पदसँ सेवा निवृत्त भेल छथि एवम् बहुत नफीस आ व्यबहार कुशल व्यक्ति छथि। मुदा बरक नानीक स्वास्थ गड़बड़ाएल रहनि। नातिक बिआह देखबाक अति उत्साहमे सभटा बिसरि ओ राँची आबि सकलीह से अद्भुत बात...। यद्यपि डेरामे

लोक सभ खचाखच भरल छल, तथापि हमरा हेतु रहबाक नीक व्यबस्था छल।

राँची हवाई अड्डासँ घर अबैत काल प्रसिद्ध क्रिकेट खेलाड़ी धोनीक आवाससँ गुजरलहुँ। कोनो बहुत विशिष्ट नहि बुझाएल तथापि धोनीक घर हेबाक कारणे लोकमे ओकरा देखबाक उत्सुकता बनल रहैत अछि। संगे रस्तामे बनल नव-नव कालोनी, आवासीय फलैट सभ देखाइत छल जकर ४३ साल पूर्व नामो-निसान नहि छल। ओहि समयमे जतए जंगल छल, ताहि ठाम महल सभ ठाढ़ देखलहुँ। परिवर्तन एवम् विकास जीवनक परिभाषा थिक। मनुक्खक स्वभाव अछि जे ओ निरन्तर आगाँ बढ़एमे लागल रहैत अछि। ओ गाछ जकाँ ठाढ़ नहि रहि सकैत अछि। मनुक्ख चल प्राणी अछि। स्वभाववश निरन्तर किछु-ने-किछुमे लागल रहैत अछि। इएह थिक ओकर विकास यात्राक अन्तर्रहस्य। सोचियौ जे हमरा लोकनिक पूर्वजजँ यथास्थितिसँ सन्तुष्ट भए गेल रहितथि तँ आइ हम सभ रेल, हवाई जहाज, कारमे चलि सकितहुँ? कदापि नहि। संघर्षेसँ स्वर्णिम भविष्यक आवाहन होइत अछि। संघर्षे जीवन थिक।

कहबी अछि जे 'सफलता टीकासन चढ़ि कए बजैत अछि। ओएह हाल धोनीक अछि। राँचीमे जतहि देखू, जकरे देखू, धोनीक नामसँ, ओकरासँ जुड़ल वस्तु सभसँ अतिशय प्रभावित अछि। धोनी जाहि स्कूलमे पढ़लाह से प्रसिद्ध भए गेल। जाहि घरमे छथि से प्रसिद्ध भए गेल। राँचीसँ ६० किलोमीटर दूरपर भगवतीक मन्दिर प्रसिद्ध भए गेल अछि। सभ कहैत अछि जे धोनी राँची अएलापर किंवा कोनो मैच खेलेबाक हेतु प्रस्थानसँ पूर्व एहि भगवतीक दर्शन अवश्य करैत अछि। तैँ सभ ओहि भगवतीक दर्शनक हेतु उत्सुक रहैत छथि। राँचीसँ हमरा

लोकनिक ओहिठाम सँ सेहो किछु गोटे ओहि भगवतीक दर्शन करए गेलाह। हम सभ नहि जा सकलहुँ मुदा मोनमे इच्छा तँ रहबे करए। ओना, जमशेदपुरसँ आपस अबैत काल किओ कहलक जे ओएह ओ मन्दिर अछि जा दूरेसँ सही, भगवतीकेँ मोने-मोन प्रणाम केने रही।

जमशेदपुरसँ आएल पाहुनक स्वागतमे सभ मुस्तैद भेलथि। बरक चुमौन भेल। दुर्वाक्षत हेतु दुर्वाक्षत मंत्रक हम उच्चारण कएल। बरक हाथ उठबए लेल कनियाँक पित्ती आएल रहथि। बरक हाथ उठौला पछाइत सभगोटे बेराबेरी जमशेदपुर हेतु कारमे बैसि प्रस्थान केलहुँ।

लगभग साढ़े तीन घन्टाक यात्राक बाद हमसभ जमशेदपुरमे प्रवेश कए रहल छलहुँ। जमशेदपुर हम पहिनहुँ रहल छी। मई १९७४ सँ मार्च १९७५ धरि, दूरभाष निरीक्षक हम ओहीठाम रही। बिस्टुपुरक मैदानमे जय प्रकाश नारायणजीक भाषण भेल रहए। बरखाक बाबजूद सम्पूर्ण मैदान लोकसँ खचाखच भरल छल। जय प्रकाशजी राष्ट्र भरिमे आन्दोलन कए रहल छलाह। ओही क्रममे जमशेदपुरक यात्रा छल।

जमशेदपुर पहुँचि कए हमसभ होटलमे विश्राम केलहुँ। सभ बरियातीक हेतु उत्तम व्यबस्था छल। थोड़बे कालमे जलखै देल गेल। पाकेट बन्द डिब्बामे नाना प्रकारक जलखैक वस्तु सभ राखल छल। पानिक बोतल राखल छल। कोठरी सभमे टेलीवीजन, ए.सी. आदि-आदि सभटा सुविधा छल। लगभग तीन घन्टा विश्रामक बाद बरियातीक काफिला विआह स्थली दिस विदा भेल। रोमांचकारी दृश्य छल। फटाकासँ आकाश ओ धरती एक भए गेल छल। युवक सभ मनोहारी नृत्य कए रहल छलाह। थोड़बे कालमे हम सभ विआह स्थल

पहुँचि गेलहुँ।

मैथिल परंपराक अनुसार बरियाती सभहक हार्दिक स्वागत कएल गेल। फेर बरियाती सभ अपन-अपन स्थान ग्रहण केलाह। मंचपर बर कनियाँक माल्यार्पणक दृश्यक आनन्दक वर्णन करब शब्दक बसक बात नहि। तदुपरान्त आज्ञाडाला आएल, विआहक अनुमति प्रदान करबाक विध भेल। थोड़ेकालक बाद बर परिछन हेतु विदा भए गेलाह आ हम सभ भोजनक हेतु...।

भोजनक उत्तम व्यबस्था छल। शाकाहारी बहुत कम लोक छलाह। माछ सहित अन्यान्य आमिष वस्तुक भरमार छल। विआहमे बरियातीक हेतु एहन उत्तम व्यबस्था कम ठाम देखएमे आएल छल। भोजनोपरान्त बहुत रास बरियाती विश्राम हेतु होटल आपस चलि गेलाह। हम अनुज सहित राति भरि विआह स्थलीमे रहि गेलहुँ। कएटा विध सभ करबाक रहए। विवाहोपरान्त दुर्वाक्षत मंत्रक हेतु पुनश्च हम सभ उपस्थित रही। विआह भए गेल। लगभग पाँच बजे हम आपस होटल अएलहुँ।

सरियातीक तरफसँ बहुत रास लोक आएल छलाह। स्थानीय महत्वपूर्ण व्यक्ति–एम.एल.ए.–आदि सभ सेहो आएल छलाह। दोसर दिन पुनश्च बरियातीक भोजनक व्यबस्था छल। आमिष भोजी सभहक पाँव बारह छल। शाकाहारी कम लोक छलाह। आ ओहिठाम अलग-थलग पड़ि गेल रही। सभ तरहेँ सन्तुष्ट भए हम सभ आपस जमशेदपुरसँ राँची विदा भेलहुँ। लगभग सात बजे हम सभ राँची डेरापर पहुँचलहुँ तँ साँझक गीत भए रहल छल।

घरमे पाहुन सभ गज-गज करैत छल। लगभग दस दिन इएह हाल रहल। मुदा व्यबस्थामे कोनो चूक नहि छल। कतेको कार्यकर्ता

सभ दिन राति चाह-पान, भोजन, जलखै सभहक व्यबस्थामे लागल रहैत छलाह। द्विरागमन, चारि दिनक बाद भेल। आ तकर बाद स्वागत भोज। स्वागत भोजोपरान्त ततेक लोक छलाह जे गनब कठिन। नाना प्रकारक वस्तु खाइत रहू, चलैत रहू, गप्प करैत रहू। बर-कनिया संगे चित्र खिचाउ,आ आगू बढ़ि जाउ। १२ बजे धरि ई कार्यक्रम चलल।

विवाहोपरान्त बाँचल समयमे लग-पासक प्रमुख स्थान सभकेँ देखबाक इच्छा भेल। ताहि क्रममे ४३ सालक बाद दोबारा टैगोर हिल देखए गेल रही। पहाड़ीपर चढ़ए लेल सीढ़ीमे किछु परिवर्तन बुझाएल। लग-पासक दोकान-दौरीक संख्यामे वृद्धि बुझाएल मुदा ओहि स्थानमे कोनो गुणात्मक परिवर्तन नहि देखाएल। पहाड़ीपर ऊपर चढ़ि गेलाक बाद समूचा राँची शहरक परिदृश्य निश्चय मनोरम लगैत अछि। गाहे-बगाहे किओ-किओ देखए आबि जाइत छल। मुदा एतेक पैघ साहित्यकार, कलाकारक नामसँ जुड़ल एहि स्थानकेँ बेसी नीक स्थितक कामना छल।

ओहिठामसँ आपस होइत काल सड़कक काते-काते किसिम-किसिमक दोकान सभ देखाएल। मुख्यमंत्री, राज्यपालक आवास देखाएल, मुदा हम सभ रूकलहुँ राक गार्डेन लग। ओहि गार्डेनकेँ देखि मोन प्रसन्न भए गेल। लगैत छल जेना बसन्त साक्षात प्रकट भए गेल छथि। पहाड़ीक कछेरमे किसिम-किसिम केर सजावट प्रकृति स्वयं कए देने छल। गोंडा हिलक लगीचमे बनल राक गार्डेन जयपुरक राक गोर्डेनक प्रतिकृति कहल जाइत अछि। एकर निर्माण गोंडा हिलक पाथर सभसँ भेल अछि। मानव निर्मित जल प्रपात, चट्टान एवम् शिल्पकला प्रकृतिक सौन्दर्यमे मानव पुरुषार्थक समावेशक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि। राक गोर्डेन मात्र दर्शनीय स्थान नहि अछि अपितु

एकर सुरम्य ओ शान्त वातावरणमे आत्माकेँ एकटा सकून भेटैत अछि जे आनठाम सुलभ नहि अछि। कॉके बाँधक लगीच हेबाक कारण एकर सौंदर्य अनायासे बढ़ि जाइत अछि। धिया-पुताक संगे करवनो काल एहिठाम जा कए नीक समय व्यतीत कएल जा सकैत अछि। असगरो जा कए आत्म चिन्तन एवम् शान्तिक अन्वेषण करबाक ई एकटा उपयुक्त स्थान अछि।

राक गोर्डेनमे हम सभ सपरिवार वर्तमान यात्रामे गेल रही। असीम आनन्दक अनुभूति भेल। यत्र-तत्र हरियर कंचन, रंग-विरंगी फूल, पाथर काटि-काटि कए बनाओल गेल किसिम-किसिम केर आकृति देखि बहुत नीक लागल। किछु काल बैसि ओहिठामक शान्ति ओ प्राकृतिक सौंदर्यक आनन्द लए हम सभ आगू बढ़ि गेलहुँ।

राँची अपन आवो-हवाक हेतु प्रसिद्ध छल। लोक स्वास्थ्य लाभ करबाक हेतु ओहिठाम जाइत छल। मनोरोगी सभहक प्रसिद्ध चिकित्सालय कॉके, राँचीमे अछि जतए राँचीक सुरम्य वातावरणमे मनोरोगी सभ मानसिक स्वास्थ्य लाभ करैत छल। आध्यात्मिक दृष्टिमे योगदा सत्संग केर मुख्यालय राँचीमे अछि जाहिठाम गेलापर अखनो शान्तिक अनुभव होइत अछि। यद्यपि योगदा सत्संग मंठ आब शहरक बीचमे भए गेल अछि, तथापि अखनहुँ आश्रमक अन्दर गेलासँ आनन्द होइत अछि। योगदा आश्रमक स्थापना सन् १९१६ मे परमहंस योगानन्द द्वारा भेल। ओ एहिठाम आश्रमक आलावा बालक सभहक हेतु जीवन निर्माण विद्यालय एवम् क्रिया योगक प्रशिक्षणक व्यबस्था केलथि। योगदा आश्रममे ४३ सालक बाद फेरसँ पहुँचि बहुत सन्तोष ओ आनन्दक अनुभव भेल। ओहिठाम सभसँ पहिने योगानन्द परमहंसक कक्ष देखलहुँ। ओहिमे गुरुजीक किछु सामान सभ राखल

अछि। हुनकर हाथ तथा पैरक निसान अछि एवम् हुनकर महासमाधिपर सँ आनल गुलावक फूल राखल अछि। गुरुजीक आवासक लगीच एकटा लिचीक पैघ गाछ अछि जाहि ठाम ओ बैसि अपन विद्यार्थी सभकेँ प्रवचन करैत रहैत छलाह। अखनो ओहि गाछकक जड़िमे गुरुजीक चित्र राखल अछि। आगन्तुक सभ ओहिठाम बैसि ध्यान कए आत्मशान्तिक अनुभव करैत अछि।

राँची आश्रमक विद्यालयक स्टोर रूममे बैसि गुरुजी कएक बेर आत्म चिन्तन करैत रहैत छलाह। ओहिठाम आइ-काल्हि स्मृति मन्दिर बनल अछि। षटकोणीय उज्जर संगमरमरसँ बनल एहि स्मारकक मुकुटपर सुन्दर कमल बनल अछि। आश्रममे ध्यान केन्द्र अछि, जाहिठाम बैसि लोक भोर-साँझ घन्टो ध्यान करैत अछि। अगल-बगलक किसिम-किसिमक वृक्ष सभ वातावरणकेँ अत्यन्त सुरम्य एवम् आकर्षक केने अछि।

तकैत-तकैत प्राचार्य निवास पहुँचलहुँ–जतए ४३ बर्ष पूर्व हम डॉ. सुभद्र झाक संगे एक मास रहल रही। ओ छोट सन भवन बन्द छल मुदा ओकर छबि ओहिना छल। देखि कए भूतकालक दृश्य फेरसँ आँखिक सोझमे आबि गेल। ओहिठाम बरामदापर बैसि साँझ मे सुभद्रबाबू अध्ययन ओ चर्चा करैत छलाह।

आश्रमक एकभागमे प्रशासकीय भवन अछि, जकर नाम शिवालय थिक। ओतए जा कए किछु पोथी किनलहुँ, किछु जानकारी इकट्ठा केलहुँ। आ घुमैत-फिरैत हरमू हॉउसिंग कालोनी स्थित अपन डेरा आपस आबि गेलहुँ।

एक दिन अहिना घुमैत-फिरैत रामकृष्ण मिशन मठ पहुँचि गेलहुँ। ओहि दिन रामकृष्ण परमहंसक जयन्ती मनाओल जा रहल

छल। सत्संग भवन खचाखच भरल छल। अधिकांश बंगाली लोकनि गाहे-बगाहे मैथिली भाषी सेहो देखेलाह। होमक बाद फूलसँ अर्चना भेल। भक्त सभहक हाथमे फूल देल गेल आ पूजोपरान्त एक-एक व्यक्तिक हाथक फूल एकटा अढ़ियामे एकट्ठा कएल गेल जाहिसँ कतहु मैलि नहि भेल। थोड़े कालक बाद सभगोटे भंडारामे गेला जाहिठाम पुड़ैनक पातपर खिचड़ि देल जा रहल छल मुदा मंगलक उपासक कारण हम फरिक्केसँ प्रणाम कए पुस्तकालय चलि गेलहुँ।

रामकृष्ण मिशन मठ, टैगोर हिलसँ लगे अछि। सन् १९१३ इस्वीमे श्रीरामकृष्ण परमहंसक हुनकर अनन्य शिष्यमे सँ एक स्वामी सुबोधानन्द (खोका महाराज) क राँची शुभागमन भेल। ओ किछु भक्तक संग टैगोर हिल पहुँचलाह। भोजनादिक उपरान्त पेयजलक ताकमे वर्तमानमे रामकृष्ण मठ स्थित इनारपर पहुँचलाह आ ओकर पानिसँ अपन पियास बुझौलथि। ओहि इनारकेँ अखनो स्मारकक रूपमे बँचा कए राखल गेल अछि। ओहिठाम किछुकाल ठाढ़ भए सोचैत रहि गेलहुँ जे करीब सए साल पूर्व ई स्थान केहन छल जे पानिक हेतु स्वामीजीकेँ एतए आबए पड़ल आ अगिला सौ सालक बाद पता नहि की रहत, की नहि रहत...। राँचीक नवनिर्मित खेलगाँव सेहो दर्शनीय अछि। किसिम-किसिमक खेलक हेतु प्रशिक्षणक व्यबस्था ओहिठाम अछि। ओहिमे अनेकानेक प्रकारक इन्डोर स्टेडियम अछि जकरा देखैत बनैत अछि। स्वच्छ ओ रमणीय वातावरणमे बनल ई खेल परिसर देखबामे बहुत आकर्षक अछि। मोन होएत जे घुमिते रही।

राँची शहरसँ आध घन्टामे हमरा लोकनि विरसा जैविक उद्यान पहुँचलहुँ। उद्यानक अन्दर घुमबाक हेतु गाड़ी भेटैत अछि, मुदा जखन

हम सभ पहुँचलहुँ तँ सभ गाड़ी खुजि गेल रहए। एक घन्टाक बाद गाड़ी भेटैत तैँ हम सभ पएरे उद्यानमे घुमबाक हेतु विदा भेलहुँ। किसिम-किसिम केर जीव-जन्तुसँ भरल उद्यानक हरियरी देखैत बनैत अछि। सभसँ पहने हम सभ शुतुरमुर्ग देखलहुँ, तकर बाद गरूड़। गरूड़ देखि आश्चर्य भेल जे विष्णु भगवान केना एकरा अपन वाहन बनओलथि। क्रमश: हम सभ जाईट हेरोन, परिया चील आ तकर बाद भारतीय बाघ देखलहुँ। बाघ ओहि बारक अन्दर लगातार घुमि रहल छल जेना कोनो शिकार करबाक हेतु आतुर हो। कनी कालक बाद तेंदुआ, हरिण, भाउल, शाहिल, कोटरा, नील गाए अनेकानेक जीवजन्तु आ अन्तमे हाथी देखलहुँ। हाथीकेँ महथवार शिक्षित कए देने रहए आ ओ दर्शक द्वारा फेकल गेल रूपैआकेँ शूरसँ उठा लैत छल।

घुमैत-फिरैत अनेकानेक जीव-जन्तु देखि सकलहुँ जे आइ धरि नामो नहि सुनने रही मुदा मोनमे ई सोचि दुख भेल जे स्वतंत्र रहएबला एहि प्राणी सभकेँ मनुक्ख केना बान्हि देने अछि..! स्वार्थक हेतु मनुक्ख संतति स्वतंत्र रहएबला जीव सभहक जिनगी नर्क कए देने अछि..! जंगलमे उन्मुक्त सदति गरजैत-फरजैत रहएबला बाघ, चीता, भाउल इत्यादि सभ जीव मनुक्खक आत्याचारक कारणेँ बेवस अछि। बाघकेँ बेवस ओहि वारमे घुमैत-फिरैत देखि हम अतिशय दुखी भए गेल रही।

"हे मनुक्ख! अहाँ अत्याचार, अहंकारपर विराम किएक ने दए रहल छी? केतबा दिन एतए रहब? चलि जाएब दुनियासँ तँ की छोड़ि जाएब? अत्याचारक मूक कथा? जे प्राणी प्रतिकार नहि कए सकल, जे बाजि नहि सकल किंवा जकर चित्कारक भाखा अहाँ बुझि नहि सकलहुँ आ निर्दोष प्राणी सभकेँ सदा-सर्वदाक हेतु कारावासोसँ कठोर

जीवन जीवाक हेतु विवस कए देलहुँ? केना शान्ति होएत, एहन अत्याचारी आत्मा सभ?

अस्तु, मानव समाजकेँ सोचबाक चाही जे प्रकृति प्रदत्त सौन्दर्य केँ ओ नष्ट किएक कए रहल अछि?

लगभग चारि घन्टा धरि लगातार चलैत रहलाक बाद हमसभ थाकि गेल रही, सुस्ताएब जरूरी बुझाएल। अस्तु, वोटींग स्थान लग बनल दोकानसँ पानि कीनलहुँ, किछु खेबाक सामान सेहो लेलहुँ आ खाइत-पीबैत किछुकाल विश्राम करैत पुन: विदा भेलहुँ। फेर नौका विहार हेतु टिकट लेलहुँ। नौका विहारक एहन विचित्र व्यबस्था आइ धरि नहि देखलहुँ। छोट सन एकटा नाओ दए देलक आ कहलक जे एकरा अपने चलाएब। कोनो नाविकक व्यबस्था नहि अछि। परेसान भए गेलहुँ। नाओ चलेबाक कोनो अनुभव हमरा नहि छल। चारि गोटे नाओपर बैसल रही। व्यबस्थापक सभ बहुत हिम्मत देलक। किसिम-किसिमसँ प्रशिक्षित करबाक प्रयास केलक। मुदा हमरा हिम्मत नहि होइत छल। मनमे होइत छल जे जँ कहीं नाओ डुबि जाएत, चाहे किछु गड़बड़ भए जेतैक तखन तँ लेनीक-देनी पड़ि जाएत। तथापि बहुत हिम्मत कए ५-६ मीटर नाओ खेबलहुँ। आगू बढ़बाक हिम्मत नहि भेल आ बहुत प्रयासक बाद आपस आबि नाओसँ उतरि गेलहुँ। उतरिते जेना जान-मे-जान आएल। सभगोटे थाकि गेल रही। अस्तु, बाहर आबि गाड़ीमे बैसि कए आगू बढ़ि गेलहुँ।

राँचीक जगर्न्नाथ मन्दिर परिसरमे पहुँचि आध्यात्मिक सुख भेटल। मंत्रोच्चार तथा भजनसँ वातावरण सुगन्धित छल। मन्दिरक गर्भग्रिहमे बाहरे पण्डीतजी छलाह। रूपैआ देखैत व्यवहार बदलि गेल अन्यथा ओ सोझ मुहेँ गप्पो करबाक हेतु तैयार नहि रहथि। किछु मंत्र

पढ़ि हमरा लोकनिकेँ जगर्न्नाथजीकेँ पुष्पांजलि दिओलथि। ओकर बाद मन्दिरक किछु जानकारी सेहो भेटल। भोज खेबाक हेतु ३० प्रति व्यक्ति एक दिन पूर्व जमा कराबए पड़ैत अछि तखने दोसर दिन बारह बजे भोग भेटैत अछि। पूरीक जगर्न्नाथ मन्दिरक भोगक स्मरण भए गेल। मुदा ओहिठामक भोग तँ उम्दा होइत अछि जे खेलाक बाद आओर किछु खेबाक इच्छा नहि होइत अछि- कहक माने जे भरिपेट्टा रहैत अछि। देखबा योग्य राँचीक लगपास कैटा बाँध सभ अछि। आओर कैटा ऐतिहासिक वस्तु सभ अछि, मुदा मोटा-मोटी हम शहरक परिभ्रमण कए लेने रही। टेलीफोन एक्सचेंज, कचहरी, शहीद चौक, रातु रोड विश्वविद्यालय आदि-आदि मुख्य स्थान सभसँ एकाधिक बेर भए आएल रही। ४३ साल बाद राँचीक स्मृति फेरसँ नूतन भए गेल आ एकटा अत्यन्त सन्तुष्टिक भाव मोनमे भेल।

२ मार्च २०१७ इस्वीक भोरे हमर सभहक दिल्लीक हेतु वायुयान छल। साढ़े सात बजे भोरे डेरासँ हवाई अड्डा प्रस्थान कएल। साढ़े नौ बजे दिल्लीक हेतु जहाज उड़ि गेल। एकटा मधुर स्मृतिक संग हम सभ राँचीसँ दिल्लीक यात्रा सम्पन्न कए एक बजे घर आपस आबि गेलहुँ।

राँचीक एक सप्ताहक यात्रामे भातिजक बिआह तँ देखबे केलहुँ संगे बहुत रास आनो-आनो चीज सभ देखि सकलहुँ। एकबेर फेर राँचीक स्मरण नवीन भए गेल छल।



बरहुँ शंभु ने तँ रहहुँ कुमारी

चारूकात अन्हार गुज्ज मात्र एकटा फोक्सीन आ पानिमे ठाढ़ एक मात्र शिला। देखिते देरी किओ बाजि उठल-

“आबि गेल कन्याकुमारी...!”

दुपहर रातिमे हमरा लोकनि धङफङाक कए गाड़ीसँ उतरलहुँ। संयोगसँ कैमरा बसेमे छुटि गेल आ प्रात भेने ओहि कैमराक हेतु लाख छपटेलहुँ मुदा नहि भेटल।

प्रात:काल भोरे नहा-सोना कए मोटरी-चोटरी तैयार कए हमरा लोकनि इलाहाबाद टीसनपर पहुँचलहुँ। गंगा-काबेरी एक्सप्रेस आएल। सभ यात्री सभ ओहिमे सवार भेलाह। किछुए कालमे ओ गाड़ी धराक-धराक आगाँ बढ़ए लागल। फस्ट क्लासक यात्रीकेँ विशेषता तँ बुझले होएत। किओ ककरो जल्दी टोकत नहि, आ जँ बजबो करत तँ एकटा विशिष्ट औपचारिकताक संग। खास कए गंगा-काबेरी एक्सप्रेसमे बेसी दक्षिण भारतीय लोक रहबाक कारणेँ बेस गुम्मी पसरल छल। एतबामे हमरा लोकनिकेँ मैथिलीमे गप्प-सप्प करैत किओ बगलक डिब्बाक यात्री सुनलाह। हिन्दी-भाषी छलाह आ बड़ी काल धरि ओ हमरा लोकनिक माथ चटैत रहलाह। कखनो किछु परामर्श देथि तँ कखनो हाथ देखथि।

गाड़ी सरपट बढ़ि रहल छल आ चारुकात गाम-घर ओहिना छल जेना कि अपना सभ दिस अछि। प्राय: २४ घन्टा धरि गाड़ीमे बैसल रहलाक बाद हरियर-हरियर पानिसँ खिलखिल करैत कृष्णा नदी देखाएल । यात्राक क्रममे सभसँ पैघ समस्या भेल भाखाक आ भोजनक।

मुख्यतः दक्षिण-भारतीय भोजन सर्वत्र उपलब्ध होइत छल। दोसर दिन साँझमे हमरा लोकनि मद्रास पहुँचलहुँ। टीसनपर थाकल-ठेहियाएल एवम् झमाड़ल हमरा लोकनि एकटा उत्सुकतापूर्ण द्दष्टि फेरैत रहलहुँ। आब की करी? ओतेकटा शहर आ ओतहु ओहने रिक्शासभ जेना कि हमरा लोकनिक गाममे अछि। मद्रासमे तीनटा मुख्य टीसन पड़ैए, पहिल- मद्रास बीच, दोसर- मद्रास सेण्ट्रल आ तेसर- मद्रास एगमोर।

गंगा-काबेरी मद्रास बीच टीसनपर रूकल। आ हमरा लोकनि रिक्शा पकड़ि मद्रास सेण्ट्रल टीसनपर अएलहुँ। एहिठाम रेलबे विश्रामालयमे आरक्षण नहि रहबाक कारणेँ हमरा लोकनिकेँ एकटा होटलक शरण लेबए पड़ल, कारण जे फस्टो क्लासक विश्रामालय ठसाठस भरल छलैक आ हमरो लोकनिकेँ यात्राक ततेक थकान छल जे ओहि भीड़मे प्रयाप्त विश्राम तँ नहिए भए सकैत छल। तैँ एकटा होटलमे ठहरलहुँ। प्रात:काल हमरा लोकनि मद्रासक मुख्य-मुख्य स्थान घुमलहुँ, जेना- 'गाँधीमण्डपम, राजाजी मण्डपम, समुद्रक किनार, अस्पताल इत्यादि।

साँझक गाड़ीसँ(जे मद्रास एगमोरसँ खुजल) आ हमरा लोकनि रामेश्वरम् हेतु प्रस्थान केलहुँ। एहि गाड़ीमे अपेक्षाकृत अधिक भीड़ छलैक आ आरक्षण नहि रहैत तँ की हाल होइत से तँ भगवाने जनितथि। मद्राससँ रामेश्वरम्क यात्राक क्रममे लगभग १५-१६ घन्टा समय लागल। ज्योँ-ज्योँ रामेश्वरम् लगीच आबि रहल छल त्योँ-त्योँ समुद्रक धारी सभ देखाइत छल। आ मण्डपमक बादसँ समुद्रेमे बनल पूलपर गाड़ी चलैत अछि। चारूकात अथाह समुद्रकेँ चीरैत छल सए-सए गोट ट्राली सभ जे माछ मारबाक एकटा नीक साधनक रूपमे

प्रयुक्त छल। तखन देखाएल बालूए-बाउल आ आब रामेश्वरम् एकदम लगीच छल।

गाड़ी आबि कए ठाढ़ भए गेल। लगभग दू माइल धरि एक्कापर चढ़ि कए हमरा लोकनि भगवान रामेश्वरम्क मन्दिरक ठीक सामनेमे बनल रामनाथ धर्मशालामे ठहरलहुँ, जाहिमे नाममात्र शुल्क देबए पड़ल मुदा साफ-सवच्छ ओ सुन्दरताक दृष्टिकोणसँ ओकर मोल आँकब असम्भव अछि।

भारतवर्षमे रामेश्वरम् मन्दिरक चारुकात जे पसार अछि से सभसँ पैघ अछि आ एहिमे निरन्तर वृद्धि भेल जाइत अछि। मन्दिरक बनाबटमे एकटा अपूर्व सौन्दर्य अछि आ एकर ऊपरमे निरन्तर भजन होइत रहैत अछि, जे लॉउडस्पीकरक माध्यमसँ सभहक कान धरि पहुँचैत रहैत अछि। ओतए कतेको मन्दिर आ धर्मशाला अछि।

रामेश्वरम् मन्दिरक चारुकात टापूमे बसल रामेश्वरम्क दोकान सभमे मात्र तीर्थयात्रीकेँ ध्यानमे रखैत समान सभ राखल जाइत अछि। रामेश्वरम्क मन्दिरक काते-कात दक्षिण भारतीय भोजनबला होटल सभ अछि आ एक पाँतिसँ कतेको दोकान अछि जाहिमे मुख्यत: पूजाक सामग्री जेना- फूल, नारियल आ शंखक भरमार छल। एकटा गप्प तँ बुझले होएत जे रामेश्वरम् भगवानपर गंगाजल चढ़ओलासँ मोक्षलाभक अधिकारी होबाक धार्मिक विश्वास अछि आ तैँ ओतए ताम्र पात्रमे गंगाजल भरि-भरि कए लोक सभ चढ़बैत अछि। मन्दिरमे भीड़ तँ रहिते अछि, मुदा सभसँ प्रसंशनीय अछि ओहिठामक प्रशासकीय व्यबस्था। पण्डा लोकनि सेहो अपेक्षाकृत अधिक परिश्रमी ओ इमानदार बुझेलाह। सभसँ आकर्षक छल ओहिठामक चढ़ौआ चढ़ेबाक नियम। विभिन्न प्रकारक पूजनक विभिन्न शुल्क देबए पड़ैत

जे एकटा विशेष खिड़कीपर लोक जमा करए आ ओहिठाम टिकट भेटि जाइत। बिना ओहि टिकटक लोक रामेश्वरम् मन्दिरमे नहि जा सकैत अछि। आ जँ घुसिया कए पंक्ति धरि लागिओ जाए तँ ओकर प्रसाद व पूजनक सामग्री भगवानपर नहि चढ़तनि। इएह अछि पैसा देवीक प्रकोप। जतेक पाइ ततेक नीक पूजा।

मन्दिरमे भरि दिनमे कएक बेर पूजा होइ अछि आ पहिल पूजा चारि बजे भोरे होइत अछि। आओर जे किछु से तँ अछिए मुदा रामेश्वरम् मे एकटा अपूर्व प्राकृतिक सौन्दर्य अछि जे राम-झरौखापर बैसलासँ बेसी नीक सँ बुझाइ अछि। कहबी अछि जे भगवान राम लंकापर विजयक बाद एहि पहाड़ीपर बैसि अपन बानरी सेनाक संग विजयोत्सवक संग-संग विश्राम लाभ केलनि। ओ स्थान अछिओ तेहने। चारुकात समुद्रक अपूर्व दृश्य दर्शनीय अछि। हजारक- हजार नारियल-खजूरक गाछ सभ चारुकात पसरल अछि।

ओना तँ दक्षिण भारतमे सौंसे नारियरक गाछक भरमार अछिए, मुदा रामेश्वरम्मे ई नारियरक गाछ सभ एकटा अपूर्व सौन्दर्यक निर्माण करैत अछि। ठाम-ठामपर अनेकानेक कुण्ड सभ अछि। स्वयं रामेश्वरम् मन्दिरमे कतेको कुण्डमे स्नान करबाक हेतु लोक आठअना पाइ दए कए एक कुण्डसँ दोसर कुण्डपर नहाइत फिरैत छल। जेहो मन्दिरक व्यबस्था आ देशक विभिन्न भागसँ आएल हजारो तीर्थ-यात्रीक उत्सुकता दर्शनीय छल। ठाम-ठामपर कतेको तीर्थ-यात्री द्वारा बनाओल गेल धर्मशाला सभ लोकक धार्मिक भावनाकेँ प्रतिबिम्बित करैत छल। दू दिन धरि ओहिठाम जीवन बिताए हमरा लोकनि रामेश्वरम्सँ प्रस्थान केलहुँ। एहि बीच धर्मशालाक व्यबस्थापक तगादा सेहो कए चुकल छल जे हमरा लोकनि करवन स्थान छोड़ब आ तैँ

कनेक आओर धड़फड़ा कए ओहि स्थानसँ तेसर दिन प्रात: १० बजे प्रस्थान केलहुँ।

रामेश्वरम् टीसनपर यात्री ठसम-ठस भरल छल आ बहुत चेष्टाक बाद महिला डिब्बामे हम सभ पैसलहुँ। आरक्षण नहि छल। कहुना काहि काटि रामेश्वरम्सँ मण्डपम टीसनपर पहुँचलहुँ। ओहिठाम सँ बस कन्याकुमारीक लेल खुजैत अछि। ठाम-ठामपर तस्करीबला समान सभ बिकाइत छल।

मण्डपम टीसनसँ करीब एक माइल पैदल चलला बाद बस-स्टैण्ड भेटल आ ओतए करीब-करीब दू घन्टा प्रतीक्षाक कए हमरा लोकनि बसमे असवार भेलहुँ। बसमे चढ़बासँ पूर्वे लोककेँ गाड़ीक टोकन भेटैत छलैक जाहिसँ गाड़ीमे स्थान सुरक्षित भए जाइत छल। बस-स्टैण्डपर लोक टक-टकी लगा बसक प्रतीक्षा कए रहल छल। बसकेँ अबिते लोक सभ धड़फड़ाइत ओहिमे पैसए लागल आ देखिते-देखिते पूरा बस ठसम-ठस भरि गेल। टोकन भेटिये गेल छल आ तैँ हमरा लोकनिकेँ स्थान सेहो भेटल। सनसनाइत बस रस्ताकेँ चीरैत आगू बढ़ए लागल आ हमरा लोकनि उत्सुकतासँ दक्षिण भारतक सौन्दर्यक अवलोकन करैत रहलहुँ। चारुकात केराक करजान आ नारियल-गाछक पाँति। ओहि सभमे नारियलक खेती ओहिना बुझाएल जेना अपना सभ ओहिठाम आमक अछि अथबा ओहूसँ बेसी, कारण जेमहर नजरि दौड़ल तेम्हरे नारियरेक गाछ देखाइ। रातिक समय छलैक तैँ बहुत बेसी दृश्यावलोकन तँ नहि भए सकल मुदा जहाँ बस समुद्री इलाकासँ गुजरइ तँ बेंग सभहक कों-काँइ अनायासे सुनबामे आबए लगैत छल।

किछु कालक बाद हमरा लोकनि ट्युटीकोरन नामक

बन्दरगाहक लग पहुँचलहुँ। ओतए बस किछु कालक हेतु अँटकल आ हमरा लोकनि कनी-मनी खेलहुँ। तकर बाद फेर अन्हारे-अन्हारे बस भागए लागल आ रातुक करीब डेढ़ बजे हमरा लोकनिकेँ एकटा फोक्सीन देखाएल। बुझाएल जेना चारुकात पानिमे ढौंसा बेंग सभ हजारक-हजार संख्यामे हमरा लोकनिक स्वागतमे जय-जयकार करैत हो...।

धड़फड़ा कए हमरा लोकनि बससँ उतरए लगलहुँ। इएह थिक कन्याकुमारी। भारतक स्वर्ग आ हिन्द महासागर, अरब सागर ओ बंगालक खाड़ीक संगम स्थलपर ठाढ़ विवेकानन्दक अविस्मरणीय स्मारकक हेतु विख्यात कन्याकुमारीक दर्शन हेतु मोन छटपटाइत छल। मुदा राति बेसी छल आ हमरा लोकनि लगभग १२ घन्टा बसक यात्रासँ थाकि गेल छलहुँ।

थाकल-झमारल हमरा लोकनि विवेकानन्द स्मारक शिलासँ संबद्ध विवेकानन्द लॉजमे राता-राती पहुँचलहुँ। ओहिठामक व्यबस्था, कार्यकर्त्ता लोकनिक सेवाक भावना ओ स्वच्छताक सविस्तार वर्णन बिना केने आगाँ बढ़ब अनुचिते होएत। विवेकानन्द (K.V.R.M.) स्मारक शिलाक व्यबस्थाक हेतु एकटा समिति अछि जे ओहिसँ सम्बन्धित वस्तुक व्यबस्था करैत अछि। विवेकानन्द लॉजमे रात्रीमे ठहरबाक उत्तम व्यबस्था अछि। ओहिठाम चौबीसो घन्टा स्वागत कक्ष खुजल रहैत अछि। दुपहरियो रातिमे ओतए असानीसँ मकानक आवन्टन कए देल जाइत अछि। भोजनालयमे उ. भारतीय ओ द. भारतीय दुनू प्रकारक भोजन देल जाइत अछि। ओहि भोजनालयक व्यबस्था ओ स्वच्छता प्रसंशनीय अछि। कतेको दिनक बाद हमरा लोकनिकेँ एकबेर पुन: उत्तर भारतीय भोजन करबाक अवसर भेटल

आ विवेकानन्द लॉजमे विश्रामक बाद हमरा लोकनिक यात्राक थकान बहुत कम भए गेल छल।

भोरे उठि कए हमरा लोकनि सुर्योदयक मनोरम द्दश्य देखबाक हेतु बंगालक खाड़ीबला समुद्री भागक लग-पास पहुँचलहुँ। रस्तामे कतेको लोक एहन भेटलाह जे ओहि द्दश्यावलोकनक हेतु दौड़ रहल छलाह। ओतए लगैत अछि जेना समुद्रक निच्चाँसँ सूर्यक आगमन होइत हो। तीनटा समुद्रक संगम स्थलीपर शक्ति सम्पन्न सूर्यक प्रात:कालीन आगमनक द्दश्य कतेक मनोरम भए सकैत अछि ओ आखरमे नहि उतारल जा सकैत अछि।

वरहुँ शंभु ने तँ रहहुँ कुमारी। सतीक शिवक प्राप्तिक हेतु तपस्या कन्याकुमारीक जाहि शिलापर केलनि ओहि शिलापर एकटा उत्यन्त रमणीय मन्दिरक निर्माण भेल अछि। ओ मन्दिर बीच समुद्रमे अछि आ ओहिठाम धरि पहुँचए हेतु कन्याकुमारी स्मारक समिति दिससँ जहाजक व्यबस्था सेहो कएल गेल अछि। जहाजक शुल्क प्रति व्यक्ति एक टाका अछि। भरि दिनमे जहाज कएक बेर यात्री सभकेँ घाटपर सँ लए कए शिलाक विभिन्न भागमे लए जाइत छथि आ आपस अनैत छथि। आपसी काल धरि स्वयंसेवक लोकनि जे सेवा करैत अछि से प्रसंशनीय अछि।

विवेकानन्द स्मारक शिला मुख्यत: विवेकानन्दक स्मारक अछि। ओहिठाम विवेकानन्द एक बेर समुद्रमे हेलि कए पहुँचलाह आ दू दिन धरि लगातार तपस्या करैत रहलाह। विवेकानन्दक अपूर्व मूर्ति ओतए जेना सम्पूर्ण भारतवर्षकेँ उद्भोदन करैत हो। ओतए अछि एकटा ध्यान मन्दिर जाहिमे लोक सभ किछु काल बैसि कए ध्यान कए सकैत अछि। ततबे नहि, ओहिठाम सतीक पैरक निसान सेहो अछि ओ

ओहिपर एकटा पृथक मन्दिर निर्माण कएल गेल अछि। ओहि शिलापर घुमैतकाल चारुकात समुद्रक द्दश्य ओहिमे जलक लगातार हिलकोर आ यात्री सभहक आश्चर्य मिश्रित प्रतिक्रिया देखबा आ सुनवा योग छल।

विवेकानन्द स्मारक समिति जाहि सौन्दर्यक रचना कन्याकुमारीमे कएल अछि ताहि हेतु ओ लोकनि स्तुत्य छथि। भारतक गौरव गरिमा वा ओकर सांस्कृतिक महिमाकेँ संक्षेपमे प्रस्तुत केनिहार ओहि स्थानकेँ नमस्कार करैत हृदयमे एक अपार आनन्दक अनुभव करैत हमरा लोकनि बसमे असवार भए मदुराईक हेतु प्रस्थान कएल आ लगभग सात घन्टाक यात्राक बाद सायंकाल मदुराई पहुँच, एकटा होटलमे हमरा लोकनि विश्राम कएल। दोसर दिन भारतक प्रसिद्ध मन्दिर मीनाक्षी भगवतीक अद्वितीय श्रृंगार देखल ओ हजारक-हजार भक्तक अपूर्व भक्ति समन्वित पूजा-अर्चना वातावरणकेँ आनन्दमय बनओने छल। साँझमे हमरा लोकनि गाड़ीसँ मद्रास हेतु प्रस्थान कएल आ प्रात: काल मद्रास पहुँचि भरि दिन मद्रासक शहरमे रपट लगाएल। परात भेने प्रात:काल गंगा-काबेरीमे आरक्षण छल आ सबेर-सकाल गाड़ी पकड़ि हमरा लोकनि इलाहाबादक हेतु प्रस्थान कएल। फेर ओएह रस्ता ओएह द्दश्य आ धराक-धराक चलैत गाड़ी। दोसर दिन थाकल-ठेहियाएल हमरा लोकनि इलाहाबाद पहुँचि नि:साँस छोड़लहुँ। एतबा तँ बुझाइते अछि जे हमरा लोकनिक यात्रा समयाभावक कारणेँ किछु कष्टकर भए गेल, मुदा ओहि समयमे जे आनन्द भारतक गौरवशालीक प्रतीक स्वरुप कन्याकुमारीक विवेकानन्द शिलाक दर्शनसँ भेल से अन्यत्र नहि भए सकैत अछि। कन्याकुमारी सरिपहुँ भारतवर्षक गौरवक प्रतीक अछि। (ई यात्रा वृतान्त ३९ बर्ख पूर्वक अछि।)

जो बोले सो निहाल

पंजावक पैघ शहरमे अमृतसरक गणना अछि। एहिठाम पहिने तुँग नामक गाम छल। सिखक चारिम गुरु रामदास १५७४ मे ७०० रूपैआमे तुँग गामक लोकसँ जमीन किनलथि। ओहि साल गुरु रामदास ओतए घर बना कए रहए लगलाह। ओहि समयमे ओकरा 'गुरु दा चक्क' कहल जाइत छल। बादमे एकर नाम 'चक्क राम दास' भए गेल।

अमृतसर पहिने 'गुरुरामदासपुर'क नामसँ जानल जाइत अछि। पंजावक राजधानी चण्डीगढ़सँ ई २१७ किलोमीटर दूरीपर एवम् लाहौरसँ मात्र ५० किलोमीटर दूरीपर अवस्थित अछि। भारत-पाकिस्तानक वाधा वोर्डर एहिठाम सँ मात्र २८ किलोमीटर अछि।

कहल जाइत अछि वाल्मिकी ऋृषिक आश्रम अमृतसरक रामतीर्थमे छल। लवकुश अश्वमेघ यज्ञक घोड़ाकेँ ओतहि पकड़ि लेने छलाह आ हनुमानकेँ एकटा गाछसँ बान्हि देने रहथि। ओही स्थानपर दुर्गिआना मन्दिर बनल अछि।

तेसर सिख गुरु अमरदासजीक परामर्शपर चारिम सिख गुरुरामदासजी अमृत सरोवरक खुनाइ प्रारम्भ केलाह। एहिमे चारूकात पजेबाक घाटक निर्माण पाँचम सिख गुरु अर्जन देवजी द्वारा १५ दिसम्बर १५८८ क पूरा कएल गेल। ओएह हरमन्दर साहेबक निर्माण प्रारम्भ केलथि। १६ अगस्त १६०४ क ओहिमे गुरु ग्रन्थ साहेबक स्थापना भेल। सिख भक्त बाबा बुधाजी ओकर प्रथम पुजेगरी नियुक्त भेल रहथि।

हरमान्दर साहेबक निर्माणमे सर्व धर्म सभभावक विशेष ध्यान राखल गेल। सिख धर्मक एहि भावनाक अनुरुप गुरु अर्जन देव मुस्लिम सूफी सन्त हजरत मिआँ मीरकेँ एहि मन्दिरक शिलान्यासक हेतु आमंत्रित केने छलाह। सन् १७६४ ई.मे जस्सा सिंह अहलुवालिया आन-आन लोक सभहक सहयोगसँ एकर जीर्णोद्धार केलाह। उन्तीसमी शताब्दीमे महाराजा रणजीत सिंह ७५० किलोग्राम सोनासँ एहि मन्दिरक ऊपरी भागकेँ पाटि देलाह जाहिपर एकर नाम 'स्वर्ण मन्दिर' माने 'गोल्डेन टेम्पल' पड़ि गेल।

हरमन्दर साहेबक स्वर्ण मन्दिरमे पैर रखैत गजब आनन्दक अनुभूति भेल। साफ-सुथरा चक-चक करैत परिसर। सुरम्य वातावरणमे भजन कीर्तनक संगीतमय मधुर ध्वनि। चारूकात पसरल सैंकड़ोक तादादमे सेवादारक जत्था सभकेँ देखैत बनैत छल।

समूहमे जीव, सेवा करब ओ समन्व्य पूर्वक सभहक स्वागत करब, एहि वस्तुक प्रत्यक्ष उदाहरण हरमन्दर साहिवमे भेटैत अछि। मन्दरमे प्रवेशसँ पूर्व जूता निकालब आ माथ झाँपब अनिवार्य अछि। माथ झाँपबाक हेतु मन्दिर प्रवन्धक केर तरफसँ वस्त्र देल जाइत अछि।

विशाल तलाव स्वच्छ जलसँ भरल अछि। एहि तालावक नाम अमृत सरोवर अछि। सरोवरक चारूकात लोक परिभ्रमण करैत अछि। सरोवरसँ जुड़ल अछि हरमन्दिर साहेब।

मन्दिरमे निरन्तर गुणवाणीक पाठ होइत रहैत अछि। चारूकातसँ मन्दिरक दरबाजा खुजल अछि। तात्पर्य जे ओहिठाम सभहक स्वागत अछि। हरमन्दिर साहेबमे कोनो धर्मक लोक जा सकैत अछि। एहि मामलामे ई विलक्षण अछि। एहिठाम निरन्तर लंगर

चलैत रहैत अछि। अनुमानत: प्रति दिन एक लाखसँ तीन लाख लोक धरिकेँ मुफ्तमे लंगर खुआबक व्यबस्था एहिठाम रहैत अछि।

हम हरमन्दिर साहेब दू बेर गेल छी। एकबेर अधिकारीक प्रतिनिधि मण्डलक संग आ दोसर बेर श्रीमतीजीक संग। दुनू बेर नीकसँ दर्शन भेल। स्थानीय प्रशासनक सहयोग रहबाक कारण मन्दिरमे हमरा सभकेँ सरोपा देल गेल। सरोपा देबक माने बहुत इज्जत देब भेल।

अमृतसरक प्रसिद्ध स्वर्ण मन्दिरक दर्शनक बाद हमरा लोकनि ओहिठाम सँ सटले जालियावाला बाग गेलहुँ। ओहि वागक इतिहास ककरा नहि बुझल अछि। ब्रिटिश साम्राज्यक भारतमे कएल गेल ई क्रुड़तम घटना अछि। १३ अप्रैल १९१९ क ब्रिटिश हुकुमतक विरोधमे स्वर उठाबक हेतु जमा भेल हजारो लोकपर १० मिनट धरि धुँआधार गोली चलाओल गेल, जाहिमे एक हजार लोक मारल गेलाह आ १५ सए लोक घायल भेलाह। सरकारी आँकड़ामे मृतक एवम् घायलक संख्या बहुत कम क्रमश: ३६९ एवम् २०० मात्र देखाओल गेल मुदा ओ सही नहि लगैत अछि। गोली काण्डक बाद ओहि मैदानमे लहास उठओनिहार किओ नहि छल। सैकड़ो आदमी जान बँचेबाक हेतु ओहिठाम स्थित एकटा इनारमे कुदि गेल। बादमे १२० टा लहास ओहि इनारसँ निकालल गेल। धुँआधार चलल गोली सभहक निसान अखनहुँ ओहिठामक देवाल सभपर देखल जा सकैत अछि।

ओहि दिन बारहे बजेसँ लोक सभ बैसारमे भाग लेबाक हेतु ओहि मैदानमे जमा होमए लागल छल। बहुत रास निर्दोष लोक उत्सुकतावश सेहो ओहिठाम जमा भए गेल छल। मुदा ककरो ई अन्दाज नहि छलैक जे ब्रिटिश हुकुमत एतेक वर्वरतापूर्ण काज करत!

मुदा से भेल। ब्रिटिश हुकुमतक खिलाफ कतेको प्रकारक दुर्घटनाक पछाइत राज्यमे मार्शल लॉ लागू छल।

१३ अप्रैल १९१९ क भोरे ब्रिटिश हुकुमत घोषणा कए लोककेँ चेतओलक जे पाँच आदमीसँ बेसी लोकक एकठाम जमा होएब गैरकानूनी अछि। मुदा बहुत लोककेँ एकर जानकारी नहि भेलैक आ जकरा भेबो केलैक से नहि सोचि सकल जे आदेशक उल्लंघनक एहन विनाशकारी होएत!

स्थानीय फौजी एवम् असैनिक अधिकारीकेँ जालियावाला बागमे जमा होइत भीड़क जानकारी १२ बजे भए चुकल छल। ओ सभ चाहैत तँ ओहि बैसारक शुरूए-मे विरोध कए सकैत छल, मुदा एकटा सुनिश्चित योजनाक तहत भीड़केँ जमा होमए देल गेल आ बिना कोनो पूर्व उद्घोषणाक भीड़पर अन्धाधून गोली चलेबाक आदेश जनरल द्वारा दए देल गेल।

सभसँ दुखद तँ ई भेल जे गोलीक बरखामे घायल लोक सभ तरपैत-तरपैत मरि गेल आ किओ ओकरा सभकेँ अस्पताल उठा कए नहि लए गेल। एहि घटनाक अन्जाम देनिहार जेनरल डायरेक्टरकेँ जखन हंटर कमीशन पुछलक जे ‘अहाँ घायल लोक सभहक इलाजक की बन्दोवस्त केलहुँ?’ तँ ओ निर्लज्ज भए कहलक जे अस्पताल सभ खुजल छल। सही स्थिति तँ ई छल जे बाहरमे कर्फ्यू लागल छल तैँ किओ कतहु घुसकिओ नहि सकैत छल। जनरल डायर उपरोक्त कमीशनक समक्ष स्वीकार केलक जे ओ सोचि-बिचारि कए जालियावाला वागमे गोली चलबओलथि। ओ चाहितथि तँ डरा-धमका कए भीड़केँ भगा दितथि, मुदा फेर ओ सभ एकत्र भए जाइत, आ ब्रिटिश हुकुमतक वर्चस्वपर हँसैत।

एहेन वर्वर घटनाक चश्मदीद गवाह देबाल सभपर पड़ल गोली सभहक निसान अखनहुँ देखल जा सकैत अछि। हम सभ चारूकात देबाल सभपर पड़ल एहन निसान सभकेँ सद्य: देखलहुँ। गोलीक निसान सभकेँ चिन्हित कए देल गेल अछि। आ जाहि इनारमे सैकड़ो आदमी कुदि गेलाह आ जानसँ हाथ धो लेलथि, सेहो 'शहीदी कुआँ'क नामसँ स्मारक भए गेल अछि। एहि काण्डमे शहीद भेल सैकड़ो लोकक यादगारमे ओतए स्मारक बनल अछि जकर उद्घाटन भारतक प्रथम राष्ट्रपति स्व. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सन् १९६३ मे केलाह।

अमृतसरक दर्शनीय स्थानमे दुर्गिआना मन्दिर प्रमुख स्थान रखैत अछि। मूलत: दुर्गामाताक मन्दिर हेबाक कारण एकर नाम दुर्गियाना मन्दिर पड़ल मुदा एहि मन्दिरमे आनो-आनो भगवान सभहक भव्य मूर्ति विराजित अछि। ई मन्दिर अपन भव्यता एवम् अध्यात्मिक वातावरण हेतु सम्पूर्ण विश्वमे प्रसिद्ध अछि। देश-विदेशसँ हजारो तीर्थयात्री एहिठाम अबैत रहैत छथि। मन्दिर बहुत पुरान अछि। मूल मन्दिर सोलहम शताब्दीमे बनल छल। तकर बाद सन् १९२१ ई.मे स्थानीय लोकनिक मदतिसँ एकर जीर्णोद्धार कएल गेल। नव निर्मित मन्दिरक उद्घाटन सन् १९२५ ई.मे पं. मदन मोहन मालवीय केने रहथि। मूख्यत: मन्दिरक प्रागणमे पहुँचबाक हेतु पूल बनाओल गेल अछि। मन्दिरक बनाबट ओ साज-सज्जा स्वर्ण मन्दिरसँ मिलैत अछि।

मन्दिरक प्रागणमे सीतामाता ओ हनुमानजीक मन्दिर अछि। सन् २०१३ सँ मन्दिर एवम् मन्दिरक लगपासक परिसरक जीर्णोद्धारक कार्यक्रम चलि रहल अछि जकर पूर्णतापर मन्दिरक भव्यता ओ सौन्दर्य पराकाष्ठापर पहुँचि जाएत।

कहल जाइत अछि जे लव-कुश हनुमानजीकेँ अहीठाम बान्हि देने रहथि। अश्वमेध यज्ञक घोड़ाकेँ बान्हि देने रहथि। लक्षमण, भरत, शत्रुध्न सभ एतहि पराजित भए गेल रहथि। हुनका सभकेँ जीएबाक हेतु देवता सभ अमृत अनने रहथि ओ शेष अमृतकेँ माटिमे गाड़ि देल गेल छल। तैँ एहि शहरक नाम अमृतसर पड़ल।

हम सभ अमृतसरक प्रसिद्ध दुर्गिआना मन्दिरमे घन्टो घुमैत रहलहुँ। पूजा-पाठ केलहुँ ओ एकर भव्यताक आनन्द उठेलहुँ। पं. मदन मोहन मालवीयजीक बारम्बार ध्यान अबैत रहल जे एहि मन्दिरकेँ वर्तमान स्वरुपक नायक रहथि।

घुमैत-घुमैत हम सभ थाकि गेल रही। रौद बहुत करगर रहए। हमर श्रमतीजी सेहो बहुत थाकि गेल छली। अस्तु, हम सभ ओहिठाम सँ सोझे सीपीडब्ल्यूडी गेष्ट हाउस स्थित अपन डेरा पहुँचि गेलहुँ।

घर घुमैत काल रस्ता भरि सोचैत रहलहुँ जे एतेक भारी तीर्थ स्थानमे जालियावाला वाग सन क्रूड़, वर्वर, नरसंहार केना भेल? सही कहल जाइत अछि जे सत्ताक नशामे मनुक्ख पिशाच भए जाइत अछि। ओकर मानवीय संवेदना नष्ट भए जाइत अछि। मनुक्ख ओकरा लेल मात्र एकटा मशीन रहि जाइत अछि जे आदेशक पालन करैत-करैत अपनहि बन्धु-बान्धवक खूनक धार बहा सकैत अछि। जेना कि जालियावाला वागमे अंग्रेजी हुकुमत केलक। हिन्दू, मुसलमान, सिख आदि सभ धर्मक लोक लोकक खून एक भए गेल छल, जालियावाला वाग चिकरि-चिकरि कए कहि रहल छल-

“एहि अत्याचारी निकृष्ट अंग्रेजी हुकुमत, आब बर्दास्त जोग नहि रहल। आब आओर जुलुम नहि सहल जाएत...!”

जालियावाला वागक काण्ड सम्पूर्ण देशक आत्माकेँ झकझोरि

देलक। एकर बदलामे उधम सिंह विलायत जा कए माइकल डायरक[1] हत्या कए देलक आ स्वयं फाँसी चढ़ि गेल।

दोसर दिन साँझमे हमरा लोकनि बाधा वोर्डरपर होमएबला झण्डा उतारबाक कार्यक्रम देखए गेलहुँ। ओहि कार्यक्रमक आकर्षण अमृतसर गेनिहार प्रत्येक पर्यटककेँ रहैत अछि। भारत ओ पाकिस्तानक सीमा सुरक्षा बलक जवान सभ नाना प्रकारक करतब करैत आगू-पाछू बढ़ैत रहैत छथि। कखनो टाँगकेँ धराम-दे आगाँ तँ कखनो हाथकेँ फरकबैत पाछाँ करैत ओ सभ एक-दोसरकेँ कखनो सिनेह करैत तँ कखनो आक्रमक मुद्रामे आबि जाइत छथि। अपना देशक लोक जतेक बेर हिन्दूस्तान जिन्दावाद कहैत ततेक बेर सटले सीमापर सँ ओहि देशक नारा सभ लगैत रहैत अछि।

कुल मिला कए सम्पूर्ण वातावरण देश-भक्तिसँ भरल रहैत अछि। उत्तेजक ओ भावुक महौलक वावजूद सैनिक सभ संयत रहैत छथि आ क्रमश: अपन-अपन देशक झण्डा उतारि कए वधा सीमाक गेटकेँ बन्द कए लैत अछि।

विशेष अवसर जेना ईद, दियाबाती आ दुनू देशक स्वतंत्रता दिवस आदिपर एक-दोसरकेँ मिठाइक डिब्बाक आदान-प्रदान सेहो होइत अछि। कुल मिला कए ई कार्यक्रम दुनू देशक नागरिकक वर्तमान परिस्थितिपर सोचबाक हेतु मजबूर कए दैत अछि।

दुनू देशक लोक हजारोक तादादमे आमने-सामने बैसए आ शान्तिपूर्ण महौलमे मनोरंजक कार्यक्रम देखए से अपना-आपमे एकटा मिसाल अछि। भए सकैए एकर सकारात्मक प्रभाव दुनू देशक जनता ओ सरकारपर पड़ए।

---

[1] माइकल डायर जालियावाला वाग काण्डक समय पंजावक लेफ्टिनेन्ट जेनरल छल।

एवम् प्रकारेण अमृतसरक संक्षिप्त प्रवासक अन्त भए रहल छल। हमरा लोकनि प्रात भेने अमृतसर दिल्ली शताब्दी एक्सप्रेस पकड़ि कए दिल्ली विदा भए गेल रही। सुविधा सम्पन्न द्रुतगामी ई गाड़ी शीघ्रे घर पहुँचि गेल आ हम सभ यात्राक चर्च करैत कतेको दिन धरि आनन्दमे रहलहुँ।

◌

भगवानक अपन देशमे

विभागीय प्रशिक्षण कार्यक्रमक अन्तर्गत हमरा लोकनिकेँ अन्तर्देशीय भ्रमण करबाक छल। हमरा संगे ३५ गोटेक समवर्गीय लोकक समूह छल जे भारत सरकारमे अवर सचिवक पदपर कार्यरत छलाह। प्रशिक्षण संस्थान (ISTM)क निर्णयक अनुसार जुलाई २००९ मे हमरा सभकेँ कोच्ची होइत केरलक दक्षिणी भाग मुन्नार, टेकाड़ी, अलेपी भ्रमण करबाक अवसर भेटल।

आइएसटीएमक प्रांगणसँ ३५ आदमी एकट्ठे डिलक्स बसमे बेराबेरी चढ़लहुँ। हमरा सभहक प्रशिक्षक कही, मार्गदर्शक कही आ कि सरकारी प्रतिनिधि- से संस्थानक उपनिदेशक छलाह। ओ सदिखन हमरा सभक संगे रहथि, हमर सभक मार्गदर्शन करथि।

हमर संगी प्रशिक्षणार्थी सभ देशक विभिन्न भागसँ रहथि। ताहिमे तीन गोटे केरलक छलाह। हुनके सभकेँ एहि भ्रमण कार्यक्रमक मुनिटर बनाओल गेल, कारण हुनका सभकेँ केरलक भाखा (मलयालम), भूगोल एवम् लोकक जानकारी रहनि। वो सभ एहि जिम्मेदारीकेँ तत्परतासँ निर्वाह केलथि। कोन कोन चीज देखी,

ककरासँ केना गप्प करी आ कोनो स्थानीय समस्यासँ केना निपटि ली ताहिमे वो सभ माहिर रहथि। किओ स्थानीय लोक आएल तँ ओकरा संगे मलयालममे गप्प कए लेथि आ हम सभ मुहेँ तकैत रही। डिलक्स बससँ हम सभ दिल्ली हवाई अड्डा पहुँचलहुँ। करीब एक बजे दुपहरियाक समय आवश्यक जाँच पड़तालक बाद हम सभ बेराबेरी हवाई जहाजक चेकिंग कराओल आ अपन अपन टिकट लए हवाई अड्डाक आन्तरिक प्रतीक्षालयमे पहुँचलहुँ। थोड़बे कालमे हवाई जहाजक बोर्डींग प्रारम्भ भेल। लोक सभ छोटकी बसमे सबार भए जहाज दिस बढ़ल। बस कनिक्के कालमे जहाजक सीढ़ी धरि पहुँचि गेल। ओहिठाम चुस्त महिला कर्मचारी सभ आगन्तुक व्यक्ति सभक स्वागत करैत आगा जहाजमे बैसबाक स्थान इंगित करथि। थोड़बे कालमे सभ अपन अपन स्थान ग्रहण केलक। जहाजमे उड़बाक हेतु आवश्यक सुरक्षा सावधानीक बारेमे विमान परिचारिका उद्घोषणा केलीह। आपात्कालीन द्वार लग बैसल यात्री सभकेँ खास कए सिखाओल गेल जे आपत्ति कालमे ओहि द्वारकेँ केना खोली। आवश्यकता भेलापर ऑक्सीजनक मास्क केना लगाबी, सेहो बताओल गेल। ई सभ होइते छल कि यात्री सभकेँ अपन-अपन मोबाइल बन्द करबाक वा फ्लाइट मोडमे रखबाक चेतौनी देल गेल। देखिते-देखिते जहाज गुड़कए लागल, पहिया सभ सरकए लागल, घिरनी सभ नाचए लागल। आ गन्न-गन्नक आवाज करैत जहाज उड़ि गेल। किछुए सेकेण्डमे हम दिल्लीक आकाशपर उड़ि रहल छलहुँ।

दिल्लीसँ कोच्ची जाएबला हवाई जहाज असलमे त्रिवेन्द्रम धरि जाइत अछि। अधिकांश यात्री कोच्ची उतरि जाइत छथि। किछु यात्री सोझे त्रिवेन्द्रम धरि सेहो जाइत छथि। वो सभ कोच्चीमे जहाजकेँ उतरलाक बादो ओहीमे बैसल रहैत छथि।

दिल्लीसँ कोच्ची जएबामे करीब तीन घन्टा समय लागल। एकहि जहाजमे ३५ गोटे दिल्लीसँ कोच्ची जाइत रही, एक दोसरकेँ जनैत रही, आ उद्देश्यो एकहि रहए, तैँ जहाजमे उत्सवक महौल छल। जलखै भेलैक, चाह पान भेलैक, सभगोटे आनन्दमे रहथि कि घोषणा भेल जे जहाज थोड़बे कालमे कोच्ची उतरि जाएत। जहाज क्रमशः नीचा आबए लागल। खिड़की सभ खोलि देल गेल आ देखिते-देखिते जहाज कोच्ची अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डापर उतरि गेल।

कोच्ची हवाई अड्डासँ समान लए हम सभ बाहर भेलहुँ। सामने बस लागल छल। सभगोटे अपन-अपन सामान पाछाँमे राखि बससँ चाहक कारखाना देखए विदा भेलहुँ।

साँझक समय लगचिआएल रहैक। चाहक कारखाना बन्द भए जइतैक तैँ सभगोटे पहिने होटल नहि जा कए चाहक कारखाना पहुँचलहुँ। ओहिठाम चाहक हरियर पातसँ लए कए ओकरा डिब्बामे बन्द हेबाकाल धरिक सम्पूर्ण प्रकृया देखएमे आओल। केना चाहक हरियर पत्ती सभकेँ साफ कएल जाइत अछि, सुखाओल जाइत अछि, टुकड़ी-टुकड़ी काटल जाइत अछि। तखन ओकरा कै प्रकारक चाहक श्रेणीमे छाँटल जाइत अछि। पत्ती बला चाहकेँ फराक कए देल जाइत अछि आ ओकरा अलग डिब्बामे बन्द कए विदेशी बाजारमे उच्च मूल्यपर बेचल जाइत अछि। तकर बाद जे झरूआ रहैत अछि, तकरा अलग डिब्बा सभमे बन्द कएल जाइत अछि। ओहूमे गुणवेत्ताक आधारपर फराक-फराक डिब्बामे राखल जाइत अछि।

ताज्जुबक बात ई अछि जे कारखानामे काज केनिहार कर्मचारी बिक्रीक खिड़कीपर ओहिना चाह किनैत अछि, जेना किओ सामान्य व्यक्ति किनैत छथि। ओकरा कोनो रियायत नहि देल जाइत अछि।

हमरा लोकनि जँ कनिक आओर विलम्बसँ अबितहुँ तँ चाह बनेबाक कारखाना नहि देखितहुँ, कारण किछु कालक बाद ओ बन्द भए जइतैक। अन्दरसँ चाहक पत्ती बनबाक प्रकृया देखि बुझि छगुन्तामे पड़ि गेलहुँ। चाहक कतेक प्रकार कोना होइत अछि, कोना नीक पत्तीकेँ कम नीक आ अधलाह पत्तीसँ फराक कए देल जाइत अछि। अधिकांश उच्चकोटिक पत्ती बाहर पठा देल जाइत अछि जाहिसँ विदेशी मुद्राक उपार्जन होइत अछि। साँझ पड़ल जाइत रहैक। हमरा सभ बसमे बैसि कए होटल विदा भए गेलहुँ। थोड़बे कालमे होटल आबि गेल।

हल्दी लगय ने फिटकिरी, काम चोखा होय। सएह परिस्थिति होइत अछि सरकारी आदमीक सरकारी यात्राक। अपना किछु नहि करबाक, सभ व्यबस्था सरकारी, खर्चा सरकारी, बस अपने संग भए जाउ। हमरा लोकनिक यात्रा सरकार द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षणक अंग छल। सभ किछु सरकारक तरफसँ छलैक। अस्तु, आनन्दे-आनन्द छल। हम सभ आलीशान होटलक वातानुकुलित कक्षमे ठहरल रही। एक कोठरीमे दू गोटे। भोजन, जलखैक उत्तम प्रवंध। मेनुमे सँ मनपसन्द भोजन चुनि लिअ, जतेक खाउ। हम धोतीकेँ केरलक स्टाइलमे पहिरि कैन्टीनमे जाइ तँ स्थानीय लोक सभ आ हमर केरलक संगी सभ बहुत प्रसन्न होथि।

कोच्ची शहरमे १३४९ ई.सँ बन्दरगाह अछि। एतए समुद्रीमार्ग सँ अरब,चीन, ओ यूरोपसँ व्यापारी अबैत छलाह। एहिठाम सँ सैकड़ो वर्ष धरि मसालाक व्यापार होइत रहल। कोच्चीक होटलसँ समुद्र एवम् ओहिमे चलैत जहाज सभ कोठरीमे बैसले बैसल देखाइत छल।

राति भरि हम सभ ओहि होटलमे निश्चिंतसँ सुतलहुँ। भोरे उठि

कए प्रात: भ्रमण केलहुँ। लगपास कैटा आकर्षक भवन सभ देखाए। होटल आबि स्नान ध्यान कए जलखै हेतु सभगोटे होटलक भोजनालयमे जमा भेलहुँ। जलखैक उमदा इन्तजाम रहैक। सभगोटे यथेष्ट जलखै कए डिलक्स बसमे सवार भए मुन्नारक हेतु विदा भेलहुँ। केरल राज्यक पश्चिमी घाटीक पर्वतीय श्रृँखलामे मुन्नार शहर पड़ैत अछि। ई पहाड़ी ब्रिटिश राजमे महामहिम लोकनिक विश्रामागार छल। चारूकात पसरल पर्वतीय क्षेत्र चाहक बगान सभ हेतु जगत प्रसिद्ध अछि। एहिठाम स्थित इरबिकुलम राष्ट्रीय उद्यानमे लुप्त प्राय पहाड़ी बकड़ा देखएमे अबैत अछि। एहिठाम स्थित लक्कम जलप्रपात, ओ २६९५ मीटर अनामुदी शिखर पर्यटकक आकर्षणक केन्द्र अछि।

नल्लथानी एस्टेटमे अवस्थित चाहक संग्रहालय देखलासँ एहि इलाकाक चाहक उत्पादनक इतिहासक अन्दाज लगैत अछि। ट्रेकींगक हेतु एहिठामक पहाड़ी बहुत उपयुक्त अवसर प्रदान करैत अछि। एतए नीलकुरीन्जीक फूल उगैत अछि। ई फूल १२ बर्खमे एकबेर फुलाइत अछि। पहाड़ीक शिखरपर चढ़ैत काल मातुपेट्टी बाँध ओ कुण्डला बाँध बोटींग ओ पिकनिक हेतु प्रसिद्ध अछि। मुन्नारक दर्शनीय स्थानमे फोरेस्ट गार्डेन अछि। ई मुन्नारसँ दू किलोमीटरपर अवस्थित अछि। मुन्नारसँ १३ किलोमीटर स्थित इको प्वाइन्ट एकटा प्रमुख पर्यटक स्थान अछि। एहिठाम लोकर्कें अपने आवाजक प्रतिध्वनि सुनाइ पड़ैत छैक। इको प्वाइंटपर बैसि मोनमे असीम शान्ति लगैत छल। पहाड़ी सभसँ घेराएल ओहि स्थानपर बैसि सभ बेराबेरी चित्र खिचेलथि। सभगोटे किछु-ने-किछु चिकरि कए ओकर प्रतिध्वनि सुनथि। ई प्रकृया कतेको काल चलैत रहल।

मुन्नारक चाय बगानक विलक्षण दृश्य, ओकर हरिअरी एवम्

पहाड़ीसँ आच्छादित ओहि स्थानक मनोरम दृश्यकेँ अवलोकन करैत प्रात: काल हम सभ मुन्नारसँ टेकाड़ीक हेतु बससँ विदा भेलहुँ। इडुक्की वन्यजीव अभयारण्य केरलक थाडुपुझा एवम् उदुम्पंचोल तालुकाक ७७ वर्ग किलोमीटर क्षेत्रमे पसरल अछि। समुद्रतलसँ लगभग ४५०-७४८ मीटरक ऊँचाईपर स्थित एहि अभयारण्यक अन्तर्गत चेरूथनी आओर परियर नदीक मध्य भागमे जंगल पाओल जाइत अछि। अभ्यारण्यक मध्यमे एक सुन्दर झील अछि जकर चारूकात सदाबहार उष्णकटिवंधीय बरखा वन ओ पतझड़ी वनक्षेत्र पसरल अछि। एहिमे पर्यटक नौकायनक आनन्द लए सकैत छथि।

एहि अभयारण्यमे हाथी,वाइसन, सांबर हिरण, जंगली कुकुर, जंगली बिलाड़ि, बाघ, जंगली सूगर आदि जानवर देखल जा सकैत अछि। थोडुयुझा कोच्चिसँ लगभग ५८ किलोमीटर दूर अछि। थेकाड़ीक नाम लितहि हाथीक झुण्ड, पहाड़ीक अन्तहीन श्रृंखला एवम् चारूकात पसरल मसाला सभक सुंगधक स्वत: स्मरण भए जाइत अछि। ओहिठाम स्थित पेरियर वन्यजीव अभयारण्यक विश्रामालयमे हमरा लोकनिक ठहरबाक व्यबस्था छल। बीचो-बीच जंगलमे अवस्थित एहि विश्रामालयमे पहुँचि सभसँ पहिने हम सभ भोजन केलहुँ। कनी-मनी विश्रामो भेलैक आ तकर बाद सभ मोटर बोटपर चढ़ि मानव निर्मित तालमे घुमए विदा भेलहुँ। ई ताल मुल्लापेरियर बाँधसँ बनाओल गेल अछि। एहिठामक सभसँ पैघ आकर्षक हाथीक झुण्ड थीक जे तालक लगपास खेलेबाक हेतु अबैत रहैत अछि।

संयोगसँ हम सभ भारी संख्यामे मौजूद हाथीक झुण्ड देखलहुँ। बाघक दर्शन नहि भए सकल। मुदा आओर कए तरहक जानवर सभ खास कए हरिणक झुण्ड सभ देखबाक अवसर भेटल। अतिथि गृहमे

विश्राम कए हमरा लोकनि केरलक गाँव घुमए विदा भेलहुँ।

भोर भेने हम सभ केरलक गाँव देखए बससँ विदा भेलहुँ। बसक यात्रामे हमर स्थान सभ ठाम एकहि रहैत छल। आगासँ दोसर सीटक बामकात। सभकेँ ई बूझल रहैक आ हमर संगीसभ उदारता पूर्वक एहि स्थानकेँ हमरा हेतु छोड़ि दैत छलाह। हमरा सभक संगे केरलक रहनिहार तीनटा संगी मार्ग संचालन कए रहल छलाह। एहिसँ स्थानीय लोक सभसँ सम्पर्क/समन्वय आसान भए गेल छल।

कनी कालमे हम सभ केरलक एकटा गाममे पहुँचि गेलहुँ। रस्तामे जे मनोरम दृश्य देखैत गेलहुँ ओहिसँ मोन आनन्दित रहबे करए। नाना प्रकारक मसाला सभक उत्पादन होइत एवम् ओकर गाछ सभ देखलहुँ । केरलमे मसालाक व्यापार जमानासँ होइत अछि। चीन, सहित अनेकानेक विदेशी व्यपारी केरल आबि कए मसाला सभ लए जाइत छलाह जाहिसँ एहिठामक राजा सहित व्यापारी वर्गकेँ बहुत आर्थिक लाभ होइत छल।

केरलक गाँव, गाँव नहि थिक। ई छोट-छीन शहर सभहक कान कटैत अछि। चारूकात गहींर रंग सभसँ रंगल, ढंगल सुसज्जित घर सभहक भरमार अछि। गामक रोड सभ पक्का अछि। बिजली, पानि, दोकान, बैंक, एटीएम, सर्वसुलभ अछि। सभसँ ऊपर एहिठामक आम नागरिक छथि, जे अतिशिक्षित एवम् व्यवहार कुशल छथि। महिला सभमे पुरुषे जकाँ शत-प्रतिशत शिक्षा अछि। मानवीय सम्पदामे ई राज्य देशक नेतृत्व करबाक क्षमता रखैत अछि आ से देखाओ रहल अछि।

केरलक गाम सभमे घर सभक देबाल लाल, पीयर, हरियर एकदम सुर्ख टूह-टूह रंगल भेटत। कैटा घर दुमहलो भेटत। एहिठामक

साइते कोनो एहन घर होयत जकर किओ-ने-किओ अरब देशमे काज नहि करैत हो। तैँ सभक आर्थिक स्थिति टनगर अछि। गामो सभमे मौलिक सुविधा उपलब्ध अछि। इएह कारण अछि जे लोक सभ महानगरमे जीवन भरि रहि गेलाक बादो आपस अपन गाम घर चलि अबैत अछि। लोकक संख्या एहिठाम अपेक्षाकृत कम बुझाएत, कारण बहुत रास लोक रोजी रोटीक फिराकमे बाहर चलि गेल अछि।

कनीकालमे हमर सभक बस एकटा गाममे रूकल। बेराबेरी हम सभ बससँ उतरलहुँ। हम सभ कतए कतए जाएब, की-की देखब, के सभ संगे रहताह, सभ पूर्व निर्धारित छल। निर्धारित स्थानपर केरल सरकारक सम्बन्धित अधिकारी सदल-बल मौजूद रहैत छलाह। व्यबस्था ठीक होइक ताहि लेल केरल सरकारकेँ आइएसटीएम (ISTM) द्वारा पहिनेसँ सूचना देल गेल छल। अस्तु, स्थान विशेषपर पहुँचतहि आब भगत प्रारम्भ भए जाइत छल।

केरलक ओहि गाँवमे (SHG) स्वयं सहायता समूह द्वारा कएल जा रहल काज देखैक हेतु हम सभ गेल रही। केरल सरकार सहकारी समिति सभक माध्यमसँ एहि तरहक स्वयं सहायता समूहक संवर्धन करैत छल जाहिसँ सदस्य लोकनि (जे ओही गामक महिला सभ छलीह) स्वाबलंबी होथि। कनी मनी पूँजी लगा कए गामक आवश्यकताक समस्त वस्तुकेँ घरे-घर उत्पादन कए ओहीठाम स्वयं सहायता समूह द्वारा संचालित दोकान सभमे बेच देल जाइत छल। एहिसँ लोककेँ शुद्ध वस्तु कम दामपर तँ उपलब्धो होइत छल संगहि ग्रामीण महिलामे स्वत: रोजगार सेहो उत्पन्न होइत छल। ई थिक सहयोग द्वारा सरल, सफल जीवन जीबाक बुधियारी।

हम सभ ओहि दोकानमे किछु किछु किनलहुँ। अधिकांश लोक

केराक बनल नमकीन कीनलाह। किछु गोटे बच्चा सभहक उपयोगी चीज, स्थानीय मधुर आदि सेहो लेलाह। सभसँ आकर्षक छल ओहिठामक महिला सभक विनम्र व्यवहार। ओहिठाम पंचायती व्यबस्था बहुत कारगर छल। गामक लोक सभक भागीदारीकेँ प्रमुखता देल जाइत छल। कनीकालमे स्थानीय पंचायतक प्रमुख एवम् ब्लॉक अधिकारी हमरा लोकनिक विधिवत स्वागत केलाह। भाषणवाजी भेल। कार्यक्रम समाप्तिक बाद हमरा लोकनि एहि गामक विकास यात्राक सुखद अनुभवक संग बसमे बैसि आगा बढ़ि गेलहुँ।

कनी कालक बाद बस एकटा स्कूलक प्रांगणमे रूकल। स्कूलक आगामे बहुत रास खाली स्थान छल जकरा मनरेगा कार्यक्रमक अधीन ग्रामीण मजदूर सभकेँ लगा कए विद्यार्थी सभक हेतु खेलक मैदान बनाओल जा रहल छल। स्थानीय पंचायतक प्रधान उपस्थित छलाह आ सैकड़ो ग्रामीण जन बनिहार काज कए रहल छल। सभक पासबुक हमरा सभकेँ देखाओल गेल जाहिसँ स्पष्ट होइत छल जे ओकर सभहक दैनिक मजदूरी सोझे ओकर सभक बैंक खातामे चलि जाइत अछि। सभ व्यबस्था चाक चौबन्द ओ कानून सम्मत लगैत छल। स्थानीय स्कूलमे लघु कार्यक्रम छल। हमरा सभ ओहिमे भाग लेलहुँ। एकर उद्देश्य छोट-छोट बच्चा सभकेँ भारत सरकारक अधिकारीक समूहसँ मुखातिव करब छल। कार्यक्रमक समाप्तिक बाद हम सभ बसमे बैसले छलहुँ कि देखै छी जे मजदूर सभ आपस जा रहल अछि। सभटा मात्र खानापुरी छल। कनी कालमे तँ सभटा लोक ओहिठाम सँ नदारद भए गेल। एकर बाद हम सभ एलेपीक हेतु विदा भेलहुँ।

अलेपी केरलक आलाप्पुझा जिलाक मुख्यालय थिक। २०१६ ई० क एक सर्वेक अनुसार ई भारतक स्वच्छतम शहर अछि। कोच्ची

एहिठाम सँ ५३ किलोमीटर दूरीपर अछि। कैनाल, वैकवाटर, समुद्र तट एवम् लैगूनक भरमारक कारण एकरा पूबक भेनीसक नाम देल गेल अछि। एकर उत्तरमे कुमारकम एवम् कोचीन अवस्थित अछि।

एलेपीक पास स्थित पुन्नामदा तालपर प्रतिसाल द्वितीय शनि दिन नेहरू ट्राफी बोट रेसक आयोजन होइत अछि। ई भारतमे एहि तरहक सभसँ प्रसिद्ध प्रतियोगिता अछि। एहि प्रतियोगिताक दौरान नाओकेँ उनटि जेबाक घटना पछिला साल भेल रहैक जाहिमे किछु गोटेक जान चलि गेलैक तथापि लोकक उत्साहमे कमी नहि भेल अछि। आबो ई प्रतियोगिता बहुत लोकप्रिय अछि।

एलेपी पहुँचतहि हमरा लोकनिकेँ सातटा ग्रुपमे फराक-फराक बाँटि देल गेल। एक नाओपर छह आदमी छलहुँ। सभगोटे अपन-अपन नाओपर सवार भए अप्रवाही जल (वाकवाटर)क आनन्द लेबाक हेतु व्यग्र छलहुँ।

नाओपर सवार होइतहि ओकर नाविक हमरा लोकनिक स्वागत केलाह। सभकेँ शीतल पेय देल गेल। तकर बाद हम सभ अपन-अपन वस्त्र बदललहुँ। इतमिनानसँ अप्रवाही जल (वाकवाटर)क यात्रा प्रारम्भ भेल। ओ नाओ अपना आपमे पूर्ण छल। ओहिमे वातानुकुलित कोठरीमे पर्यटक सभकेँ सुतबाक इंतजाम छल। आगूक हिस्सामे भोजन पटल आ कुर्सी लागल छल जाहिपर अहाँ बैसि कए यात्राक आनन्द लए सकैत छी। भोजन कालमे तँ ओकर उपयोग होइते छल।

कैटा हमर संगी सभ नाविकक स्थानपर बैसि नाओकेँ खेवाक प्रयास करैत चित्र खिचओलाह। आपसमे गप्प-सप्प करैत, नाओक हिलकोरक संग आगाँ चलैत समय केना बितैत छल, तकर किछु अन्दाज नहि चलैत छल। बीच-बीचमे चाह, जलखै सेहो होइत रहैत

छल। नाओ नहि, ओ छोट-छीन चलैत-फिरैत घर छल। असलमे केरलक ओहि भागमे स्थानीय निवासी सभहक ई एकटा प्रमुख जीविका अछि। ओहि हेतु हुनका सभकेँ सरकारक तरफसँ आर्थिक सहायता सेहो देल जाइत अछि जाहिसँ ओ सभ नाओ कीनि सकथि, अवश्यक उपकरण ओहिमे लगा सकथि।

एहि प्रकारेँ बैंक वाटरमे नाओ चलायब ओहिठाम एकटा लघु उद्योगक रूप लए लेने अछि जाहिसँ हमरो लोकक जीवन यापान होइत अछि, संगहि यात्री लोकनिकेँ आनन्द तँ होइते अछि। वैकवाटरसँ सटले दुनू कात लोक सभक सुन्दर-सुन्दर घर अछि। ओ सभ पानिक एतेक लगीच रहबाक अभ्यस्त छथि एवम् तकर आनन्दो उठबैत छथि। नाओ चलैत-चलैत बिच्चेमे एकटा भोजनालय पर रूकल। ओ भोजनालय तालक बीचेमे बनल छल। नाओकेँ ओहिसँ सटाक बड़का देल गेल आ हमरा लोकनि एक-एक कए उतरि ओहि भोजनालयमे पहुँचि चाह-पान केलहुँ। किओ-किओ किछु-किछु खेबो केलाह। कनीकालक बाद हम सभ फेरसँ नाओपर सवार भए आगा बढ़लहुँ।

समुद्र वो अप्रवाही जल (वाकवाटर)क मिलनक दृश्य देखए जोगर छल। करीब-करीब दू घन्टा हम सभ अप्रवाही जल (वाकवाटर)नाओपर घुमैत रहलहुँ। अन्ततोगत्वा हमरा लोकनिक नाओ अपन ठेकानपर पहुँचल। नाओकेँ वान्हि देल गेल। राति हमरा सभकेँ ओही नाओपर बिताबक छल। नाओसँ तालमे चलैत कै बेर अभूतपूर्व दृश्य देखा जाइत छल। एकटा चिड़ै पानिमे ठाढ़ लकड़ीक टुनगीकपर अभूतपूर्व दृश्य उत्पन्न केने छल। अबैत-जाइत छोट-पैघ अनेको नाओपर बैसल पर्यटक लोकनि एक-दोसरकेँ देखि कए किसिम-किसिमक मनोरंजक आवाज देथि, इसारा करथि। हमर संगी

सभ आन-आन जहाजमे आसे-पास रहैत छलाह आ सभ एक-दोसरसँ किछु-ने-किछु संकेतक माध्यमसँ विचार विनमय करैत रहैत छलाह।

कार्यालयक नित्यप्रतिक उबाउ वातावरणसँ मुक्त प्रकृतिक आँगनमे स्वच्छन्दताक जे अनुभव भेल, जाहि प्रकारक नूतन उर्जाक संचार भेल, तकर वर्णन करब असम्भव। नाओपर राति बितायबाक ई हमर पहिल अनुभव छल। नव विवाहित दम्पतिकेँ ई सुविधा सभ बहुत आकर्षित करैत अछि। नाविक पर्यटक हेतु ओहिठाम भोजनक व्यबस्था करैत अछि। हमरो सभक रात्रिक भोजनक उत्तम व्यबस्था छल। आमिष खेनिहारक हेतु भात संगे अंडा-कड़ीक उत्तम प्रवंध छल मुदा हमरा हेतु निरामिष भोजनक व्यबस्थामे कनी-मनी असुविधा भेलैक।

हमरा सभक संगे एकटा सरदारजी छलाह। ओ स्वभावसँ बहुत हँसोर छलाह। भोजनक बादो बहुत राति धरि गीत-नाद होइत रहल। चारूकात जलमय आ ताहिमे ठाढ़ नाओमे ठहरल यात्री। विलक्षण द्दश्य छल। तालक कछारपर बनल घर सभसँ छनि-छनि कए अबैत प्रकाश गजब, मनोरम द्दश्य उत्पन्न करैत छल। एहि आनन्दमे कखन आँखि लागि गेल से नहि बुझलिऐक। भोरे-भोर हमरा सभक आपसी छल। उठि-उठि हम सभ नाओसँ उतरलहुँ। बस लागल छल। बसमे चढ़ए हेतु किछु काल पैरे-पैरे चलए पड़ल। सभकेँ एकटा विलक्षण आनन्दपूर्ण अनुभवक बात कनी अफरा-तफरी भए गेल रहैक, कारण ओहि दिन कोच्ची जा कए वायुयानसँ दिल्ली विदा हेबाक रहैक। बससँ ओतए पहुँचएमे करीब घन्टाभरिक समय लागल। कोच्ची शहरकेँ चीरैत हम सभ तेजीसँ आगू हवाई अड्डापर पहुँचलहुँ। ओतए पहुँचैत पता लागल जे समयसँ पहुँचि गेल छी। कोनो चिन्ताक बात नहि।

आवश्यक जाँच-पड़तालक बाद हमरा लोकनिक चेकिंग भए गेल। हवाई जहाज त्रिवेन्द्रमसँ आएल छल। हम सभ जहाजमे बैसलहुँ आ देखिते-देखिते जहाज दिल्ली दिस उड़ि गेल।

◌

रामकृष्ण परमहंसक देशमे

अपना ओहिठाम कलकत्ता माने कोलकाताक नाम के नहि सुनने होएत? पहिने तँ परदेशक माने होइत छलैक कलकत्ता। सभ महानगरमे सभसँ लग छलैक। समयान्तरसँ कोलकाताक महत्व कम होइत गेल। स्थानीय बनाम बाहरीक मुद्दा गरमाइत रहल। संगहि ओहिठाम नोकरी-चाकरीक अवसर सेहो सिमटैत गेल। परिणामत: लोक सभ रोजी-रोटीक फिराकमे जहाँ-तहाँ पसरि गेल। यातायात एवम् संचारक साधनमे निरन्तर विस्तार एहि प्रकृयामे अओर गति अनलक। तकर माने ई नहि जे कोलकाताकेँ लोक निठ्ठाहे बकसि देलक। सस्त, सुभ्यस्त जीवन रक्षाक व्यबस्था अखनो जतेक कोलकातामे अछि, आन महानगरमे से दुर्लभ थीक।

कलकत्ता पहिने एकटा गाम छल। बंगालक राजधानी तँ मुर्शिदावादमे छल। इस्ट इन्डिया कम्पनी स्थानीय जमींदारसँ तीनटा गाम ३०००/- रूपैया सालाना मुआबजापर कीनलक जाहिमे एकटा कोलकाता छल। एतहिसँ शुरू भेल भारतक दुर्भाग्य गाथा। सन् १७७२ मे भारतक राजधानी कोलकाता भए गेल जे १९११ धरि बनल रहल। १९१२ मे भारतक राजधानी कोलकातासँ हटि कए दिल्ली आबि गेल। ताहि संगे बहुत रास स्थानीय लोक सभ जे सरकारक कर्मचारी रहथि सेहो दिल्ली आबि गेलाह। देशक स्वतंत्रताक बाद पूर्व बंगालकेँ

पाकिस्तानमे चलि गेलाक बाद कोलकाताकेँ जबरदस्त आर्थिक, राजनीतिक झटका लागल ।

कोलकाता महानगरमे भूतकालसँ अद्यावधि कतेक व्यक्तिक प्रादुर्भाव भेल जे भारतक गौरव समस्त विश्वमे बढ़बैत रहलाह। काजी नजरूल इस्लाम, रवीन्द्र नाथ टैगोर, वंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय, सरत चन्द्र चट्टोपाध्याय, राम कृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, सुनीतिकुमार चट्टोपाध्याय, राज राम मोहन राय, मदर टेरेशा, इश्वर चन्द्र विद्यासागर, जगदीश चन्द्र वोस, सत्येन्द्र नाथ वोस, सीभी रमन, अमर्त्य सेन, अरविन्दो, खुद्दी राम वोस, चितरंजन दास, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, महाश्वेता देवी, सत्यजीत रे, सचिन देव वर्मन सहित अनेकानेक महापुरुष जीवनक विभिन्न क्षेत्रमे एहिठाम सँ काज कए यशस्वी भेल छथि, देशक मान-सम्मानकेँ बढ़ओने छथि। एहि हिसाबे समस्त कोलकाता एकटा महातीर्थ थीक। एकर स्थान भारतमे अद्वितीय, विलक्षण अछि।

कलकत्ताक नाम तँ बच्चेसँ सुनैत रही मुदा ओहिठाम जेबाक अवसर बहुत बादमे भेटल। सभसँ पहिने सन् २००७ मे ओतए गेल रही। ओहि समय पारिवारिक कारणसँ घुमबा फिरबाक महौल नहि छल। तथापि अबैत जाइत अचक्के जे देखा गेल। श्राद्धक क्रममे व्राह्मण भोजनक अद्भुत अनुशासन ओहिठाम देखलहुँ जे किओ एकटा अनाज छुतओलक नहि। अपना ओहिठाम तँ जतेक लोक खाइत अछि, ताहिसँ बेसी नेराबैत अछि, तखने ओकरा संतोष होइत अछि।

दोसर बेर २००८ मे पूरी यात्राक रस्तामे कोलकाते होइत गेल रही, मुदा ओहू बेर मूल ध्यान पूरी जेबा पर लटकल रहए, तैँ कोलकाता दर्शन गाहे- बगाहे धरि सीमित रहि गेल।

तेसर बेर २००९ मे निआरि कए गेलहुँ जे एहि बेर कोलकाता घुमब। ओहि बेर कोलकाताक किछु अन्दाज लागल। दिल्लीसँ वायुयानसँ सपत्नी कोलकाता हेतु विदा भेलहुँ। योजना छल जे ओहिठाम लगपासक स्थान नीकसँ घुमब। वायुयान बेस ऐल-फैल छल। सवारी सभ अधिकांश बंगाली छलाह। एयर इन्डियाक ई नव विमान कलकत्ता दिल्लीक बीचमे प्रारम्भ भेल छल। एकहि बेरमे बहुत रास यात्री उड़ि सकैत छल। रस्तामे खान पानक सेहो व्यबस्था छल। अस्तु, किछु घन्टाक मनोरंजक यात्राक बाद हम सभ हावड़ा स्थिति अपन कुटुम्बक ओहिठाम पहुँचि गेलहुँ।

हावड़ाक वोटैनिकल गार्डेन ओहिठामसँ बहुत लग छल। अस्तु, भोरमे टहलए ओतए चलि गेलहुँ। यद्यपि वो बहुत पैघ क्षेत्रफलमे पसरल अछि, मुदा ओकर रखरखाव संतोषप्रद नहि छल। यत्र-तत्र कूड़ा कर्कट भरल छल। वोटैनिकल गार्डेनक बरगदक वृक्ष ऐतिहासिक अछि। कहल जाइत अछि जे ई २५० साल पुरान अछि। एकर मूल वृक्ष १९२५ मे नष्ट भए गेल मुदा ओकर शाखा सभ चारूकात १४४२८.४४ वर्गफीटमे पसरि एकर ऐतिहासिकताकेँ जीवित रखने अछि। ओहिठामसँ गंगा सटले छथि। रहि-रहि कए स्टीमर सभक सीटी सुनाइत छल। ओहि गार्डेनमे घुमैत एकटा तलाव भेटल जाहिमे कमलक फूल स्फुटित छल। ओकर घाटपर कै गोटा प्राणायाम करैत भेटलाह। ओहि समयमे प्रणायाम एवम् योगाशनक हवा सौंसे देशमे बहि रहल छल आ कलकत्तोमे ओकर प्रभाव देखबामे आएल। थोड़ेक काल ओहिठाम सुस्ता हम आपस घर दिसि विदा भेलहुँ।

कोलकाताक बोटिनिकल गार्डेन एशियाक सभसँ पैघ एहि तरहक उद्यान अछि। एकर स्थापना सन् १७८७ मे लेफ्टीनेन्ट कर्नल

रावर्ट कीड द्वारा कएल गेल। २७३ एकड़मे पसरल एहि उद्यानमे १२००० विभिन्न प्रकारक वनस्पति उपलब्ध अछि। आजादीसँ पूर्व एकरा कम्पनी बगानक नामसँ जानल जाइत छल।

बच्चेसँ कलकत्ताक चर्चा सुनैत रहिऐक। अपना ओहिठाम परदेशक माने होइत छलैक कलकत्ता। आब कलकत्ता भए गेल कोलकाता।

कलकत्ता घुमए जखन दिनमे निकललहुँ तँ रस्तामे खचाखच भरल लोक सभ देखि बड़ा निराशा भेल। भेल जे दरभंगाक सड़कपर घुमि रहल छी। चौक सभपर युवक सभकेँ माइक लगा कए राजनीतिक भाषण करैत देखिअनि। लगैक जेना सम्पूर्ण कोलकाता गप्पबाजी वो राजनीतिक घमाचौकरीक अखाड़ा होइक।

एहेन बात नहि थीक जे ओतए लोक आब हिन्दी नहि बुझैत छैक मुदा जकरो हिन्दी अबैत छैक से बाजत बंगालिये। एहि परिस्थितिमे कोलकातामे रहबाक हेतु बंगाली सीखब/बाजब बहुत जरूरी अछि। अपन भाखाक प्रति सम्मान जे बंगाली समुदायमे देखल जाइत अछि से निश्चय अनुकरणीय अछि।

कोलकाता प्रवासक दौरान एकटा मिठाइक दोकानपर गेलहुँ। मिठाइ लए कए पैसा देबाक रहए। हम हिन्दीमे कहिऐक आ दोकानक नोकर बंगालीमे। वस्तुस्थितिकेँ बुझि दोकानक मालिक नोकरबा पर चिकरल-

“हिन्दी बोलो, हिन्दी बोलो।”

तखन वो छौड़ा हिन्दीमे बाजल, मिठाइक दाम कहलक आ समाधान भेल। रस्तामे, दोकानपर, बसमे कैठाम मैथिल सभ देखेलाह। हम सभ आपसमे मैथिलीमे गप्प करी, से सुनि कान ठाढ़

होइतनि, मुदा अपन पहिचान छिपाबक प्रयासमे, किंवा परिस्थितिवश तरदए बंगालीमे बड़बड़ाय लगितथि। ई समस्या चलिते रहल।

भाखा लए कए अहिना धनचक्करमे हम सन् १९६३ मे पानागढ़ जाइत काल पड़ि गेल रही। पानागढ़ धरि हमर रेलबे टिकट छल मुदा रातिक समय रहैक, जाबे हम बुझिऐक पानागढ़ बीति गेल आ आसनशोलमे जा कए रूकल। उतरितहुँ एहिसँ पहिने टिकट चेकिंग भेल, टिकट पानागढ़ धरि छल आ आसनशोल आबि गेल रही,परिणाम भेल जे टीसी पकड़ि लेलक। पकड़ने-पकड़ने एकठाम ठाढ़ केलक। भाखाक समस्या तेहन छल जे अपन बात किछु नहि कहि सकलहुँ। टीसीसँ बड़ा मोसकिलसँ जान छुटल।

भाखाक समस्या अछैतो हम सभ कोलकाता घुमबाक क्रममे सभसँ पहिने बेलुड़ मठ पहुँचलहुँ। बंलुड़ मठ हुगली नदीक पश्चिमी तटपर बेलूड़मे स्थित अछि। एहिठाम रामकृष्ण मिशन एवम् रामकृष्ण मठक मुख्यालय थीक। एहि मठक निर्माणमे हिन्दू, इसाई एवम् इस्लामी तत्वक सम्मिश्रण अछि जाहिसँ ई सर्व धर्म समन्वयक प्रतीक लगैत अछि। एकर स्थापना १८९७ मे स्वामी विवेकानन्द केलाह।

यद्यपि रामकृष्ण मठ एवम् रामकृष्ण मिशन कानूनी एवम् आर्थिक रूपसँ दूटा अलग- फराक संस्था थीक, मुदा दुनू एक दोसरसँ कतेको तरहें जुड़ल अछि। एहि दुनू संस्थाक भारत एवम् विश्वक अन्य देश सभमे १८० सँ अधिक शाखा अछि।

बेलुड़ मठमे श्री रामकृष्ण परमहंस श्रीशारदा देवी (माँ) एवम् स्वामी विवेकानन्दक फराक-फराक मन्दिर अछि। स्वामी विवेकानन्द एवम् रामकृष्ण परमहंसक अनेको शिष्य सभ एहिठाम रहैत छलाह। स्वामीजीक महासमाधिक स्थान एतहि अछि, जकरा अरवन धरि

सुरक्षित राखल गेल अछि। एहि संस्था द्वारा नि:शुल्क चिकित्सालय, गरीबक आर्थिक सहायता, वेद विद्यालय, रामकृष्ण संग्रहालय आदि गतिविधि संचालित कएल जाइत अछि।

मठक सभ मन्दिर सभ घुमि फिरि हम सभ दुपहरियाक लंगर मठमे केलहुँ। नियत समयपर सैकड़ो अतिथि पंक्तिवद्ध भए भरिपेट प्रसाद ग्रहण करैत अछि, तकर व्यबस्था ओ अनुशासन देखैत बनैत छल।

वेलुड़मठसँ नाओ पकड़ि कए हमसभ दक्षिणेश्वर मन्दिर पहुँचलहुँ। नाओसँ दक्षिणेश्वर मन्दिर देखबामे अत्यन्त मनोरम लगैत छल। धारक कछारपर जरैत मृतक सभक चिता देखाइत अछि।

दक्षिणेश्वर मन्दिर पहुँचि असीम शान्तिक आभास भेल। एहि बातसँ असीम संतोष भेल जे प्रसिद्ध सन्त रामकृष्ण परमहंस जतए रहैत छलाह, ताहि पवित्र भूमिपर पहुँचबाक आ देखबाक अवसर भेटल।

दक्षिणेश्वर स्थापना रानी रशोमणि द्वारा ३१ मइ सन् १८५५ मे कएल गेल। एतए कुल चौदहटा मन्दिर अछि जाहिमे १२टा शिव मन्दिर, एक राधा कृष्ण मन्दिर, एवम् माँ भवतारिणी कालीक मुख्य मन्दिर सामिल अछि। स्वामी रामकृष्ण परमहंस एहिठाम तीस साल रहलाह। कहल जाइत अछि जे माँ काली हुनका दर्शनेटा नहि दैत छलखिन अपितु गप्पो करथिन्ह। अखनो ओ स्थान दर्शनीय अछि, जतए रामकृष्ण परमहंस बैसि कए माँ कालीक ध्यान करैत छलाह। ओही प्रांगणमे स्थित विष्णु मन्दिरक बरामदामे मैथिल लोकनिक दूर्वाक्षत मंत्र लिखल सेहो देखलहुँ। ओहिठाम सँ हम सभ कालीघाट स्थित काली मन्दिर गेलहुँ। ५१ शक्ति पीठमे सँ एकटा पीठ ईहो अछि।

एहिठाम सतीक दहिना पैरक अंगूठा कटल रहनि। कालीक वर्तमान मन्दिर २०० साल पुरान अछि मुदा ओहिसँ पूर्वहु ओहिठाम ई मन्दिर कोनो-ने-कोनो रूपे हेबाक प्रमाण भेटैत अछि। भगवतीकेँ तीनटा नेत्र एवम् चारिटा सोनक बनल हाथ अछि। हुनकर जीह सेहो सोनाक बनल अछि।

काली मन्दिरमे दर्शनार्थीक बहुत भीड़ रहैत अछि। मुदा मन्दिरक देख-रेखमे लागल पंडा सभ बहुत लोभी ओ उदंड छथि। पर्याप्त दक्षिणा नहि भेटलापर गुण्डागर्दीपर उतरि जाइत छथि। कैटा दर्शनार्थीकेँ पंडा सभ द्वारा गरदनियाँ दैत देखलियैक। एहन प्रसिद्ध धार्मिक स्थानक एहन कुव्यबस्था देखि मोन दुखी भए जाएब स्वभाविक।

१९०१ ईस्वीमे भारत अंग्रेजी हुकुमतक अधीन छल। ओहि साल विक्टोरिया रानीक मृत्युक बाद तत्कालीन भारतक वाइसराय जार्ज कर्जन हुनकर स्मृतिमे कलकत्ता (आब कोलकाता) मे एकटा अद्भुत महल बनाबक संकल्पक उद्घोष केलनि जे अपना आपमे एकटा आकर्षण होएत, जतए कोलकाता एनिहार प्रत्येक नव व्यक्ति आबि कए ठाढ़ होएत एवम् जाहिमे राखल संग्राहालयक वस्तुसँ इतिहासक आंगनमे रानी विक्टोरिया सदिखन चकमकाइत रहतीह। एहि काजकेँ पूरा करबामे ताहि समयक एक कड़ोर पाँच लाख रूपया खर्च भेल जे भारतीय राजा महराजा सभ दान देलनि। सन् १९२१ ई.मे ई विशालकाय भवन जनताक दर्शनक हेतु उपलब्ध भेल।

विक्टोरिया महलमे नाना प्रकारक स्मारक राखल अछि। अंग्रेजी हुकुमतक अवशेषक छाँह तँ एतए भेटिते अछि संगहि स्वतंत्र्य आन्दोलन आ ओहिसँ जुड़ल राष्ट्रीय नेता लोकनिसँ बहुत रास स्मारक ओहिठाम देखल जा सकैत अछि। हालमे ओहिमे कोलकातासँ

सम्बन्धित विषय वस्तु हेतु अलग खंड सेहो बनाओल गेल अछि। असलमे ई महल तँ अंग्रेजी हुकुमतक यादगार अछि जकरा देशी नरेश/राजा/महराजा सभ चापलूसीमे अपन धन/जनक योगदानसँ परिष्कृत केने रहथि। मुदा ई तँ अपन देशक इतिहास अछि आ एकरा मेटाओल नहि जा सकैत अछि।

कलकत्तामे दर्शनीय स्थानमे सँ एकटा प्रमुख साइन्स सेन्टर थीक। भारत सरकारक संस्कृति मंत्रालयक अधीन एनसीएसएम (National Council of Science Museum)द्वारा एकर निर्माण कराओल गेल। १ जुलाई १९९७ क भारतक तत्कालीन प्रधान मंत्री स्व. इन्द्र कुमार गुजराल द्वारा एकर उद्घाटन भेल। अपना आपमे एहि तरहक विश्वमे सभसँ सुन्दर वो विशाल अछि, जतए कलकत्तावासीकेँ ओ देश-विदेशक लोक सभकेँ मनोरंजनक संगे विज्ञानक क्षेत्रमे नवीन गतिविधि सभ देखबाक अवसर भेटैत अछि।

सभसँ पहिने हम एतए रोपवे पर चढ़लहुँ। ओहिमे बैसि शहरक दृष्य देखि आनन्दित भेलहुँ । साइंस सीटीमे प्रवेशक बाद थ्रीडी थिएटर, टाइम मशीन, रोड ट्रेन, एवम् केवल कार देखलहुँ जकर फराक-फराक शुल्क देबाक होइत छैक। एकर अतिरिक्त स्पेश थियेटर, मोनो साइकल, ग्रेभीटी कोस्टर सेहो दर्शनीय अछि। विशेष छुट्टीक अवसर छोड़ि साइंस सीटी सप्ताहक सातो दिन प्रात: ९ बजेसँ ८ बजे राति धरि खुजल रहैत अछि। टिकट खिड़की सात बजे साँझ धरि खुजल रहैत अछि। विज्ञान प्रेमी खास कए धिया-पुताक संगे एहि स्थानपर बहुत आनन्द उठा सकैत छथि। डायनासोर विभागमे ओकर पूर्वक इतिहासक सहज जानकारी प्राप्त करबाक उत्तम अवसर भेटैत अछि। छोट- छोट बच्चाक हेतु फराक-फराक अनुभाग अछि जतए

लोक बच्चाकेँ लए जाइत छथि जाहिसँ ओ सद्यः सक्रिय भए अपन समयक रचनात्मक उपयोग करैत आनन्दक अनुभव करथि।

किछु जोगारसँ हमरा सभकेँ एकटा गाड़ी आ संगे घुमओनिहार एकटा बंगाली सरकारी अधिकारी भेटि गेल रहथि जे सम्पूर्ण कोलकाताक यात्राक दौरान हमरा संगे रहलाह। जतेक गोटेकेँ मोबाइलपर फोन अबैत तकरा सभकेँ संगे बतबैत रहलखिन जे मंत्रालयक अधिकारीक संगे हुनकर ड्यूटी लागल अछि आ ओ ताहीमे अखन व्यस्त छथि। बीच-बीचमे ओ अपन समस्या सभ सुनाबथि आ इच्छा रहनि जे दिल्ली आपस जा कए हम हुनकर प्रोन्नति करबा दिअनि।

प्रात भेने भोरे हम सभ मायापुर इस्कान मन्दिर देखबाक हेतु विदा भेलहुँ। खाली रोडपर धुरझार चलैक कारण आनन्दमे हमर संगे चलैत परिवारक लोक सभ मस्त रहथि। कोलकातासँ १३० किलोमीटर दूर मायापुर पहुँचैत बारह बाजि गेल। मायापुरमे इस्कानक मुख्यालय विशालकाय परिसरमे बनल अछि। एहिठाम आगन्तुक आवास हेतु पाँचटा अतिथि गृह अछि जाहिमे सँ तीनटा आरक्षण ऑनलाइन भए जाइत। एसी, डीलक्स, एकसीट्टा आदि सभ तरहक व्यबस्था अछि। एक समयमे एक हजार अतिथिक रहबाक व्यबस्था भए सकैत अछि।

मायापुर पहुँचतहि सभसँ पहिने हमरा लोकनि भोजनक कूपन लेलहुँ। कारण ओकर नियत समय समाप्त होमय जा रहल छल। तकर बाद एमहर-ओमहर घुमए लगलहुँ। एहिठामक प्रमुख पुष्प समाधि मन्दिर अछि। मुख्य मन्दिरक लगेमे प्रमुपादक जीवनसँ सम्बन्धित संग्रहालय थीक। मायापुरक चंद्रोदय मन्दिर सेहो दर्शनीय अछि। एहिमे श्रीराधामाधव पंचतत्व, एवम् नरसिह भगवानक मूर्ति अछि।

कहल जाइत अछि जे चैतन्य महाप्रभुक जन्म स्थान एहीठाम अछि। एहि हेतु मायपुरमे नाना प्रकारक मन्दिर देखएमे अबैत अछि।

दुपहरियामे प्रसाद ग्रहण केलाक बाद हम सभ मुख्य मन्दिरमे थोड़ेक काल बैसलहुँ। ओहिठाम मधुर स्वरमे निरन्तर कीर्तन होइत रहैत छल, से सुनि ओहिठामसँ उठक मोन नहि होइत अछि। मन्दिरक एकटा स्वामीजी हमरा भेटलाह जे प्राय: बंगाली रहथि। हमरा सभक आजन्म सदस्यता ग्रहण करबाक आग्रह करैत रहलाह। २५०००/- रूपया शुल्क लगैत रहैक। आजीवन सदस्यकेँ ओहिठाम कैटा सुविधा देबाक व्यबस्था रहैक, जेना नि:शुल्क साचमे किछु दिनक ओकर आवासमे रहब आदि। हम सभ कहुना एकरा टारि देलिऐक। मुदा कतेको साल धरि दिल्ली वो एहि मार्फत फोन करैत रहलाह। रातिमे दस बजे हम सभ हावरा डेरापर लौटि गेलहुँ।

कोलकाता भ्रमणक बाद प्रसन्नतो भेल आ दुखो। प्रसन्नता एहि लेल जे बहुत दिनसँ मोनमे जे कोलकाता घुमबाक इच्छा छल से पूर भेल मुदा दुख एहि लए कए भेल जे कोलकाता सन पुरान महानगर जतए सांस्कृतिक, धार्मिक एवम् राजनैतिक सभ तरहेँ देशकेँ मार्गदर्शन भेटल, वर्तमान कालमे कोना पछड़ि गेल? पुरना कोलकातामे तँ स्थिति कैठाम नारकीय छल। सड़क तंग, लोक सभ ताहूमे गपाष्टक करैत, महौलकेँ व्यर्थ अस्त-व्यस्त केने, एहन दृश्य आम छल। नवीन कलकत्ता दिसि जाउ तँ किछु उसास अवश्य भेटैत छैक, महानगरक आहट लगैत छैक । तथापि एहि शहरकेँ आन महानगरसँ टक्कर लेबएमे समय लगतैक। चारिम दिन साँझमे हमर सभक आपसी वायुयान छल, से पकड़ि रातिमे दिल्ली घर पहुँचि ओतए देखल दृश्य सभकेँ मोने-मोन स्मरण करैत कहि नहि कखन आँखि लागि गेल।

त्रिकुट पर्वत वासिनि

अपना सभहक दिस भगवती दर्शन करबाक हेतु लोक उच्चैठ भगबती लग चलि जाइत अछि। उच्चैठकेँ लोक सिद्ध पीठ कहैत छैक। कालीदासकेँ ओतहि सिद्ध भेटलनि जाहिसँ वो रातिए भरिमे प्रकाण्ड विद्वान भए गेलाह। ई किंवदती अछि।

दिल्ली अएलाक बाद जकरे तकरे वैष्णव देवीक जयकारा लगबैत देखी- जय माता दी, प्रेम से बोलो जय माता की। एहिठाम सँ, लगपाससँ बहुत रास लोक वैष्णो देवीक यात्रा करैत रहैत अछि। कवुला,पाती सेहो केने रहैत अछि। हमरो सभक मोनमे वैष्णव देबीक दर्शनक अभिलाषा बहुत दिनसँ छल। मुदा जम्मू, काश्मीरमे दंगा फसाद लए कए कै बेर मोन आगा पाछा करए लागए।

कहबी छैक जे माताक दरबारमे तखने किओ पहुँचैत अछि, जखन हुनकर इच्छा होइत छनि। आफिसक स्टाफ सभकेँ देखिअनि जे जहाँ किछु उपलब्धि भेल तँ वैष्ण देवीक दर्शन कए आबथि। पता तखन लागए जखन वैष्ण देवीक प्रसाद (जाहिमे अखरौट, मुरही, रहैत अछि) हाथमे अबैत।

मातावैष्णव देवीक उद्भव कहिआ भेल, से कहब कठिन। मुदा वैज्ञानिक सभ त्रिकुट पर्वतक शृंखलाक आयु १० लाख वर्ष अनुमानित करैत अछि। त्रिकुट पर्वतक पहिल सन्दर्भ ऋगवेदमे आएल अछि। महाभारतमे वैष्णवदेवीक चर्चा अछि। अर्जुन माता वैष्णवदेवीक प्रार्थना कए विजय कामना केने रहथि। महाभारतक समय पाण्डव एहिठाम मन्दिरक निर्माण केने रहथि। त्रिकुट मन्दिरक ठीक सामने पाँचटा शिलाक मूर्ति अछि जे कहल जाइत अछि जे पाण्डव लोकनिक

अछि।

वैष्णदेवीक कोनो स्थापित मूर्ति नहि अपितु चट्टानक मौलिक अंश अछि जकरा तीन भागमे तीनटा पिण्ड छैक। तीनू पिण्डक रंग फराक-फराक क्रमश: माता महाकाली, माता महालक्ष्मी एवम् माता महासरस्वतीक रूपमे विद्यमान अछि।

वैष्णवदेवी यात्राक संचालन, मन्दिर परिसरक संपूर्ण रखरखाव एवम् एहिसँ जुड़ल समस्त काज श्रीमाता वैष्णव देवी श्राइन वोर्ड द्वारा कएल जाइत अछि। श्राइन बोर्डक स्थापना कानूनी प्रकृया द्वारा अगस्त १९८६ मे भेल छल। एहिसँ पूर्व मन्दिरक देखरेख एकटा व्यक्तिगत ट्रस्ट द्वारा होइत छल जकर कर्त्ता धर्त्ता 'वारीदार' (माने स्थानीय पंडा बुझू) होइत छलाह। मन्दिरकेँ भक्त द्वारा देल गेल चढ़ावाकेँ ओ सभ चट कए जाइत छलाह आ यात्रीक सुख सुविधाक किछु ध्यान नहि करैत छलाह। भक्त लोकनिक दुर्दशासँ द्रवित भए स्थानीय सरकार श्राइन वोर्डक स्थापना केलक जकर प्रमुख ओहि राज्यक राज्यपाल होइत छथि।

मन्दिरक व्यबस्थाक श्राइनबोर्डक अधीन आबि गेलासँ भक्त लोकनिक आवागमन, रहबाक, एवम् अन्यान्य सुविधामे चम्तकारिक विकास भेल जाहिसँ वैष्णव देबी आगन्तुक लोकक संख्यामे निरन्तर वृद्धि भए रहल अछि। अपन अद्वितीय प्रदर्शनसँ श्राइनवोर्ड वैष्णव देवी यात्राक आनन्दे बदलि देलक अछि। कटरा सँ जेना-जेना अपने आगा बढ़ब ई बातक स्वयं अनुभव होइत जाएत। भरि रस्ता यात्री सभक लेल सुस्तेबाक, इन्तजाम अछि। ठाम-ठाम जलखै, चाह पानक दोकान अछि। कतरामे सभ तरहक धर्मशाला श्राइनबोर्ड द्वारा बनाओल गेल अछि जाहिमे सभ स्तरक लोक अपन सुविधानुसार रहि

सकैत अछि। विश्रामालयमे नि:शुल्क कम्वल भेटैत अछि। किछु मामूली पैसा लेल जाइत अछि जे कम्वल आपस केला पर आपस भेटि जाइत अछि। कटरामे नि:शुल्क क्लाक रूमक सुविधा अछि जाहिसँ यात्री अपन जरूरी सामान ओहिमे राखि देथि आ हल्लुक भए पहाड़ीपर चढ़थि।

आइ काल्हि तँ सभटा सुविधा आवास, यात्रा पर्ची, हेलीकाप्टर सेवा, अटका दर्शन, पहिनेसँ ऑनलाइन वुकिंग भए जाइत अछि। ऑनलाइन वुकिंग साइट www.matavaishnodevi.org पर पहिने अपन निबन्धन करा लिअ। तकर बाद आवश्यकतानुसार अपन बुकिंग कए लिअ। ओकर भूगतानो ऑनलाइन नेटबैंकिंग किंवा डेविट/क्रेडिट कार्ड द्वारा भए जाइत अछि।

ऑनलाइन वुकिंग हेतु, हेलीकाप्टर यात्रा हेतु एक मासमे पाँचटा सीट बुक कराओल जा सकैत अछि। हेलीकाप्टर सेवा कटरासँ साँचीघाट आ आपसीक भेटैत अछि। एक महिनामे एकटा यात्री एकटा कोठरी वा पाँचटा एक सिट्टा (डायमीटरी बेड) आरक्षित करा सकैत छथि। एवम् प्रकारेण एक व्यक्ति महिनामे पाँचटा अटका वो एकटा पूजनक हेतु ऑनलाइन आरक्षण कए सकैत छथि।

ऑनलाइन आरक्षणक बाद आरक्षणक मुद्रित प्रति एवम् पहचान पत्र संगे राखब जरुरी अछि, जाहिसँ उपरोक्त सुविधा लेबा काल खिड़कीपर सम्बन्धित अधिकारीकेँ देखा सकी। ऑनलाइन आरक्षण केलाक बाद रद्द नहि कएल जा सकैत अछि। मुदा हेलीकाप्टरक सीट बुकिंग यात्रा तिथिसँ चारि दिन पूर्व धरि ऑनलाइन रद्द केलापर टिकट आधा पैसा आपस भए जाइत अछि।

वैष्णव देवी यात्राक हेतु प्रत्येक यात्रीकेँ निबंधन कराएब एवम्

पर्ची लेब जरूरी अछि। पहिने ई पर्ची कटरामे भेटि जाइत छल मुदा आब ईहो ऑनलाइन भेटि जाइत अछि। एकर अलाबा अटका दर्शन, हेलीकाप्टर सेवा, आवासीय सुविधा, व्यक्तिगत पूजनक आरक्षण सेहो मातावैष्णव देवीक वेबसाइटसँ ऑनलाइन भए जाइत छैक।

अटका आरती माताक गुफा भोर ओ साँझक आरती अछि जाहिमे लगभग दू घण्टा समय लगैत अछि। एहि लेल मात्र पचासटा यात्रीकेँ अवसर भेटैत अछि। जाहि हेतु पहिनहिसँ एक हजार रूपया दए ऑनलाइन आरक्षण करए पड़ैत अछि। भोरमे सूर्योदयसँ पूर्व वो सायं काल सूर्यास्तक बाद अटका दर्शनक कार्यक्रम होइत अछि। आरतीक बाद एक-एकक पचासो गोटाकेँ गुफामे अन्दर जाए माताक दर्शनक सुविधा देल जाइत अछि।

अन्ततोगत्वा, सन्. २००० मे हमसभ वैष्णदेवीक दर्शन हेतु ट्रेनसँ विदा भेलहुँ। ओहि समय जम्मु धरि ट्रेन जाइत छलैक। राति भरिक ट्रेन यात्राक बाद भोरे जम्मू पहुँचि गेलहुँ। ओहिठाम टीसनसँ निकलू आ थोड़बे दूरपर बस स्टैंडपर कटराक बस भेटि जाइत छैक। हम सभ सएह केलहुँ। जम्मूसँ कटरा दिसि बढ़ला पर पहाड़ नजरि आबए लगैत अछि। पहाड़ी मार्गसँ जाइत काल बस पर चलैत आगू बढ़ैत मनोरम दृष्यक अवलोकन होइत रहैत अछि।

चारूकात हरियरी, गाछ वृक्षसँ पाटल संगहि पहाड़ीक मौलिक सौन्दर्य अवलोकन, ई दृष्य कतए भेटैत? आब बूझल जे शत्रुदेशक नजरि एहि क्षेत्रपर किएक अँटकल रहैत अछि। चलैत-चलैत रस्तामे बस रूकल। यात्री सभ उतरि चाह पान करए लगलाह। कनीकाल सुस्तेलाक बाद बस फेर आगा बढ़ल।

जम्मूसँ चललाक लगभग देढ़ घण्टाक बाद हम सभ कटरा

पहुँचलहुँ। हम सभ तीन गोटे रही- हम, हमर श्रीमतीजी ओ हमर सासु। सभसँ पहिने हम सभ कटरा पहुँचि एकटा विश्रामालयमे एकटा कोठरी लेलहुँ। ताहि कोठरीमे अपन सामान सभ राखि स्नानादि कए आगाक यात्रा प्रारम्भ केलहुँ। सभटा समान ओहि कोठरीमे छोड़ि देलिऐक। हमर सभक योजना छल जे रातिमे दर्शन केलाक बाद लौटि जाएब। लौटि कए ओहि कोठरीमे विश्राम करब आ दोसर दिन प्रात भेने आपस दिल्ली दिसि विदा भए जाएब। ई योजना सही नहि छल। धरफरीमे गड़बड़ी होइते अछि, सएह भेल। ई बात सोचबाक चाहैक छल जे १३ किलोमीटर पहाड़क सीढ़ी चढ़ि कए ओहि दिन कोना आपस भए सकब?

कटरासँ जखन वैष्णव देवीक मन्दिरक हेतु बिदा होइत रही तँ विचार कएल जे उपर पहाड़ी पर कोना चढ़ी। पैदल तँ लोक जाइते अछि, तकर अलावा घोड़ा वा पौनी, पालकीक सेवा सेहो वृद्धजन, असक लोक सभक हेतु उपलब्ध अछि। हमर सासु कहलखिन जे हम पैरे चलब। जखन ओएह पैरे पहाड़ चढ़क हेतु तैयार भेली तँ हमरा सभकेँ कोनो विकल्प नहि छल। पैरे हम सभ पहाड़ चढ़ए लगलहुँ। जौं-जौं आगा बढ़लहुँ तौं तौं हमर सासुक सीटीपीटी गुम। आब कएलो की जा सकैत छल, कारण घोड़ा तँ शुरूएमे कटरामे उपलब्ध छल। रस्तामे कोनो संभावना नहि। अछताइत-पछताइत बैसल रही कि एकटा घोड़ाबला घुरतीमे आबि रहल छल। हम ओकरा सभटा बात कहलिऐक। ईहो कहलिऐक जे हम गृहमंत्रालयक अधिकारी छी। ओ घोड़ाबला हमर बात बुझलक। आश्वासन देलक जे वो हमर सासुकेँ ओतए सँ कनिके दूर पुलिस पोस्ट तक पहुँचा देतनि। हम सभ पैरे पाछू-पाछू आ ओ आगू-आगू घोड़ापर पहुँचि गेलीह। बीचमे हम सभ पछड़ि गेलहुँ। हमर सासुकेँ पुलिस पोस्टपर बैसा कए संगहि पुलिसकेँ

चेतौनी दए कए ओ आपस भए गेल। हम सभ जखन पाछूसँ पहुँचलहुँ तँ वो पूर्ण निश्चिन्त ओ सुरक्षित ओहिठाम बैसल रहथि।

हमरा सभ पैरे-पैरे पुरना मार्गसँ अर्द्धकुमारी पहुँचलहुँ। ओहिठाम दर्शन कए कनीकाल सुस्तेलहुँ आ फेर चलि पड़लहुँ। चिंता ईहो रहए जे हमर सासु आगू कतए कोना छथि। रस्ता भरि श्राइन वोर्ड द्वारा यात्री सभक हेतु तरह तरहक सुविधा उपलब्ध छल। ठाम-ठाम विश्रामालय। जँ थाकि गेल छी, तँ सुस्ता लिअ। मोन खराप भए गेल तँ कोनो चिन्ताक गप्प नहि। जगह जगह औषधालयमे डाक्टर छथि जे श्राइन बोर्डक तरफसँ दुखित यात्रीक नि:शुल्क इलाज करैत अछि।

हम गृहमंत्रालयसँ सिफारसी चिट्ठी लए गेल रही जाहिसँ गुफामे विशेष द्वारसँ हमरा लोकनिकेँ माताक दर्शन कराओल गेल। कनिको काल प्रतीक्षा नहि करए पड़ल। दर्शन कए सभ गोटाक मोन आनन्दमय भए गेल। राति भए गेल रहैक। सभगोटे थाकि गेल रही। ओहि राति आपस कटरा लौटब कदपि सम्भव नहि छल। अस्तु, हम सभ ओहि राति उपरमे विश्राम करबाक निर्णय कएल। सभक हेतु कम्बल भेटि गेल। भोजनक प्रवंध सेहो भए गेल। ओहीठाम विश्रामालयमे केना-ने-केना जोगार भए गेल। निन्न नहि भेल। करोट बदलि-बदलि कहुना समय बिताओल। भोरे अन्हरौखे हम सभ स्नान कए आपसी यात्रापर विदा होमयसँ पूर्वहि एक बेर फेर माताकेँ प्रणाम केलहुँ। तकर बाद सभसँ पहिने तीनटा घोड़ा ठीक केलहुँ। ओकर सभक दर तय छैक। सभकेँ स्थानीय नगर निगम (कमिटी) द्वारा पहचान पत्र रहैक अछि, तें कोनो धोखाधरीक सबाल नहि रहैत छैक। मन्दिरक लगपास प्रसाद प्रचूर मात्रामे उपलब्ध रहैत छैक। गुफाक अन्दर प्रसाद लए कए जेबाक अनुमति नहि छैक। प्रसाद (जाहिमे

सौंस नारियल तँ रहिते अछि) बाहरे जमा कराओल जाइत अछि, आ पूजाक बाद भेटि जाइत छैक।

घोड़ाक सबारी कए अत्यन्त संक्षिप्त किन्तु सफल वैष्णव देवीक यात्राक आपसीमे अपेक्षाकृत कम समय लागल। हम सभ कटरा पहुँचि अपन कोठरीमे गेलहुँ। सभ सामान सुरक्षित छल। ओना परंपरा ओ मान्यताक अनुसार माता वैष्णव देवीक दर्शनक बाद भैरव मन्दिरमे भैरवक दर्शन जरूरी अछि। भैरव मन्दिर जेबाक हेतु साढ़े चारि किलोमीटर आओर ऊपर पहाड़ीपर चढ़ए पड़ैत अछि। मुदा सभ ततेक थाकि गेल रही जे आगू बढ़बाक हिम्मत नहि भेल। संगमे हम सासु सेहो रहथि। हुनका लए कए खतरा लेब ठीक नहि बुझाएल। कटरासँ बस पकड़ि हम सभ जम्मू रेलवे स्टेशन अएलहुँ। ओहिठाम कैटा तीर्थ यात्री संगे पहाड़पर चढ़ल रही। कै गोटाक पैर फुलि गेल रहनि। कै गोटे चलबामे असमर्थ लगथि। तमाम कष्टक बावजूद यात्राक आनन्द ओ माताक दर्शनसँ उत्पन्न सकारात्मक ऊर्जाक प्रभाव सद्य: देखल जा सकैत छल।

जम्मू रेलवे टीसनपर बैसल रही तँ एकटा वृद्ध भेटलाह। ओहो माताक दर्शन कए लौटति छलाह। वो कहलथि जे वो सभ साल वैष्णव देवी जाइत छथि। हम सभ दिल्ली आपस आबि गेल रही। मोनमे माताक दर्शनक संतोष छल। मोनमे ई भाव अबैत रहल जे बेर-बेर माता वैष्णव देवीक दर्शन करैत रही।

बहुत दिन बाद २०१४ मे समाचार पत्रमे खबरि आएल जे आब दिल्लीसँ कटरा धरि सीधा ट्रेनक सुविधा प्रारम्भ भए गेल अछि। हम उत्साहित भए ट्रेनमे आरक्षण करओलहुँ। माता वैष्णव देवी वेबसाइटपर आवास, हेलीकाप्टर, अटका दर्शन, सभटाक व्यबस्था

केलहुँ। नियत समय पर माताक दर्शन हेतु बिदा भेलहुँ। समाचार आबए लागल छल जे कटराक लगपास बहुत बरखा भेल अछि। यात्रा ओ दर्शन बाधित भए सकैत अछि। नई दिल्ली स्टेशनसँ ट्रेन कनिष्ठ पुत्रक फोन आएल। वो कहलथि जे टेलीवीजनमे समाचार आबि रहल अछि जे माता वैष्णवदेवीमे बरखा, तूफानक अधिकताक कारण यात्रा, दर्शन बन्द कए देल गेल अछि। हम सभ तँ ट्रेनमे रही। पाछा नहि भए सकैत छलहुँ। आओर सहयात्री सभकेँ ई सूचना भेटल रहैक। सभ निश्चिंत रहए। सभकेँ आशा रहैक जे माता वैष्णव देवी किछु-ने -किछु चमत्कार करतीह। रस्ता खुजि जेतैक आ माताक दर्शन होएत।

ट्रेन जखन पठानकोट पहुँचल तखनेसँ बरखाक, वाढ़िक प्रकोपक असर देखाए लागल। ट्रेन रूकि रूकि कए चलैत छल। कहुना-कहुना कए कटरा पहुँचलहुँ। कटरा स्टेशनपर भयानक बरखा भए रहल छल। स्टेशनसँ बाहर हैब पराभव। कतेको यात्री सभ सकदम रहथि। कहुना-कहुना कए स्टेशन परिसरसँ भीजैत-तीतैत टैक्सी पकड़ि श्राइन वोर्ड द्वारा संचालित धर्मशाला पहुँचलहुँ। ओतए आपात्कालीन स्थिति छल। सैकड़ो यात्री सभ ओहिठाम जमा भए गेल रहथि। पहाड़ चढ़बाक मार्ग अवरूद्धे छल। सभटा व्यबस्था धएले रहि गेल। राति ओही धर्मशालामे बिताओल। दर्शन कए कए आपस होइत लोक सभ सुनाबथि जे ओ सभ केना बचि कए आबि गेलाह, केना पहाड़पर अफरा तफरी छल, पाथरक बड़का-बड़का टुकड़ी सभ रस्तापर खसि रहल छल। भूस्खलन भए रहल छल। एकटा परीक्षाक समय आबि गेल छल। सामने माताक मन्दिर, जगमग करैत पहाड़ी देखा रहल छल, मुदा एकहुँ डेग आगा बढ़ब असम्भव। कहुनाक प्रात भेल। सूचना भेटल जे दर्शनक रस्ता कखन कहिआ खुजत एकर कोनो

निश्चित तिथि, समय नहि पता। हारि कए सभटा आरक्षण रद्द कराओल। एक दिन आओर ओतहि रूकि दोसर दिन भेने जम्मू आपस अएलहुँ। जम्मू जेबाक रस्ता यत्र-तत्र अखनो बाधित छल। जेना-तेना टैक्सी आगू बढ़ैत गेल।

जम्मू श्राइन वोर्ड द्वारा एकदम नव धर्मशाला बनल छल। किछु दिन पूर्वहि ओकर उद्घाटन भेल छल। ओहिमे एकटा वाताकुनूलित कोठरी आरक्षण करओलहुँ। ओहिमे दिनभरि विश्रामक बाद सायंकाल रेलसँ आपस दिल्ली विदा भए गेलहुँ। सही कहल गेल अछि जे माताक इच्छाक बिना हुनकर दर्शन नहि भए सकैत अछि। बहुत दिन बाद दोबारा वैष्णवदेवीक दर्शनक हेतु प्रयास छल जे अपूर्ण रहि गेल।

◌

भगवान वेंकटेश्वर

तिरुपति अपना देशक प्रसिद्ध तीर्थ अछि। सौंसे देशसँ लाखो लोक ओहिठाम नित्य पहुँचैत अछि। विशेष अवसर जेना नवरात्रामे तँ अपार जनसमूह ओहिठाम होइत अछि। एतेक रास लोक शान्ति पूर्वक दर्शन करए एवम् ओकरा आवश्यक सुख-सुविधा होइक ताहि हेतु प्रचूर व्यबस्था तिरुपति देवस्थान ट्रस्ट द्वारा कएल गेल अछि। मन्दिरक प्रवन्धनसँ सम्बन्धित छोटसँ छोट आ पैघसँ पैघ काज एही ट्रस्ट द्वारा संचालित होइत अछि। प्रशासनिक एवम् धार्मिक काजक संचालन अतिपारदर्शी अछि।

मन्दिरमे दर्शनक कतेको तरीका अछि। सभक शुल्क बान्हल अछि। पूजा/सेवा वा दर्शनक जाहि विधिक इच्छा हो तकर शुल्क दिऔक आ अपन पहिनेसँ जगह आरक्षण करा लिअ आ नियत समय एवम् तिथिक ओतए पर्ची लए कए उपस्थित भए जाउ। बिना कोनो लाइ-लपटकें अहाँक पूजा-पाठ भए जाएत। सामान्य दर्शनमे भीड़क अनुमान करब कठिन अछि। तीन-चारि घन्टा जिलेबी जकाँ बनाओल गेल रस्तामे घुरियाइत-घुरियाइत अन्तत: मन्दिरक गर्भगृह लग लोक अबैत अछि। रस्तामे तिरुपति भगवानक जयकारा लगैत रहैत अछि। थोड़े-थोड़े कालमे भीड़कैं रोकि देल जाइत अछि जाहिसँ मन्दिरमे भीड़ नियंत्रित रहए। मुदा सभठाम बैसबाक व्यबस्था रहैत अछि। पानि, जलखैक सेहो व्यबस्था रहैत अछि। लोकक उत्साहे तेहने प्रवल रहैत अछि जे घन्टोक प्रतीक्षा देखिते-देखिते बीति जाइत अछि आ लोक अपन लक्ष्यपर पहुँचि असीम संतोषक अनुभूति करैत अछि।

मन्दिरमे पहुँचलहुँ कि ओतए उपस्थित व्यबस्थापक सभ चिचिआए लगैत छथि जे आगू बढ़ू, आगू बढ़ू... । मोसकिलसँ लोक एकाध मिनट भगवानक मूर्ति लग ठाढ़ भए पबैछ। दर्शन करू आ निकलू। हँ, अगर अहाँ लग विशेष पूजाक टिकट अछि तँ बाते फराक।

तिरुपति मन्दिरक ई विशेषता अछि जे एहिठामक व्यबस्था अत्यन्त स्पष्ट ओ पारदर्शी अछि। सिफारशीक हेतु सेहो कोटा तय अछि। जकर कोटा छैक ताहि अनुसार सिफारिश केलक तँ तकर लाभ सम्बन्धित दर्शनार्थीकेँ भेटैत छैक मुदा तकर माने ई नहि जे ओकरा शुल्क नहि लगतैक, तय शुल्क तँ देने छैक, विशेष दर्शन भए जेतैक, भीड़सँ बचि जाएत। ऑनलाइन सेहो विशेष पूजा वा दर्शन हेतु बाँछित शुल्क दए आरक्षण कराओल जा सकैत छथि। एहिमे कोनो सिफारिशक प्रयोजन नहि। जतेक स्थान छैक ताहिमे पहिने जे सभ प्रयास करैत अछि, हुनकर जोगार भए जाइत छनि।

तिरुपति मन्दिरक बारेमे कहल जाइत अछि जे त्रेतायुगमे भगवान श्रीराम सीता एवम् लक्ष्मण सहित लंकासँ आपस होइत काल एहिठाम ठहरल छलाह। ९वीं शताब्दीमे पल्लव सम्राज्य, १०वीं शताब्दीमे विजयनगर सम्राज्यक एतए राजधानी छल। एहिठाम एशियाक दोसर सभसँ पैघ श्रीवेकटेश्वर जैव पार्क अछि। २२ किलोमीटरपर एकटा गाम अछि जतए आनठामक लोकक प्रवेश वर्जित अछि। ओही गामक फूल, दूध, घी, बेल पत्र, केरा इत्यादि भगवान वेंकटेश्वरपर चढ़ाओल जाइत अछि। तीरुमालमे एकठामसँ दोसरठाम जेबाक हेतु मन्दिरक ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क बस सेवा अछि। तिरुपतिमे प्रसादक हेतु प्रति दिन डेढ़ लाख लड्डु बनाओल जाइत

अछि। प्रत्येक लड्डू १०० ग्रामक होइत अछि। एहि लड्डूकेँ अन्तर्राष्ट्रीय पेटेन्ट कराओल गेल अछि जाहिसँ नकली लड्डूक कारोबारपर लगाम लगाओल जाए।

कहल जाइत अछि जे तिरुपतिमे भगवान वेंकटेश्वरक सामने जरैत दीप हजारो वर्षसँ अविरल प्रकाशित भए रहल अछि। ईहो कहल जाइत अछि जे भगवानक माथपर वास्तविक केस अछि जे सदिखन चिक्कन रहैत अछि। निरन्तर दूध, जलसँ स्नानक बाबजूद भगवान वेंकटेश्वरक मूर्तिक तापक्रम १०० डिग्री फारेनहाइट रहैत अछि। माघक महिनामे मन्दिरमे सुप्रभातक भजन नहि बजाओल जाइत अछि। कहल जाइत अछि जे भगवान ओहि मासमे जगले रहैत छथि। मन्दिरमे चढ़ाओल गेल केसकेँ मन्दिरक ट्रस्ट द्वारा बेचि देल जाइत अछि जाहिसँ ओकरा कड़ोरोंक आमदनी होइत अछि।

१८०० ई.मे मन्दिर १२ वर्ष धरि बन्द रहल छल। एकटा राजा दण्ड-स्वरूप १२ टा अपराधीकेँ मारि कए मन्दिरक देबालसँ लटका देने रहथि जाहि समय भगवान स्वयं प्रकट भए गेल रहथि। अनुमानत: मन्दिरक पास ५२ टन सोना अछि । प्रतिवर्ष करीब तीन हजार किलोग्राम सोना मन्दिरमे चढ़ाओल जाइत अछि।

मन्दिरक वार्षिक आमदनी ७०० मिलियन डॉलर अछि। कहल जाइत अछि जे कलियुगक प्रारम्भ भेलापर भगवान विष्णु वेंकटाद्रि छोड़ि कए श्रीवैकुण्ठ चलि गेलाह। व्रह्माजी अहि बातसँ बहुत दुखी भेलाह आ नारद ॠषिकेँ आग्रह केलखिन जे भगवान विष्णुकेँ वेंकटाद्रि आपस अएबाक हेतु मनाओल जाए।

नारद मुनि जखन गंगाकात पहुँचलाह तँ अनेकानेक ॠषिगण यज्ञ करैत रहथि। ओ सभ ई नहि तय कए पाबि रहल रहथि जे आखिर

एहि यज्ञक पुण्य ककरा देथि। अन्तमे भृगु ऋृषिकेँ एकर निर्णय करबाक हेतु कहल गेल।

भृगु ऋृषि स्वभावसँ बहुत तामसी रहथि। ओ बेरा-बेरी व्रह्मा, विष्णु तथा महेशक ओहिठाम गेलाह, परन्तु किओ हुनकापर ध्यान नहि देलखिन। एहि क्रममे सभसँ अन्तमे ओ विष्णु लग गेल रहथि। विष्णु लक्ष्मीक संग वार्तालापमे मग्न रहथि। एहि बातसँ कुपित भए भृगु ऋषि विष्णु भगवानक छातीपर लात मारि देलखिन।

विष्णु भगवानकेँ भक टुटल तँ ओ भृगु ऋृषिसँ क्षमा मांगय लगलाह। अफसोच करए लगलाह। जे कहीं हुनका पैरमे चोट तँ नहि लागि गेलनि। भृगु विष्णु भगवानक शान्त ओ उदार प्रवृतिसँ बहुत प्रभावित भए गेलाह। ओ ऋृषि सभकेँ आपस आबि कहलखिन जे हुनका लोकनिक यज्ञक पुण्यक सही अधिकारी भगवान विष्णु छथि। मुदा लक्ष्मी भृगु द्वारा भगवान विष्णुक अपमानसँ कुपित भए महाराष्ट्र प्रान्तक करवीरपुर चलि गेलीह। एहि प्रकारेण लक्ष्मीकेँ चलि गेलाक बाद विष्णु भगवान बहुत दुखी भए गेलाह आ वैकुण्ठ छोड़ि वेंकटाद्रि पहुँचि गेलाह।

भगवान विष्णुक एहि दशापर व्रह्माजी एवम् शिवकेँ बहुत दुख भेलनि। ओसभ गाय, बछड़ा बनि पहाड़पर भगवान विष्णुक सेवा करबाक हेतु पहुँचि गेलाह। भगवान सूर्य ई बात बुझि लक्ष्मीकेँ कहलखिन। लक्ष्मी चोल राजाक हाथे ओहि गाय एवम् बछड़ाकेँ बेचि देलखिन।

चोल राजाक चरबाह ओहि गाय एवम् बछड़ाकेँ नित्य आन गाय सभक संगे चरबए हेतु पहाड़पर लए जाइत छल। मौका पबिते ओ गाय भगवान विष्णुकेँ दूध देबए पहुँचि जाइत। क्रमश: ई बात ओहि

चरबाहकेँ पता लगलैक आ ओ कुरहरिसँ गायकेँ मारए लागल कि विष्णु भगवान ओहि गायकेँ बचा लेलथि मुदा कुरहरि उछलि कए ओहि चरबाहकेँ लगलैक आ ओ ओहीठाम धाराशायी भए गेल।

एहि धटनाकेँ देखि गाय चोल राजा लग चलि गेल। गायकेँ खून लागल देखि ओ पछोर करैत ओहिठाम आएल तँ अपन चरबाहकेँ मरल देखलक। विष्णु भगवान चोल राजाकेँ देखिते कुपित भए गेलाह आ ओकर चरबाह द्वारा गायकेँ कुरहरिसँ मारबाक प्रयासक कारणें ओकरा श्राप देलखिन जे तूँ राक्षस भए जेबें। आब तँ चोल राजा भगवानक आगू दहारि पाड़ए लागल।

बहुत उचिती-विनती केलक तँ भगवानकेँ दया आबि गेलनि। ओ ओकरा कहलखिन जे पद्मावतीक संग हुनकर विआहक समय जखन अक्ष राजा द्वारा देल गेल स्वर्ण मुकुट हुनका चढ़ओताह तँ हुनकर एहि श्रापसँ मुक्ति भए जाएत। चरबाहक आत्माकेँ सेहो ओ मुक्तिक उपाय बतबैत कहलखिन जे ओ एवम् ओकर वंशज भगवान वेंकटेश्वरक द्वारकेँ सर्व प्रथम खोलताह।

कालक्रमे चोल राजाक जन्म अक्ष राजाक रूपमे भेल। अक्ष राजाकेँ खेत जोतैत काल एकटा सुन्दर कन्या भेटलनि जकर नाम पद्मावती राखल गेल। कालक्रमे पद्मावतीक विआह विष्णु भगवानसँ भेलनि। विष्णु भगवानकेँ बिआहक खर्चा हेतु कुबेरसँ ऋृण लेबए पड़लनि। ओही ऋृणक सधाबक हेतु भगवानपर धन चढ़एबाक प्रथा अछि। जखन लक्ष्मीकेँ ई समाचार भेटलनि तँ ओ ओहिठाम अएलीह। एकहि संगे अपन दुनू पत्नीकेँ देखि भगवान अत्यन्त विस्मित भए गेलाह आ ओही ठाम पाथरक रूप धए लेलाह, जे आब वेंकटेश्वर भगवानक रूपमे जानल जाइत अछि। तकर बाद भगवान शिव एवम्

भगवान व्रह्मा प्रकट भए लक्ष्मी एवम् पद्मावतीकेँ बुझओलखिन जे भगवान जन कल्याण हेतु एहि रूपकेँ धारण केलनि अछि।

तीरुपतिमे हम तीन बेर दर्शन केने छी। पहिल बेर बंगलौरसँ एकटा अधिकारीजीक संगे गेल रही। बंगलौरसँ तीरुपति मन्दिरक दूरी ३०० किलोमीटर अछि। हम सभ कारसँ गेल रही जाहिमे चारि घन्टा समय लागल रहए। ओहि समयमे आन्ध्रामे तेलंगाना राज्यक निर्माण हेतु आन्दोलन चलि रहल छल (सन् २००९ क बात थिक)। तैँ जा सकब कि नहि से संदेहास्पद छल। हमरा संगे चलनिहार अधिकारीजीक दृढ़ इच्छाक कारणे हम सभ आगा बढ़ैत गेलहुँ। कनी-मनी असुविधा कतहुँ-कतहुँ भेल मुदा कार आगा बढ़ैत गेल।

तीरुपति मन्दिर पहुँचलाक बाद हमरा सभ हेतु तत्काल दर्शनक जोगार भेल जाहिसँ अपेक्षाकृत कमे समयमे दर्शन भए जाइत अछि। ओहि समयमे तत्काल दर्शन हेतु ३०० रूपया दक्षिणा आ सिफारशी पत्र सेहो चाही। दर्शनक पंक्तिक अन्तिम छोरपर आबि कए सामान्य तीर्थयात्री आ तत्काल टिकटबला यात्री सभ मिलि जाइत छथि। अन्दर गर्भ गृहमे भगवानक दर्शन दूरेसँ भेल। मोसकिलसँ एक-दू मिनट ठाढ़ भेल भगवानकेँ गोहरओलहुँ। ततेक ने भीड़ रहैत छैक जे मन्दिरक प्रशासनक हेतु कोनो दोसर समाधानो नहि छल। दुनू टिकटपर चारि-चारिटा बड़का लड्डू भेटल से सभ लए हम सभ आसे-पास स्थित एकटा भोजनालय गेलहुँ।

ओहिठाम भोजनक अति उत्तम व्यबस्था छल। भोजन परसएमे किछु समय लगलैक मुदा जखन भोजन करए लगलहुँ तँ सभ दुख बिला गेल। सौंसे रस्ताक थकान दूर भए गेल। भोजनोपरान्त हम सभ बेसी एमहर-ओमहर नहि कएलहुँ आ सोझे बंगलौर हेतु आपसी

यात्रापर निकलि पड़लहुँ। रातिमे करीब ९ बजे हम सभ अपन होटल आपस आबि गेलहुँ। अस्तु, ई समस्त यात्रा प्रकरण एकहि दिनमे पूरा भए गेल। एहिमे दर्शन तँ भए गेल मुदा यात्रा बहुत थकाउ छल आ लग-पासक चीज-वस्तु किछु नहि देखलहुँ से बात मोनमे रहि गेल।

मन्दिरमे परिक्रमा काल नोट सभहक अपार गड्डी सभ देखबामे आओल। कतेको लोक ओहि रूपया सभकेँ सरिअबैत छलाह, मशीनसँ गनैत छलाह आ गड्डी बना-बना कए रखने जाथि। ओ सभ काज चारूकातसँ घेरल लोहाक बंद घरक अन्दर होइत छल जाहिमे लोहाक ग्रील लागल छल जाहिसँ कोनो प्रकारणक गड़बड़ी नहि भए सकए। कहल जाइत अछि ते तिरुपतिक वेंकटेश्वर मन्दिर हिन्दूक सभसँ धनीक मन्दिर अछि। मन्दिरकेँ नित्य कड़ोरों रूपया चन्दामे भेटैत अछि। एहि रूपयाक हिसाब-किताब मन्दिरक ट्रस्ट रखैत अछि। नाना प्रकारक जन कल्याणक काज जेना नि:शुल्क चिकित्सालय, विद्यालय, वृद्ध सेवा आदि एहि ट्रस्ट द्वारा संचालित होइत अछि। मुदा हमरा ई नहि बुझएमे आबि रहल अछि जे एतेक रूपैया-पैसासँ भगवानकेँ कोन मतलब आ ने भगवान ककरोसँ मांग करैत अछि मुदा लोक अछि जे मानबे नहि करत। ओ सभठाम अपन एश्वर्य लए कए ठाढ़ भए जाइत अछि।

एकर बाद हम दू बेर श्रीमतीजीक संगे तिरुपति गेलहुँ। एक बेर तँ चेन्नइसँ ट्रेन पकड़ि कए गेलहुँ आ ट्रेनेसँ एक दिन रहि कए आपस भए गेलहुँ। एहि यात्राक हेतु स्वत: सभटा व्यबस्था केने रही। ऑनलाइन दर्शन, आवासक आरक्षण केने रही। नियत समयपर हम सभ मन्दिरक लग-पास पहुँचि गेल रही। पहिने पर्ची देखा कए आवासक व्यबस्था कएल। चारूकात जेना धर्मशालाक भरमार अछि।

किसिम-किसिम केर आकार-प्रकार ओ सुविधायुक्त घर सभ। हम सभ अपन कोठरी गेलहुँ, सामान रखलहुँ, स्नान केलहुँ। धोती-कुरता पहीरि मन्दिरमे दर्शनक हेतु नियत स्थानपर गेलहुँ तँ पता लागल जे तत्काल दर्शनभोरे ४ बजेक बाद खुजत आ तखने ओकर टिकट भेटत। हमरा लगमे पहिनेसँ साधारण टिकट छल जाहिमे बहुत समय लगैत। अस्तु, हम सभ चारि बजे भोरेबला कार्यक्रम बनओलहुँ। डेराक आगू टैक्सी भेटि गेल। थोड़बे कालमे हम सभ नियत स्थानपर पहुँचि पंक्तिमे लागि गेलहुँ। जाबे हम सभ पहुँची, पहुँची ताबे तत्काल दर्शनबलामे बहुत लोक आबि गेल रहथि।

तत्काल दर्शनकेँ ई हाल रहैक जे लगभग तीन घन्टा कतारमे लागल रहए पड़ल। दू घन्टा आगू बढ़लाक बाद ओ स्थान रहैक जतए सभकेँ तत्काल टिकट देल गेलैक। तकर बादो बहुत काल अहिना गोविंदा,गोविंदाक जयकारा लगबैत लोक आगा ससरैत रहल। पुरुष, पहिला, वृद्धसभ आगा बढ़ैत रहए, कीर्तन करैत रहए। निश्चय ई बड़का तप छल। अन्ततोगत्वा हम सभ मन्दिरमे प्रवेश केलहुँ।

मन्दिरमे पहुँचिते देरी व्यबस्थापक सभ आगू ठेलए लागै जाहिसँ मोनमे बड़ा कष्ट होइ, कारण घन्टो लोक पंक्ति लगाओलक, हजारो कोससँ कोन-कोन व्योंत कए कए आएल आ जखन भगवान सामने छथि तँ लोक कनिको काल निचैनसँ प्राथनो नहि कए सकए से कतहुँसँ वाजिब नहि लगैत अछि। लोकक बात के बूझत? सभसँ थाकि कए तँ लोक भगवान लग आएल। आब कतए जाएत? जे भेलैक, मुदा दर्शन भेल। मोन बहुत उत्साहित रहए। जे-जे फुराएल से जल्दीसँ भगवानकेँ कहि देलिअनि आ बाहर भए गेलहुँ। बाहर अएलाक बाद प्रसादक खिड़कीपर पर्ची देखेलापर बड़का-बड़का लड्डू

प्रसादमे भेटल।

हमरा किछु आओर लड्डू लेबाक छल। तकर व्यबस्था रहैक। पैसा देलापर किछु आओर लड्डू भेटि गेल। ओहि लड्डूक स्वादक वर्णन नहि। पटनाक महावीर स्थानमे ओही तरहक लड्डू नैवेद्य कए कए भेटैत छैक मुदा तिरुपतिक लड्डूक बाते अलग अछि।

दर्शनक बाद हमसभ भोजनक ताकमे निकललहुँ। पछिला बेर जाहि भोजनालयमे खेने रही से बड़ नीक छल, ओकरे ताकबाक प्रयास कएल मुदा से नहि भेटल। तखन जे भेटल ओहीमे बैसि गेलहुँ कारण भूख जोर मारि रहल छल। पुष्टसँ भोजन कए, टैक्सी पकड़ि हम सभ डेरा आपस आबि गेलहुँ।

तिरुमालसँ तिरुपति आपसीक क्रममे बीच-बीचमे कैटा दर्शनीय स्थल छल। से सभ देखैत-सुनैत तिरुपति पहुँचलहुँ। ओहूठाम लक्ष्मी मन्दिर गेलहुँ। सामान सभ टैक्सीए-मे राखल रहए। चिन्तो होइत छल मुदा ओ टैक्सीचालक बहुत सही आदमी छल। ओ पहिने तिरुपति मन्दिर ट्रस्टक छल। किछुए दिन पूर्व सेवा निवृत्त भेल रहए।

ट्रेनक समय लगीच आबि रहल छल। हम सभ धड़फड़ा कए ट्रेनमे चढ़ि गेलहुँ। तिरुपतिसँ सोझे चेन्नइ ट्रेन जाइत रहैक। रस्तामे चारि घंटा समय लागल जे गप्प-सप्प करैत कोना बीति गेल से पता नहि चलल।

तेसर बेरक यात्रा सभसँ अविस्मरणीय थिक। कारण एहिबेरक सभ व्यबस्था आन्ध्र प्रदेश सरकारक एकटा मंत्रीक सिफारिशसँ भेल छल। हुनकर ओएसडी हमर परिचित छलाह। ओएह सभटा काज अपन देख-रेखमे करओलथि। कहबी छैक जे जतेक चीनी देबैक ततेक मिट्ठ होएत। सएह हाल तिरुपतिक दर्शनक अछि। जेहन पैरवी

तेहन काज। ओना ऑनलाइन आरक्षणक लाभ उठबैत सभटा व्यबस्था कएल जा सकैत अछि, मुदा ताहि हेतु दू मास पूर्वे सभटा आरक्षण कराएब जरूरी अछि नहि तँ सभ सभटा स्थान तुरंते भरि जाइत अछि।

ओहिठामक सरकारक मंत्रीजीक तरफसँ एकटा गाड़ी ओ एकटा कर्मचारी सतति हमरा सभकेँ संगे रहैत छल। चालक बड़ा नीक लोक छल। एहि बेरक यात्रामे हम सभ हैदराबादसँ हवाई जहाजसँ आएल रही। हवाई अड्डेपर चालक टैक्सी लए कए उपस्थित रहथि। टैक्सीमे बैसि पहिने खिड़कीपर जाए दर्शनक पर्चीसभ निकालल गेल। एकटा दर्शन तँ रातिएमे करबाक रहैक। दोसर प्रात: ब्राह्मी मुहुर्तमे। हमरा सभक रहक एकटा बंगलानुमा घर छल। सुसज्जति, सभ तरहेँ परिपूर्ण।

डेरामे मन्दिरमे प्रसारित होइत मंत्रोच्चार सतति सुनाइ पड़ैत छल। ताहि हेतु कोठरियेमे स्पीकर लागल रहए। पूर्णत: वातानुकूलित कक्ष, सफाइक पराकाष्ठा छल। अगल-बगल ओहने कतेको घर सभ मन्दिर प्रशासनक द्वारा बनाओल गेल छल। रातिमे करीब दस बजे हम सभ दर्शनक हेतु पहुँचलहुँ। मोसकिलसँ आध घन्टामे अन्दर गर्भ गृहमे पहुँचि गेलहुँ। कुल पचास गोटेकेँ ई दर्शन कराओल जेबाक रहैक। सभठाम एकर पंक्ति फराक।

दनदनाइत हम सभ पंक्ति पकड़ए गेलहुँ। मन्दिरक गर्भ गृहमे हम सभ करीब ४५ मिनट रहलहुँ। नाना प्रकारक मंत्रोच्चार होइत रहल। पूजाक समयमे मन्दिरमे विलक्षण दृश्य छल। मूर्तिक दुनू कात भगवानक रक्षक सभक मूर्ति छल। भगवानक मूर्ति तँ सोनासँ छारल छल। पूजा समाप्तिक बाद आरती भेल आ तकर बाद हम सभ डेरा

आपस आबि गेलहुँ।

प्रात भेने चारिए बजे हम सभ फेर मन्दिर पहुँचलहुँ। व्रह्ममुहुर्तमे भगवानकेँ जगाओल जाइत अछि। फेर हम सभ धराधर मन्दिरक अन्दर हाजिर भए गेलहुँ। कतहुँ भीड़क सामना नहि करए पड़ल। करीब घन्टा भरि किसिम-किसिमसँ पूजा होइत रहल। तखन भगवान उठलाह। हुनकर पट्ट खुजल। विलक्षण दृश्य छल। भगवानक चमकैत मूर्तिपर नजरि नहि ठहरैत छल। पूजाक बाद आरती भेल। हमरा सभकेँ मन्दिरसँ निकललाक बाद प्रसाद देल गेल। किछु अतिरिक्त प्रसाद सेहो हम किनलहुँ। कारण ओ लड्डू बहुत स्वादिष्ट होइत अछि। हम ओकरा आपस अएलाक बाद बहुत दिन धरि खाइत रहलहुँ। एतेक नीकसँ तिरुपति भगवानक दर्शन होएब बहुत भाग्यक बात छल। पछिला दू बेरक अनुभव एकदम अलग छल। जँ दर्शन करए जाइते छी तँ बढ़ियाँसँ दर्शन भए जाए से प्रयास करबाक चाही। ताहि हेतु किछु वेशेष खर्चा कए समय रहिते विशेष पूजाक आरक्षण कराबी किंवा कोनो तत्कालसँ सिफारिस लगाबी, तखने से सम्भव।

तिरुमाला स्थित भगवान वेंकटेश्वरक मन्दिरक लग-पास कैटा दर्शनीय स्थलमे सँ एकटा अछि श्रीवेंकटेश्वर संग्रहालय। सन् १९८० मे स्थापित ई संग्राहालय मूल मन्दिरसँ मात्र एक किलोमीटर दूरीपर वैकुण्ठ क्यू परिसर दू लग अवस्थित अछि। एहि संग्रहालयमे मन्दिरसँ जुड़ल बहुत रास ऐतिहासिक, धार्मिक वस्तु सभ राखल अछि। भक्त लोकनि हेतु एतए एकटा ध्यान मन्दिर सेहो अछि।

थोड़बे दूरीपर इस्कानक राधाकृष्ण मन्दिर अछि जतए राधा कृष्णक विलक्षण प्रतिमा दर्शककेँ मंत्रमुग्ध कए दैत अछि। मन्दिरक अन्दरे बहुत सुन्दर अतिथि गृह अछि जाहिमे भक्तगण एकाध दिन

आरामसँ रहि सकैत छथि। एहि मन्दिर द्वारा गरीब विद्यार्थी सभक हेतु विद्यालय चलाओल जाइत अछि।

एकटा निरन्तर 'हरे राम हरे कृष्ण' संकीर्तन होइत रहैत अछि जाहिसँ सम्पूर्ण वातावरण भक्तिमय बनल रहैत अछि। एहि प्रकारेण तिरुमालासँ तिरुपतिक यात्रामे छोट-मोट कतेको मन्दिर सभ देखैत-सुनैत हम सभ आगा बढ़लहुँ। भोरे-भोर दर्शन भए गेलाक बाद हम सभ बहुत सन्तुष्ट रही। दू बेर एतेक नीकसँ तिरुपति भगवानकेँ दर्शन भेल से अहोभाग्य! तकर बाद हम सभ डेरा अएलहुँ। तकर बाद थोड़बे कालमे आपसी यात्रा हेतु तिरुपति हवाई अड्डा हेतु प्रस्थान कए गेलहुँ।

◌

जगन्नाथाय ते नम:

कलकत्तासँ पुरीक हेतु गरीबरथ ट्रेनसँ हमरा लोकनिक आरक्षण छल। रातिमे नियत समयपर हमरा लोकनि टीसनपर पहुँचि गेलहुँ। संगमे आओर परिवारिक लोक/सभगोटे ट्रेनमे आरामसँ बैसि गेलहुँ। एकदम नव ट्रेन छलैक। नव कनिआँ जकाँ नीकसँ सजल धजल। किछुए दिन पहिने ई ट्रेन ओहि मार्गपर चलल छल। केन्द्र सरकारक रेल मंत्रालयक योजनाक अनुसार देशक विभिन्न भागमे गरीबरथ ट्रेन चलाओल गेल। एहि ट्रेनक सभ डिब्बा वातानुकूलित रहैत अछि। किराया अपेक्षाकृत कम रहैत अछि।

एकबेर गरीबरथसँ हम दिल्लीसँ मधुबनी जाइत रही। कहुना कए गाड़ीमे ढुकलहुँ। ढुकि तँ गेलहुँ मुदा ओहिमे तँ महौले विचित्र छल। किसिम-किसिमक यात्री, अधिकांश युवक, अर्द्धशिक्षित बुझाइत छल। जोर-जोरसँ मोबाइलमे भोजपुरी नाचक गाना चलि रहल छल। कनिके कालमे बुझाएल जे कान फाटि जाएत। एकटा सहयात्रीकेँ कहलिअनि जे कनी कमे आवाजमे गीत बजाबथि तँ तुरन्त जवाब केलाह जे वो अपना शायिका पर बजा रहल छथि, ताहिमे अनका की? कोनो ओ टिकटक पैसा खर्च नहि केलाह अछि? उत्तर सुनि अवाक् रहि गेलहुँ। चारूकात एहन परिवेशमे केना यात्रा होएत?

ई सभ कहक माने ई जे गरीबरथ ट्रेनसँ यात्रा लए कए सशंकित छलहुँ, आखिर एहिमे की दृश्य होएत? परन्तु से हाल नहि छल। ट्रेन खाली छल। शायिका सभ एकदम नव। डिब्बाक रंग रोशन सेहो आकर्षक। तैँ राजधानी एक्सप्रेससँ कनीको कम बात नहि बुझाइत छल।

ट्रेनमे अपन-अपन शायिका पर ओछाओन ओछा, कम्बल ओढ़ि सुति रहलहुँ आ भोरे जहन निन्न टुटल तँ हम सभ पुरी स्टेशनपर छलहुँ।

ट्रेनसँ उतरि एकटा तिपहिआ पकड़ि हम सभ वन विभागक अतिथि गृह विदा भेलहुँ। एहि अतिथि गृहमे आरक्षण पहिने सँ केने रही। ताहि हेतु वन विभागक भूवनेश्वर स्थित अधिकारीकेँ आग्रह पत्र पठओने रहिअनि। हमर आग्रहकेँ मानैत दूटा कोठरी आरक्षित कए देने रहथि।

पुरी स्थित वन विभागक अतिथि गृह हम सभ भोरे पहुँचि गेल रही। रखबार सभ सुतल रहथि। मोसकिलसँ हुनका लोकनिकेँ उठाओल गेल। आवश्यक खानापूरी कए रखबार दूटा कोठरीक कुंजी हमरा दए देलक। दुनू कोठरीकेँ आकार-प्रकार भव्य छल। असलमे किछु आओर गोटेकेँ कलकत्तासँ संगे आबक छलनि, जे नहि आबि सकलाह तँ कोठरी सभक पूरा उपयोग नहि भए सकल।

अतिथि गृहक केअर टेकर बेस जोगारू छल। ओ हमरा सभक आवश्यकतानुसार सभ विस्तुक व्यबस्था कए देलक। मन्दिरमे विशेष दर्शनक संग रातिमे भोग खेबाक तकक इन्तजाम ओकरे तरफसँ भए गेल। हमरा लोकनि नित्यकर्मसँ निवृत्त भए मन्दिर दर्शन हेतु विदा भेलहुँ।

हम सभ मन्दिर पहुँचलहुँ। ओ पण्डा सदिखन छाँह जकाँ हमरा सभकेँ पिठिऔने रहल। कखनहुँ आन पण्डाक कुदृष्टि नहि पड़ि जाए ताहि हेतु सचेष्ट रहैत छल ओ। ओहि पण्डाक संगे रहलासँ मन्दिरक पुजारी सेहो तंग नहि करैत छल। चैनसँ पूजा-पाठ करू, चारूकात त्रिपेक्षण करू।

मुदा एकटा मन्दिरमे हाले-बेहाल छल। प्राय: ओहिमे स्त्रीगण सभ पूजा करैत छलीह। अन्दर महिले सभ पूजारी रहैक। जौं मनोनुकूल पाइ देलियैक तखन तँ ठीक नहि तँ भगवाने मालिक। मन्दिर ओ महिला गरियाबए लगैत। बिखनि-बिखनि कए गारि सुनि मोन भरि जाइत। एहन दुर्दशासँ बचबाक सरल एवम् एकमात्र समाधान छल जे ओकर बात मानि लिअ आ ओकरा टाका दए शान्त करू। चूँकि हमरा लोकनिक जोगार छल, तैँ हम सभ जगर्न्नाथ मन्दिरक गर्भगृह धरि आरामसँ गेलहुं। निचैनसँ पूजा केलहुं आ इज्जतिसँ बाहर भए गेलहुं, अन्यथा सामान्य लोकक तँ दुर्गति छल।

हम सभ पूजा-पाठ सम्पन्न कए पण्डाजीसँ छुट्टी लेल। ओ कहलाह जे साँझमे भोग लए कए डेरापर अएताह। तकर बाद हमरा लोकनि मन्दिरसँ कनिके दूरपर स्थित भोजनालय पहुँचलहुँ आ जानिए कए स्थानीय स्वादसँ बनाओल गेल भोजन केलहुं। भोजनोपरान्त डेरा पहुँचि विश्राम कएल। साँझसँ कनी पहिनहि हम सभ समुद्र तटक आनन्द लेबए विदा भेलहुं।

समुद्रक कछारपर पहुँचि जेना स्वर्ग पहुँचि गेलहुं। दूर-दूर धरि पसरल बीरान स्थान, चारूकात बाउलक आँगनमे हिलोर मारैत समुद्रक तरंग। एकहि बेरमे अहिकातसँ ओहि कात कए दैत छल। गर्मीक साँझमे पानिक प्रहार सुखद लगैत छल। मोन होइत छल जे ओतहि ठाढ़े रहि जाइ मुदा डरो भए जाए। कै बेर ततेक जोरसँ हिलोर अबैत जे ठाढ़ रहब मोसकिल। ओना समुद्रक कछार सभ ठाम एकहि संग बुझाइत छैक चाहे ओ चेन्नई हो वा हारभेस्ट द्वीप, मुदा स्थान-स्थानक तँ अपन स्वाद होइते अछि। फेर पुरीक समुद्रक कछारक बहुत लग धरि नाना प्रकारक दोकान, होटल, भोजनालय सभ खुजि

गेल अछि।

कछारसँ कनिके हटि कए किसिम-किसिमक दोकान सभ छल। शंख, मोती एवम् अन्य समुद्रीय चीज-वस्तुक भरमार जे किओ अबितै सएह असली मोतीक दाबा करैत। असली रहए कि नकली से तँ नहि कहि मुदा रहए सस्त। किछु मोतीक माला, एकाधटा शंख हमहूँ सभ कीनलहुँ।

कछारसँ कनिके हटि कए बहुत रास दोकान सभ अछि। कनिक आओर ऊपर चढ़ब तँ बड़का-बड़का स्थापित दोकान भेटत। ओहने एकटा दोकानमे हम सभ किछु नीक-नीक सारी कीनलहुँ। राति बेसी भेल जाइत छल। भूख जोर मारि रहल छल। सभक इच्छा रहैक जे आब भोजन कएल जाए। हम सभ डेरा आपस अएलहुँ। मन्दिरक पण्डाजी भोग लए कए उपस्थित रहथि। पर्याप्त मात्रामे अति स्वादिष्ट भोग ग्रहण केलहुँ। सभकेँ जानमे जान आओल। भोजन होइते करवन सुति रहलहुँ से नहि कहि...।

भगवान जगर्न्नाथकेँ समर्पित जगर्न्नाथ मन्दिर एकटा प्रमुख तीर्थ स्थान अछि। चारिटा धाममे एकरो गणना होइत अछि। एहि मन्दिरक निर्माण इन्द्रद्युम्न राजा करओने रहथि। कहल जाइत अछि जे इन्द्रद्युम्नकेँ समुद्रमे एक विशालकाय लकड़ी देखाएल। राजा ओहिसँ विष्णुक मूर्तिक निर्माण करए चाहैत छला। ताहि काज हेतु वृद्ध लोहारक रूपमे विश्वकर्मा स्वयं उपस्थित भए गेलाह। वो विष्णुक मूर्ति बनेबाक हेतु एहि शर्तपर सहमति देलाह जे ओहि दौरान एकटा कोठरीमे बन्द रहताह आ किओ हुनकर एकान्त भंग नहि करत। राजा एहि बात हेतु तैयार भए गेलाह। वो बुढ़ लोहार एकान्तमे अपन काजमे लागि गेल। जखन बहुत दिन बीति गेल आ ओ बुढ़ लोहार बाहर नहि

आएल तँ रानीकेँ ओकर चिन्ता होमय लगलनि। ओ अपन चिन्तासँ राजाकेँ अवगत करओलथि। राजाकेँ रानीक चिन्ता वाजिब बुझेलनि। राजा रानी दुनू ओहि बुढ़ लोहारकेँ तकैत ओहि कोठरी धरि पहुँचलाह। ओहिठामक दृश्य देखि ओ सभ अवाक् रहि गेलाह। ओहिठाम सँ बुढ़ लोहार गायब छल। मुदा ओकर बनाओल अर्द्धनिर्मित श्री जगर्न्नाथ, सुभद्रा एवम् बलरामक काष्ठ मूर्ति ओतए भेटलनि। महाराजा ओ महारानीकेँ दुखी देखि आकाशवाणी भेल-

“अहाँ सभ व्यर्थ चिन्ता नहि करू। हम एही रूपमे रहए चाहैत छी। अहाँ हमरा एहि रूपमे स्थापित कए दिय।”

अखनो अपूर्ण ओ अस्पष्ट मूर्ति भगवान जगर्न्नाथक मन्दिरमे विराजमान छथि। हुनके रथयात्रामे प्रतिवर्ष मन्दिरसँ निकालि घुमाओल जाइत अछि। श्रीजगर्न्नाथजीक रथ यात्रामे भगवान श्रीकृष्णक संग बलराम ओ सुभद्रा होइत छथि।

एहिठामक रथ यात्रा जगत प्रसिद्ध अछि। रथ यात्राक दौरान मन्दिरक तीनू मूर्तिकेँ सुसज्जित रथपर घुमाओल जाइत अछि। जगर्न्नाथक मूर्ति लकड़ीक बनल अछि जकरा १२ वा १६ सालक बाद ओहने मूर्ति द्वारा बदलि देल जाइत अछि। शंकराचार्य, रमानन्द एवम् रामानुज सन-सन प्रसिद्ध सन्त एहि मन्दिरसँ जुड़ल छलाह।

रथ यात्रा प्रति वर्ष मनाओल जाइत अछि। भगवान जगर्न्नाथ, भगवान वलभद्र एवम् सुभद्राकेँ सुदर्शन रथपर बैसाए सैंकड़ो-हजारो भक्त सभ ओहि रथकेँ खीचैत अछि। सात दिनक बाद मूर्ति सभ अपन-अपन स्थानपर आबि जाइत छथि।

रथ यात्रा दुनिआक सभसँ पैघ उत्सव कहल जा सकैत अछि। कहल जाइत अछि जे किओ कोनो रूपसँ रथ वा ओकरो कोनो भागसँ

सटत ओकर सभटा पाप कटि जाइत अछि।" रथे तुवामनम् द्दष्ट्वा पुनर्जन्मम् न विद्यते। ”

श्रीजगर्न्नाथजीक रथयात्रा सांस्कृतिक एकताक ज्वलन्त उदाहरण अछि। पूरीक प्रमुख पर्व होइतो ई समस्त देशमे श्रद्धासँ मनाओल जाइत अछि। जे पूरीक रथयात्रामे सामिल नहि भए पबैछ से सभ अपन-अपन शहरमे एहिमे सामिल हेबाक प्रयास करैत अछि।

भगवान जगर्न्नाथक कहब छनि जे सभ मनुक्ख हुनकर प्रजा अछि। 'सभ मनिसा मोर परजा।' स्कन्द पुराणमे कहल गेल अछि जे जे व्यक्ति रथयात्रामे भाग लेत, जगर्न्नाथजीक कीर्तन करत, ओकरा सभक कल्याण निश्चित अछि। रथ एक सप्ताह धरि गंगाक कातमे ठाढ़ रहैत अछि। एहि बीचमे भक्तगण हुनकर पूजा पाठ करैत छथि। एक सप्ताहक बाद फेरसँ यात्रा प्रारम्भ होइत अछि एवम् समारोह पूर्वक रथकेँ मन्दिरमे लए आनि मूर्ति सभकेँ अपन स्थानपर राखि देल जाइत अछि।

रथयात्राक रथक ऊँचाइ १३७ मीटर एवम् बीचक स्थान १०७ मीटर नाम ओ ओतबे चाकर होइत अछि। एहिमे १६टा पहिया होइत अछि। रथमे घोड़ा जोतल देखाइत अछि। एहि विशाल रथकेँ भक्तगण मजगूत जौरीसँ घीचैत छथि। कहल जाइत अछि जे भगवान जगर्न्नाथक नीलमणिसँ निर्मित मूल मूर्ति अगरूक गाछ लग भेटल छल। ई ततेक चमकैत छल जे धर्म एकरा पृथ्वीक नीचाँमे नुकाबय चाहलक। मालवा नरेश इंद्रद्युम्नकेँ स्वप्नमे ई मूर्ति देखाएल। वो बहुत तपस्या केलाह तखन हुनका स्वप्नमे भगवान विष्णु दर्शन देलखिन आ कहलखिन जे वो समुद्र तटपर जाथि। ओतहि हुनका लकड़ीक लठ्ठ भेटलनि जाहिसँ भगवान जगर्न्नाथक निर्माण कराओल गेल।

महाराजा रणजीत सिंह एहि मन्दिरमे प्रचूर मात्रामे स्वर्ण दान देलथि। कहल जाइत अछि जे ओ अपन वसीयतमे कोहिनूर हीरा एहि मन्दिरकेँ दान केने रहथि मुदा ब्रिटिश द्वारा पंजाबकेँ जीत लेल गेल आ कोहिनूर जगर्न्नाथ मन्दिरक नहि भए सकल। आइ-काल्हि कोहिनूर ब्रिटेनक महारानीक कब्जामे अछि।

जगर्न्नाथ भगवानक प्रार्थना हेतु किछु प्रसिद्ध श्लोकक स्वत: स्मरण भए जाइत अछि-

"नीलाचल निवासाय नित्याय परमात्मने

बलभद्र सुभद्राम्यां जगन्नाथाय ते नम:

जगदानन्दकान्दय प्रणतार्तहराय च

नीलाचल र्निवासाय जगन्नाथाय ते नम:"

जगर्न्नाथ भगवान समस्त समाजक समरसता एवम् अध्यात्मक ऐतिहासिक तीर्थ स्थल अछि। एहिठाम जातीय आधारपर कोनो भेदभाव कहिओसँ नहि कएल जाइत छल।

जगर्न्नाथ मन्दिरक बारेमे कहल जाइत अछि जे एकर ऊपर कोनो चिड़ै नहि उड़ैत अछि। मन्दिरक छाँह कखनो जमीनपर नहि पड़ैत अछि। मन्दरिक सिंहद्वारमे प्रवेश केलाक बाद समुद्रक तरंगक ध्वनि नहि सुनाइछ मुदा बाहरी द्वारपर पहुँचिते से सुनाइत अछि। सामान्यत: दिनक समय समुद्रक हवा समुद्रसँ जमीनक तरफ बहैत अछि मुदा पुरीमे ठीक एकर उल्टा होइत अछि। मन्दिरक ऊपर विराजित ध्वज हवाक प्रतिकूल दिशामे फहराइछ। ईहो देखल जाइत अछि जे एहि मन्दिरक ऊपर स्थित सुदर्शन चक्र निरंतर अहाँकेँ सामने लागत चाहे अहाँ जतए ठाढ़ होइ।

भोरे पुरी स्थित बन विभागक अतिथि गृहसँ टैक्सी कए हम सभ कोर्णाकक सूर्य मन्दिर हेतु विदा भेलहुँ। गर्मीक समय रहैक। कनीके कालमे भगवानक सूर्यक प्रखर रश्मिक आधातसँ आहत हमर पत्नी व्याकुल बुझेलीह। माथ दुखाए लगलनि आब की करी? घुमनाइ केना की होएत? कोर्णाक मन्दिरक परिसरमे कनीकाल धरि सुस्तेलहुँ। पानि पीबैत गेलहुँ। ताबे हमर श्रीमतीजीक मथदुक्खी सेहो कनी कम भेलनि। साहस कए आगा बढ़लहुँ। कैटा मार्गदर्शक सभ आगा-पाछा करए लगलाह। ओहिमे सँ एकटा बुझनुक ओ उमरगर रहथि, तिनकासँ दाम तय कए ओहि परिसरमे आगा बढ़लहुँ। मन्दिरक भग्नावशेष चारू कात देखि मोन दुखी भए गेल। एहन नीक निर्माणक की गति भेल?

पुरीक लग-पास प्रमुख दर्शनीय स्थानमे सँ एकटा अछि कोणार्कक सूर्य मन्दिर। पुरीसँ ३५ किलोमीटर दूरीपर स्थित ई मन्दिर भगवान सूर्यक आराधना स्थल अछि। १३ वीं शताब्दीमे (१२७८ ई.) राजा नरसिंहदेव एहि मन्दिरक निर्माण करओलथि। मन्दिरक चारूकात पाथरकेँ तरासि कए बनाओल गेल मूर्ति सभ अपना-आपमे आश्चर्यजनक अछि। मूक रहितो ई पाथर सभ बहुत प्रभावकारी संदेश दैत अछि जे बाजि कए नहि देल जा सकैत अछि।

कोणार्क नाम कोन एवम् अर्क (सूर्य) क मिलानसँ भेल अछि। ई मन्दिर एक विशालकाय रथ जकाँ बनल अछि जाहिमे सातटा घोड़ा आ १२टा पहिआ बनल अछि।

मन्दिरक भग्नावशेषक खोदाइ उन्नीसम शताब्दीमे भेल। गर्भगृहक ऊपर स्थित मीनार गायब अछि मुदा जगमोहना बचल अछि। एहनो स्थितमे मन्दिरक भग्नावशेष विस्मयकारी ओ प्रेरणादयी

अछि।

हमरा सभक मार्गदर्शक एहि स्थानसँ जुड़ल बहुत रास ऐतिहासिक जानकारी सभ दैत रहलाह। ओ कहथि जे एहि मन्दिरक संगे कैटा किंवदंती जुड़ल अछि। जेना कि एकर नींव ओतेक मजगूत नहि रहैक जाहिसँ भारी गुम्बद ओहिपर टिकए। स्थानीय लोक सभक ईहो कहब छैक जे मन्दिर तँ पूरा कएल गेल रहैक, मुदा एकर गुंबदमे बहुत शक्तिशाली चुम्बक रहैक जाहि कारणसँ समुद्रमे चलैत जहाज सभक दिशा प्रभावित भए जाइत छल, कैटा जहाज उलटिओ जाइत छल। एहिसँ कुपित भए ओकर गुम्बदकेँ हटा देल गेल, नष्ट कए देल गेल आ सूर्य भगवानक प्रतिमाकेँ पुरीमे राखि देल गेल। सत्य जे होइक मुदा ओहि भग्नावशेषक दर्शन केलासँ भारतवर्षक प्राचीन समयमे उन्नत वस्तुकला एवम् भव्य निर्माण करबाक क्षमताक तँ आभास होइते अछि।

मन्दिरक प्रवेश द्वारपर दूटा शेर हाथीकेँ पीचैत देखाइत अछि। जगमोहनक सम्मुख स्थित नटमन्दिरक नक्काशीक भव्यताक वर्णन करब कोनो शब्दक बसक बात नहि अछि। मन्दिरक लग-पास देबाल ओ चार धरि कामुक शैलीमे नक्काशी कएल गेल अछि। जानवर, पुरुष, घोड़ापर योद्धाक छवि सहित भगवान सूर्यक तीनटा छवि अछि जाहि बाटे भोर, दुपहर ओ सूर्यास्तक समयमे सूर्यक किरणक आहट होइत अछि।

मार्गदर्शक हमरा सभकेँ चारूकात घुमाबैत रहलाह, एक-एकटा वस्तु सभहक ऐतिहासिक महत्व अपना हिसाबे बुझाबैत रहलाह। बीच-बीचमे हमरा सभकेँ चित्र सेहो खींच देथि। कोन स्थानसँ चित्र नीक दृश्य देत से हुनका बुझल रहनि आ तदनुसारे चित्र सभ खींची जे

सही मानेमे बहुत आकर्षक दृश्य उत्पन्न करैत छल।

मन्दिरक भग्नावशेष देखैत-देखैत बहुत रास समय बीति गेल। सभगोटे थाकि गेल रही। मार्गदर्शक सेहो अपन काज कए चुकल रहथि। हुनका उचित दक्षिणा दए हम सभ किछु काल सुस्तेलहुँ। मोनमे किसिम-किसिमक विचार अबैत रहल जे एहि भव्य स्थानक निर्माता केहन महान रहल हेताह? किएक ने एहन स्थानक रक्षा भए सकल? कहीं एकरो ढाहयमे विदेशी आक्रान्ताक हाथ तँ नहि छल? इएह सभ सोचैत हम सभ टैक्सीसँ डेरा विदा भेलहुँ। थोड़बे कालमे हम सभ डेरा पहुँचि गेलहुँ। सभगोटे विश्राम कए आपसीक तैयारीमे लागि गेलहुँ। मोटा-चोंटा बान्हल गेल। अतिथि गृहक हिसाब-किताब भेल। रखबार बहुत नीक लोक छल। सदति हमरा लोकनिकेँ सही मार्गदर्शन केलक आ सही पण्डा पकड़ा देलक जाहिसँ हम सभ कमसँ कम परेसानीमे नीकसँ घुमि-फिरि सकलहुँ। अस्तु, ओकर किछु इनाम तँ बनैत छल। से यथोचित इनाम दए हमरा लोकनि टैक्सी पकड़ि टीसनपर अएलहुँ। ट्रेन लागल छल। अपन-अपन शायिका पर बैसि आश्वस्त भेलहुँ। कनीके कालमे ट्रेन चलि पड़ल आ हम सभ सुति गेलहुँ। भोरे निन्न टुटल तँ सियालदह टीसनपर ट्रेन अड़कल छल।

◌

त्रिपुरसुन्दरीके दरवारमे

उत्तरपूर्व भारतमे कोनोठाम जेबाक छल। ताहिमे अगरतलाक जेबाक चुनाव बहुत सोच-विचारक बाद कएल, कारण ओहि समय लग-पासक आन राज्य सभमे अशान्ति छल। सिक्किम जा सकैत छलहुँ। ओहिठाम जोगारो छल मुदा कनी दुरुह बुझाएल। अन्ततोगत्वा हम श्रीमतीजीक संग कलकत्ता होइत अगरतला विदा भेलहुँ। बीचमे कलकत्ता हवाई अड्डापर जहाजक बदली रहैक। करीब तीन घन्टाक समय लागि गेल। तखन बोर्डींग शुरू भेल। ओहि बीच कलकत्ता हवाई अड्डापर बैसल रहलहुँ। गप्प-सप्प करैत रहलहुँ। अखबारक पन्ना उनटबैत रहलहुँ। ओतबे कम समयमे हवाई अड्डासँ बाहर जाएब, कतहुँ भेँट-घाँट करब सम्भव नहि बुझाएल। तैँ ओही ठाम समय बितओलहुँ । थोड़बे कालक बाद हम सभ जहाजमे बैसि गेल रही आ देखिते-देखिते जहाज उड़ि गेल।

अगरतला हवाई अड्डा अगरतला शहरसँ १२ किलोमीटर दूरी पर अवस्थित अछि। अखन ओही ठामसँ मात्र अन्तरर्देशीय उड़ानक व्यवस्था अछि। एहिठाम सँ अन्तर्राष्ट्रीय उड़ानक हेतु काज चलि रहल अछि। एयर इण्डियाक अलावा इन्डीगो एवम् स्पाइस जेटक विमान अगरतलासँ दिल्ली सहित देशक अन्य भागक हेतु नित्य उड़ैत अछि। आगा एकटा अन्तर्राष्ट्रीय उड़ान हेतु विकसित करबाक योजना अछि।

अगरतला हवाई अड्डासँ बाहर निकलिते हमरा लोकनिक स्वागत हेतु स्थानीय सरकारी अधिकारी ठाढ़ छलाह। हुनका संगे ओहिठामसँ सोझे राज्य अतिथिशालामे पहुँचलहुँ जाहि ठाम हमरा सभहक ठहराबाक व्यवस्था कएल गेल छल। हमरा लोकनिकेँ

राजकीय अतिथिक सुविधा देल गेल छल। अस्तु, ठहरबाक अतिरिक्त घुमबाक हेतु गाड़ी, घुमाबक हेतु स्थानीय अधिकारी उपलब्ध छलाह। बीच-बीचमे वरिष्ठ अधिकारी सेहो हाल-चाल लैत रहैत छलाह।

अगरतला वा लग-पासक क्षेत्र कोनो देहात सन लगैत छल। कतहु-कतहु तँ बहुत फटेहाल लोक सभ देखबामे आबथि। केरल जकाँ ओहिठाम यूनियन सभक दबदबा छल। तथापि उत्तर-पूर्वक आन राज्यक अपेक्षा एहिठाम महौल शान्त छल।

त्रिपुराक घुमबाक क्रममे हमसभ भारत बंगलादेश सीमापर पहुँचलहुँ। ओहिठाम चेकपोस्टपर भारतीय वो बंगला देशक सीमाबलक अधिकारी सभ तैनात छलाह। तय व्यवस्थानुसार किछु समय धरि व्यापारी सभ हेतु सीमामे प्रवेशक सुविधा देल जाइत छल जाहिसँ बांगलादेशसँ प्रचूर मात्रामे माछ, आओर-आओर समान सभ अगरतलाक हाटमे अबैत छल।

हम सभ सीमासँ सटल अन्तिम स्थानपर बनल बैसक धरि गेलहुँ। हमरा सभक नीक आब-भगत भेल आ लगपासक स्थितिक बारेमे विस्तृतसँ जानकारी सीमा सुरक्षाबलक अधिकारी दैत रहलाह। कनीकालक बाद हम सभ सीमाक काते-काते किछु फटकी धरि टहलैत-टहलैत गेलहुँ। सीमापर तारक घेराबा देल अछि। कतहु-कतहु जबान सभ हथियार लेने मुस्तैद रहैत छथि। हुनका सभसँ गप्प-सप्पक क्रममे बुझाएल जे किछु काल कए गेटकेँ खोलि देल जाइत अछि जाहिसँ बंगलादेशी सभ भारतीय हिस्सामे किंवा नोमैन्स लैन्डमे पड़ल अपन जमीनमे खेत-बाड़ी करैत अछि आ साँझमे किंवा काज खतम होइते आपस चलि जाइत छथि। ओही क्रममे एकटा जवान ईहो कहलक जे ओकरा सभकेँ बंगलादेशी फौज वा सीमावलपर जबाबी

हमलामे कोताही करए पड़ैत अछि जाहि कारण सीमापर स्थिति कै बेर प्रतिकूल भए जाइत अछि। किछुए दिन पूर्व भारतीय सीमा सुरक्षाबलक किछु जवानकेँ बंगलादेशी फौज क्षत-विक्षत कए देने रहैक जाहिसँ ओ सभ उद्वेलित बुझेलाह।

अगरतलासँ ५५ किलोमीटर दूरीपर भगवती त्रिपुर सुन्दरीक मन्दिर अछि। ओहि इलाकाक ई प्रसिद्ध मन्दिर अछि। अहिठाम सतीक दहीन पैर खसल छल। मन्दिरक निर्माण महाराजा धन्य मापिक्य द्वारा सन् १५०१ ई.मे कएल गेल छल। किछु साल पूर्व सम्पूर्ण मन्दिर परिसरक जीर्णोद्धार कएल गेल छल।

एहिठाम भगवतीक मन्दिरक आकार-प्रकार कछुआ जकाँ अछि जाहि कारणसँ एकरा कूर्मा पीठ सेहो कहल जाइत अछि। एहिठाम प्रसादक रूपमे शुद्ध दूधक बनाओल पेड़ा होइत अछि जे खाइते बनैत अछि। प्रसादक कैटा दोकान अछि। ओहिमे छात्रास्वरि पेड़ा भण्डार बहुत लोककेँ पसन्द अछि। दीयाबातीक समय अहिठाम जबरदस्त मेला लगैत अछि जाहिमे दूर-दूरसँ लाखो लोक एहिमे भाग लैत अछि। बंगलादेशसँ बहुत रास हिन्दू परिवार सेहो एहि अवसरपर अबैत अछि।

हमरा लोकनि स्थानीय लोकसभक मादे एहि मन्दिरक गुणगान सुनि ओतए पहुँचलहुँ। एहिठाम अएलाक बाद मोन आनन्द भए गेल। चारूकात स्वच्छ वातावरणमे माताक आराधना करबाक हमरा लोकनिकेँ परम सौभाग्य भेटल।

मन्दिरमे बहुत अधिक मात्रामे बलि प्रदानक परम्परा अछि। मन्दिरमे साढ़े छह एकड़मे कल्याण सागर सरोवर अछि। एकर निर्माण महाराजा कल्याणमल माणिक देव वर्मा सन् १५०१ ई.मे करओने

रहथि।

कहल जाइत अछि जे मन्दिरमे पूजाक हेतु त्रिपुराक राजा कन्नौजसँ पुजारी बजबओने रहथि। लक्ष्मी नारायण पाण्डेय ओ गदाधर पाण्डेय नामक दूटा पुजारी परिवार सहित ओही ठाम बसि गेलाह। आब ओहि परिवारक कुनबा बड़ीटा भए गेल अछि आ अखनो ओएह सभ एहि मन्दिरमे पूजा-पाठ करैत अछि यद्यपि एहि मन्दिर एवम् ओकर परिसरक व्यवस्था आब त्रिपुरा सरकारक हाथमे आबि गेल अछि। त्रिपुरा सरकार एहि हेतु आर्थिक योगदान सेहो दैत अछि। यात्रीक ठहरबाक हेतु त्रिपुरा सरकार द्वारा गुनावती यात्री निवासक निर्माण कराओल गेल अछि।

अगरतलाक लग-पास एकटा अबश्य दर्शनीय स्थानमे सँ अछि नीरमहल। ई अगरतलासँ ५५ किलोमीटरक दूरपर अवस्थित अछि। ई महल राजा वीर विक्रम किशोर माणिक्य बहादुर द्वारा १९३०-३८ ई.मे बनाओल गेल छल। नीरमहल रूद्रसागर तालसँ घेराएल अछि। एहि महल धरि जेबाक हेतु तालक कछारमे नाओ भेटैत अछि। त्रिपुरा सरकारक ओहिठाम होटल अछि जाहिमे यात्रीगण रहि सकैत छथि। एहि तालमे किसिम-किसिमक जलपक्षी सभ देखबामे अबैत अछि। दिनमे ९ बजेसँ ५ बजे साँझ धरि ई महल यात्रीक हेतु खुजल रहैत अछि। मुदा दुपहरियाक बाद गेनाइ बेसी नीक, कारण ताबे समस्त सुविधा सक्रिय भए जाइत अछि।

सम्पूर्ण भारतमे एहि तरहक मात्र दूटा जलमहल अछि। एकटा इएह आ दोसर राजस्थानक जलमहल। नीरमहलमे २४ टा कोठरी अछि। ई दू भागमे बँटल अछि। एक भागकेँ अन्दर महल कहल जाइत अछि जाहिमे पारिवारिक सदस्य आ रानी रहैत छलीह आ दोसर पूवक

भागमे नाचगान हेतु रंगशाला अछि। महलक अन्दरेसँ तालमे राजपरिवारकेँ जेबाक रस्ता छल। एहि महलकेँ बनेबाक उद्देश्य गर्मी मे सुखद वातावरणमे रहबाक व्यवस्था करब छल। महलक अन्दर घुमैत-घुमैत भवन निर्माणमे प्रवीणताक अनुभव होइत अछि। एतेक खर्च ओ परिश्रमसँ बनाओल गेल एहि महलकेँ वर्तमानमे दशा दयनीय अछि, कारण एकर रखरखावक उचित व्यवस्थाक अभाव । सुनिऐक जे त्रिपुरा सरकार एकरा अधिग्रहण करबापर विचार कए रहल अछि जाहिसँ एकरा सुरक्षित राखल जा सकए।

नीरमहलसँ आपस अएलाक बाद हम सभ ओहीठाम सरकारी अतिथि गृहमे विश्राम कएलहुँ। भोजन-भातक उत्तम व्यवस्था तँ छलहे। तकर बाद आपस हम सभ अगरतला अपना बासापर आबि गेलहुँ। प्रात भेने अगरतला शहरक प्रमुख-प्रमुख स्थान सभ देखबाक कार्यक्रम छल।

अगरतला शहर शान्त ओ स्थिर लगैत रहैत अछि। कैटा छोट-मोट सभ सेहो देखबामे आएल। अबैत-जाइत चाहक बगान सेहो देखबामे आएल। भूतपूर्व राजा सभहक राजमहल विजयन्त पैलेस आब एक आकर्षक संग्रहालय अछि। एहिमे भूतपूर्व राज परिवारसँ जुड़ल अनेको चीज वस्तु देखबाक अवसर भेटत। ई महल त्रिपुराक महाराजा राधाकिशोर माणिक्य द्वारा १८९९ सँ १९०१ ई.क बीच बनाओल गेल छल। विजयन्त पैलेससँ सटल एकटा सुन्दर तल अछि जकर काते-काते मुगल गार्डेन अछि। ई भवन त्रिपुरा सरकार द्वारा १९७२-७३ ई.मे राज परिवारसँ कीनल गेल।

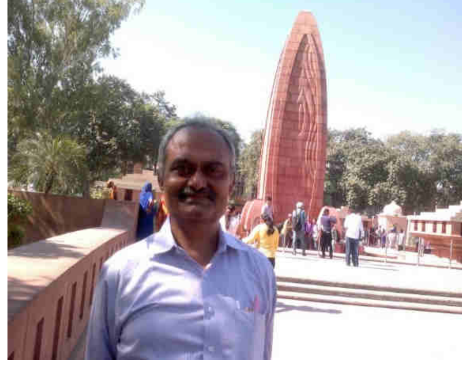
एकर बाद अगरतलाक जगन्नाथ मन्दिरमे दर्शन कएलहुँ। एहि मन्दिरक भव्यता अवर्णनीय अछि। त्रिपुराक राज परिवार द्वारा

बनाओल गेल ई मन्दिरक वस्तुकला विलक्षण अछि। मन्दिरमे प्रसादक उत्तम व्यवस्था अछि। सायंकालक आरतीक दृश्य बहुत मनमोहक होइत अछि। एहिठाम हम सभ कनीकाल बैसि डेरा आपस आबि दिल्लीक हेतु वायुयानसँ विदा भए गेलहुँ। रस्ताभरि ओहिठाम कएल गेल आतिथ्य आ सुविधापूर्ण भ्रमण मोन पड़ैत रहल।



हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण pothi.comक निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)
https://pothi.com/pothi/node/195476.
प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै*(मैथिली उपन्यास)*
https://pothi.com/pothi/node/195444.
विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.
महराज *(मैथिली उपन्यास)*
https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/196264.
सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/197004.
समाधान(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.
The Lost House (Collection of short stories)
https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)
https://pothi.com/pothi/node/196385
www.flipkart.com/www.amazon.com पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।



जालिआनाबालाबागक स्मारक लग लेखक



द्वितीय विश्व युद्धक दौरान प्रयुक्त जापानी बंकर लग लेखक



इफेल टावर पेरिस लग लेखक



योगदा कालेज राँचीक तत्कालीन प्राचार्य डाक्टर सुभद्र झाक निवास (सन्१९७३)